आचार्य धन्वन्तरि ग्रन्थमाला नं० ६

व्रण बन्धन

वा

पट्टियां

—

लेखक—

कविराज शिवशरण वर्मा वैद्यरत्न,

भिषगाचार्य धन्वन्तरि

(शस्त्र चिकित्सा में पदक प्राप्त)

प्रकाशक—

आचार्य धन्वन्तरि मण्डल

फगवाड़ा—(कपूरथला स्टेट)

थम बार १९२९	सर्वाधिकार स्वाधीन	मूल्य १।=) सजिल्द १॥=)

महारथी प्रेस, चाँदनी चौक, देहली में मुद्रित।

Acharya Dhanwantry Medical Series No. 6.

A TEXT BOOK OF
'Bandaging in Hindi'

FOR

Ayurvedic Colleges & Schools

BY

Kaviraj SHIV SHARAN Varma, Vaid Ratna,
Bhishgacharya Dhanwantry

(1ST MEDALIST IN SURGERY)

AUTHOR OF

The Examination and Diseases of the lungs (Hindi), Urine Tests (Hindi and Punjabi) A Text Book of Midwifery in Hindi, Manual of Midwifery in Punjabi, Cholera in Urdu etc. etc.

PUBLISHED BY
The Acharya Dhanwantry Mandal
PHAGWARA.

1ST EDITION
MARCH, 1929.

PRICE
without binding 1--6--0
with binding 1-10-0

To

Doctor Sayed Nasar Abbas,

Principal (formerly House Surgeon)

AYURVEDIC & UNANI TIBBIA COLLEGE,

DELHI,

this work is, with kind permission,

dedicated by the Author,

IN

Grateful acknowledgment of the

bedside teachings and Hints

AND

Of the many advantages

He has derived

Whilst studying under him

IN THE

Tibbia College—Surgical Ward,

IN

1923-1924.

विषय सूची

मेरी कामना १
सम्मतियाँ १३
व्रण बंधन की आवश्यकता १७
पट्टी के लिए वस्त्र १८
पट्टी की चौड़ाई १६
बेलन बनाना १६
हाथ से २०
बन्धन चक्की से २०
साधारण वा द्विशिरा बेलन २१
पट्टी का बांधना २२
अविपरीत बन्धन २२
पट्टी का समाप्त करना २३
आकृत्यानुसार भेद २३
कुंडली बन्धन २४
मोड़ बनाना २५
स्वस्तिक लपेट २६
सुपाशा बन्धन २७

शिर के बन्धन

१ ललाट बन्धन २८
२ मण्डल बन्धन २६
३ दोहरा मण्डल बन्धन २६
४ सरल बन्धन ३१
५ मण्डल ललाट बन्धन ३२
६ ग्रन्थिल बन्धन ३२
७ " " ३३
८ शङ्ख बन्धन ३३
६ द्विमुद्रा बन्धन ३४
१० चिबुक बन्धन ३५
११ वितान बन्धन ३६
१२ पुनरावर्तक बन्धन ३७
१३ " " ३८
१४ स्वस्तिक बन्धन ४०
१५ पार्श्विक पुनरावर्तक बन्धन ४१

नेत्र के बन्धन

१६ स्वस्तिक बन्धन (एक नेत्र के लिए) ४०
१७ स्वस्तिक बन्धन (दोनों नेत्रों के लिए) ४३
१८ चीन बन्धन ४४
१६ चतुरस्त्र बन्धन ४५
२० कर्ण बन्धन ४६
२१ ललाट वा चिबुक का स्वस्तिक बन्धन ४७

ग्रीवा वा कक्षा के बन्धन

२२ वर्तुल ग्रीवा बन्धन ४८
२३ ग्रीवा वा शिर का पाश्चात्य स्वस्तिक बन्धन ४८
२४ प्राक्तन स्वस्तिक बन्धन ४९
२५ कक्षा का स्वस्तिक ५०
२६ दोनों कक्षाओं का ५१
२७ कक्षा वा ग्रीवा का स्वस्तिक बन्धन ५२
२८ दूसरी विधि ५२
२९ विषय वर्तुल बन्धन ५३
३० ग्रीवा वा वक्ष का प्राक्तन स्वस्तिक बन्धन ५४
३१ पाश्चात्य स्वस्तिक बन्धन ५५
३२ ग्रीवा का सुपाशा बंधन ५५

ऊर्ध्व शाखा के बन्धन

३३ स्कन्ध बन्धन ५७
३४ स्कन्ध का अधोगा सुपाशा ५८
३५ प्रगंड का कुंडली बंधन ५८
३६ कूर्पर का एक केन्द्रिक स्वस्तिक बन्धन ५९
३७ प्रति केन्द्रिक स्वस्तिक ६०
३८ अग्र बाहु का अनुवेल्लित ६१
३९ अग्र बाहु का स्वस्तिक ६१
४० स्वतिक बाहु गोफण बन्धन ६२
४१ हस्त अनुवेल्लित बंधन ६३
४२ हाथ का स्वस्तिक बंधन ६४
४३ हस्त वा बाहु का मिश्रित बन्धन ६५
४४ अंगुष्ठ बन्धन ६६
४५ अंगुलि का कुंडली बन्धन या कोष बन्धन ६७
४६ अंगुलि का स्वस्तिक ६९
४७ " पुनरावर्तक ७०

वक्ष वा उदर के बन्धन

४८ वक्ष का प्राक्तन स्वस्तिक ७१
४९ " पाश्चात्य स्वस्तिक ७२
५० अधोगामी कुंडली बंधन ७३
५१ उद्गामी कुंडली बन्धन ७४
५२ स्तन बन्धन ७४
५३ दोनों स्तनों पर ७५
५४ छिन्न स्तन पर बन्धन ७८
५५ उदर का अधोगामी कुंडली बन्धन ७९
५६ उदर का उद्गामी कुंडली बन्धन ८०
५७ बहु पुच्छ बन्धन ८०
(वक्ष के लिए, उदर के लिए) ८१

अधोशाखा के बन्धन

५८ कोपीन बन्धन ८३
५९ श्रोणि वा श्रोणि आधार का बन्धन ८४
६० दूसरी विधि ८५
६१ वंक्षण का उद्गामी सुपाशा बन्धन ८५
६२ वंक्षण का अधोगामी सुपाशा ८७
६३ दोनों वंक्षणों का उद्गामी सुपाशा ८७
६४ दोनों वंक्षणों का अधोगामी सुपाशा ८९
६५ नितंब का उद्गामी सुपाशा ९०
६६ नितंब का अधोगामी सुपाशा ९०
६७ ऊरू या जांघ का अनवेल्लित बन्धन ९०
६८ जानु बन्धन ९१
६९ जंघा का स्वस्तिक बंधन ९३
७० जंघा का अनुवेल्लित बन्धन ९४
७१ गुल्फ का स्वस्तिक बन्धन ९५
७२ पांव का सुपाशा बंधन ९५
७३ पार्ष्णि बन्धन ९६
७४ पादांगुष्ठ बन्धन ९८
७५ दूसरी विधि ९९
७६ पादांगुल का कुंडली बन्धन ९९
७७ स्थाणु का बन्धन ९९

त्रिभुजाकार या त्रिकोन बन्धन १०१

७८ शिर पर १०२
७९ हनु पर १०२
८० स्कन्ध पर १०२
८१ कोहनी पर १०३
८२ हाथ पर १०३
८३ नितंब पर १०३
८४ पांव पर १०४
८५ वक्ष पर १०४
८६ पृष्ठ पर १०४
गोफणायें (गलपट्टियां) १०५
८७ हस्त गोफणा या छोटी गल पट्टी १०६
८८ बाहु गोफणा १०६
८९ गॉज़ के बन्धन १०८

९० सप्लिन्ट वा स्थाई बन्धन ११०

स्प्लिन्ट १११
गत्ता ११२
गट्टा पर्चा ११२
चर्म ११३
प्रोप्लास्टिक ११३
पैरिस प्लास्टर ११३
धातु ११४
लकड़ी ११४
स्प्लिन्ट का आकार ११४
गद्दी लगाना ११५
त्वचा को शुद्ध करना ११६

दृढ़ वा स्थाई बन्धन ११८

६१ प्लास्टर आफ़ पैरिस बन्धन ११६
६२ पैरिस प्लास्टर बन्धन का काटना १२०
६३ प्लास्टर आफ पैरिस जाकट १२२
६४ वाटर ग्लास बन्धन १२५
६५ पैराफीन बन्धन १२५

व्रण परिष्कार

कपास १२६
धुनी हुई रूई १२६
शोषक रूई १२६
गॉज़ १२८
गॉज़ के स्पञ्ज १२८
गॉज़ की धज्जियाँ १२६
मलमल १२६
फलालैन १२६
रेशम १३०
रबड़ १३०
गटा पर्चा टिस्यु १३१
स्निग्ध मलमल, रेशमी वस्त्र वा कागज १३१

* * *

नोट—पुस्तकें मँगवाते समय अपना नाम वा पूरा पता लिखें। डाकखाने का नाम स्पष्ट लिखें। यदि पुस्तकें रेल द्वारा मंगवानी हों तो अपने निकट के रेलवे स्टेशन का नाम लिखें। यदि सम्भव हो तो डाकखाने का नाम अंग्रेज़ी में भी दें।

मेरी कामना



आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी तिब्बी कालेज देहली को स्थापित हुए कई वर्ष बीत गये। इसने जो उन्नति अपनी उद्देश्य पूर्ति में की है, वह किसी से गुप्त नहीं। यह वही महाविद्यालय है, जिसकी नींव को सुदृढ़ करने के लिये मसीहउल मुल्क श्री युत् हकीम मुहम्मद अजमल खां साहेब स्वर्ग वासी ने अपने शरीर की, अपने स्वास्थ्य की, अपने धन की और अपने अमूल्य समय की परवाह तक न की। यह वही संस्था है, जिसकी आधार शिला को लार्ड हार्डिङ्ग ने अपने कर कमलों से रक्खा और जिसका उद्घाटन संस्कार विश्व-रत्न, शान्त-मूर्ति, सत्य-वक्ता, पुण्यात्मा श्री० मोहनदास कर्मचन्द जी गान्धी द्वारा पूर्ण हुआ था। हकीम साहेब अन्तिम श्वास तक अपने सफल उद्योग में लगे रहे। वे यूनानी के साथ साथ आयुर्वेद को उन्नति के शिखर पर देखना चाहते थे। उनकी प्रवल इच्छा थी कि आयुर्वेदीय विद्यार्थियों को प्राचीन शास्त्रों के अतिरिक्त पाश्चात्य चिकित्सा शास्त्र को भी अध्ययन कराया जावे। उन का मन पवित्र था, भेद-भाव के विष से रिक्त था। उनके कार्य में दिखलावा न था, बनावट न थी, धोखा न था। जिस कार्य को उन्होंने एक बार पकड़ा, वीर महारथी की भाँति पूरा भी

किया। दोनों विद्याओं की उन्नति वा ख्याति के लिये धन, जल की तरह बहाया। कालेज की शान देखने से ही बनती है। यही उद्देश्य आज श्रीमद्दयानन्द आयुर्वैदिक कालेज लाहौर, हिन्दु विश्व विद्यालय काशी, आयुर्वेदीय विद्या पीठ तथा अन्य विद्यालयों के संचालकों का है। हकीम साहेब, श्री० पण्डित मदन मोहन जी मालवीय, कविराज गण नाथ सेन, विद्यादानी लाला हंसराज जी सरीखे नेताओं के उद्योगों से आज यू० पी० सी० पी०, बङ्गाल, मद्रास, बम्बई वा पंजाब प्रान्त में भारतीय सरकार की ओर से आयुर्वेदिक शफाखाने खोले जा रहे हैं। क्या अन्य आयुर्वैदीय विद्यालयों वा पाठशालयों के प्रबन्धकर्ता इसी स्कीम पर कार्य करने का प्रयत्न करेंगे?

जिज्ञासू विद्यार्थी के मन में संशय उत्पन्न हुआ होगा कि आयुर्वेद का पाश्चात्य विद्या से क्या सम्बन्ध है?

सम्बन्ध है और घनिष्ट सम्बन्ध है!

भारतीय सरकार के विद्या के प्रतिनिधि सर संकरण नायर महोदय ने आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी तिब्बी कालेज के प्लेटफ़ार्म पर २४ मार्च सन् १९१८ को जो भाषण दिया था, वह बड़े महत्व था। अधिक विचारणीय बात जो उन्होंने कही थी, वह यह थी—"The Study of modern Sciences is indispensible for Medicine......" अर्थात् नवीन विज्ञान का पठन चिकित्सा में योग्यता प्राप्त करने के लिये नितान्त आवश्यक है।

इसमें सन्देह नहीं कि आयुर्वेद वेदाङ्ग है। इसके गौरव को गम्भीर बनाने के लिए असंख्य भिषगवरों ने भाग लिया। उन्होंने अपने अपने समय में अपने अपने मतानुसार ग्रन्थ वा संहिताएँ रचीं। आयुर्वेद को अधिक उपयोगी, सर्वप्रिय तथा इसकी नियमबद्ध व्याख्या के लिये इसको आठ मुख्य भागों में विभाजित किया गया।

(१) शाल्य तन्त्र (Major Surgery) (२) शालाक्य तन्त्र (Minor surgery) (३) काय चिकित्सा (Medicine) (४) भूत विद्या (Demonology) (५) कौमार भृत्य (The Science of pediatrics) (६) अगद तन्त्र (Toxicology) (७) रसायन तन्त्र (The Science of Tonics) (८) वाजीकरण तन्त्र (The Science of aphro disiacs)

आज सर्व संसार अपने शीर्ष को उन ऋषियों मुनियों के नाम पर झुकाने में अपनी प्रतिष्ठा तथा गौरव समझता है। उपरोक्त विषयों पर कई ग्रन्थ रचे गये होंगे। परन्तु वर्तमान काल में हमको पाँच-सात के अतिरिक्त अन्य नहीं मिलते। जो मिलते भी हैं, उनके प्रति भी सन्देह है कि क्या वे वही आर्ष ग्रन्थ हैं, जिनको ब्रह्मा, विष्णु, शिव, धन्वन्तरि, अश्वनी कुमार, चरक, सुश्रुतादि महर्षियों ने रचा था। अथवा वे कोई भिन्न पुस्तकें हैं ?

शल्य वा शालाक्य के विषय पर आज सुश्रुत संहिता मिलती है। इसके तैयार होने का समय त्रेता युग बतलाया जाता है।

बहुत से पण्डितों का कथन है कि असली सुश्रुत संहिता अप्राप्य है। आधुनिक समय में इस नाम का जो ग्रन्थ मिलता है उसके संग्रहकर्ता नागार्जुन जी हैं। परन्तु नागार्जुन भी तीन थे। अतः यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि कौन से नागार्जुन ने इसको संग्रह किया।

हमारे प्राचीन वैद्यवर इस विद्या में पूर्णतया निपुण थे। उनका मस्तिष्क सूर्य के सदृश उज्ज्वल था, वे ज्ञान के समुद्र थे, जगत गुरु थे। वे किसी भी दशा में शल्य चिकित्सा से अनभिज्ञ नहीं कहे जा सकते। आज भी हम को कई एक ऐसे भारतीय व्यक्ति मिलते हैं कि जो व्रण वा अर्श चिकित्सा में सिद्ध हस्त हैं। डाक्टरों द्वारा असाध्य माने हुए वा त्यागे हुए व्रणों को निवारण कर देना उनके लिए साधारण सा कार्य है। बंग देश के प्रसिद्ध महोदय श्री० गिरेन्द्रनाथ भिषगाचार्य, बी० ए०, एम० डी०, एफ० ए० एस० बी०, अपनी पुस्तक भारतीय वैद्य विद्या का इतिहास (History of The Indian Medicine) की भूमिका में लिखते हैं—

'In Surgery, too, the Indians seem to have attained a special proficiency and in this department Europeon Surgeons, might perhaps even at the present day still learn something from them as indeed they have already borrowed from them the operation of Rhinoplasty (From History of Indian Literature by Weber pages 269, 270)"

'अर्थात् शल्य चिकित्सा में भी भारतीय भिषगवर यथेष्ट प्रवीण थे। अभी तक भी वे थोड़े बहुत इस योग्य हैं कि पाश्चात्य देश के डाक्टरों को इस विषय पर थोड़ी बहुत शिक्षा प्रदान कर सकें, जैसा कि उन्होंने नासिका के कट जाने पर इसका फिर से बना देना आयुर्वेद के ग्रन्थों से सीखा है।'

इस दशा के होते हुए भी क्या हम अब इसी बात पर सन्तोष कर बैठें कि हमारे पूर्वज अति विद्वान थे। परन्तु ऐ उन्नति याचक वा सत्य के खोजक वीर! तनिक सोच वा सच्चे हृदय से विचार पूर्वक उत्तर दे-कि क्या इस बात का हम को विशेष लाभ भी है? लाभ तो तभी प्रतीत हो न जब कि गवर्नमेंट की दृष्टि में वैद्यवर तथा डाक्टर लोग एक समान समझे जावें। दशा नितान्त प्रतिकूल है। इस बात का दोषी भारतीय सरकार या कोई अन्य संस्था नहीं ठहराई जा सकती बल्कि इसके दोषी स्वयं हम हैं। वैद्यों ने अपने ही आलस्य तथा प्रमाद के कारण शल्य वा शालाक्य के विषय को एक घृणित कार्य समझा, फल स्वरूप विद्या योग्य हाथों से निकल कर अनपढ़ व्यक्तियों के हाथों में चली गई। यदि अब भी विद्वान वैद्य तथा आयुर्वेद के प्रेमी सर्जरी में निपुण हो जावें तो फिर डाक्टर नैलसन सरीखे व्यक्तियों को आयुर्वेद पर आक्षेप वा कुठाराघात करने का अवकाश ही न मिले! देशी चिकित्सा के विरुद्ध उन का एक ज्ञान शून्य विष पूर्ण लेख सिविल मिलिटरी गज़ट लाहौर के ६ जुलाई १६२८ के परचे में निकला।

जिस के निर्मूल वा ओछे शीर्षक इस प्रकार थे—

(१) आयुर्वेद वा यूनानी जङ्गली चिकित्सा पद्धति है।

(२) देशी चिकित्सक सहस्रों रोगियों को अपनी मूढ़ता से मार डालते हैं।

(३) देशी चिकित्सक विज्ञान से अनभिज्ञ हैं।

(४) इनका रोगनिदान केवल कल्पना मात्र है।

(५) देशी चिकित्सक भ्रमात्मक हैं।

(६) देशी चिकित्सा की विधियाँ मृत प्राय वा पुरानी हो चुकी हैं।

प्रोफ़ेसर नैलसन वा सिविल मिलिटरी गज़ट के सम्पादक ने लेख तो छाप दिया पर वैद्यों के प्रश्नोत्तर के सम्मुख न ठहर सके, उन को शीघ्र ही अपनी भूल स्वीकार करनी पड़ी माना कि उन्होंने २७ वा ३० जुलाई के परचों में क्षमा याचना की, सम्पादक ने स्पष्ट कह दिया—'मैं देशी चिकित्सा के विरुद्ध नहीं। उसको उन्नत देखना चाहता हूँ............मैं तो अनपढ़ वैद्यों वा हकीमों के विरुद्ध हूँ, सुयोग्य वैद्यों के विरुद्ध नहीं......।"

परन्तु क्या अब हम इसी बात को लेकर गहरी निद्रा में सो जायें। कि प्रतिवादियों ने तो क्षमा माँग कर अपनी भूल स्वीकार करली—अब हम को क्या भय है? नहीं, अब हमें आगे पग बढ़ाना चाहिये। आयुर्वेद के भविष्य को उज्ज्वल करने के लिये तथा ऐसे वाद प्रतिवाद का एक दम मुँह तोड़ उत्तर देने के लिये हमारे पास दो उत्तम उपाय हैं—

(१) आयुर्वेद के साहित्य को उन्नत किया जावे। जिस जिस विषय पर की पुस्तकों का हमारे यहाँ अभाव है, उस २ विषय की अंग्रेज़ी पुस्तकों का सरल हिन्दी वा संस्कृत भाषा में अनुवाद किया जावे। अनुसन्धान वा रीसर्च के कार्य के लिये योग्य विद्वान् वा आलस्यद्वेषी रीसर्च स्कॉलर नियुक्त किये जावें। आयुर्वेदिक पारिभाषिक शब्दावलि के निर्माणार्थ देश के प्रसिद्ध प्रसिद्ध शिक्षित वैद्यों, प्रोफेसरों वा योग्य पंडितों की एक समिति बनाई जावे।

(२) केवल पढ़े लिखे वैद्यों वा हकीमों को ही चिकित्सा करने की आज्ञा होनी चाहिये। गवर्नमेण्ट को ऐसे कानून बनाने चाहिये जिसके द्वारा अशिक्षित वैद्य, हकीम वा छद्मचर डाक्टर चिकित्सा न कर सकें।

अब प्रश्न हो सकता है कि वैद्यों ने शस्त्र चिकित्सा से क्यों मुख मोड़ा ? उनके इसके प्रति उदासीन होने के क्या कारण थे ?

मैं यह नहीं कहता कि इस विद्या का पहले इतना प्रचार न था अथवा जनता इसको वह सम्मान न देती थी कि जो काय चिकित्सा को दिया जाता था। सर्जरी की विद्या को संसार का एक गौरव समझा जाता है। यहीं तक नहीं, बल्कि इसे राजाओं महाराजाओं की विद्या समझी जाती थी। उदाहरणार्थ काशी के राजा दिवोदास ने इसका पठन कर योग्यता प्राप्त की और अपने समय में शल्य-चिकित्सा के सर्वमान्य चिकित्सक समझे जाते थे। सुश्रुत संहिता इस बात का साक्षी है।

दिन बीतते देर नहीं लगती। बौद्ध वा जैनमत का प्रचार हुआ। दशा बदल गई। कर्म के केन्द्र में माला ने आ डेरा जमाया। लोगों ने अहिंसा का पाठ पढ़ना शुरू किया। यह पाठ यहाँ तक बढ़ा कि व्रण शोथ को चीरा देना भी हिंसा समझा जाने लगा। मज़हबी दीवानों ने शल्य-चिकित्सा के विपरीत प्रचार करना शुरू किया। तथा मतावलम्बी राजाओं ने शव व्यवच्छेद को कानूनन बन्द कर दिया। जहाँ जहाँ इन नवीन मतों का प्रचार था, वहाँ वहाँ इसका प्रभाव पड़ा। महाराज अशोक पर इसका सब से अधिक उत्तर दायित्व है। फिर क्या था, जब महाविद्यालयों से शव-व्यवच्छेद ही हटा दिया गया तो इसका जो दुष्परिणाम हुआ वह आप के सामने स्पष्ट है।

बहुतों की सम्मति है कि मुस्लिम शासन का भी इस पर प्रभाव पड़ा। परन्तु मैं इस विचार के सर्वथा विरुद्ध हूं। क्योंकि मुस्लिम शासन के बहुत पहले बौद्ध काल में ही शस्त्र चिकित्सा रसातल को पहुँच चुकी थी। आयुर्वेद के सिद्धान्तों पर ही यूनानी चिकित्सा की नींव रक्खी गई। यदि यह कहा जावे कि यूनानी चिकित्सा की पुस्तकें प्राचीन आयुर्वेदीय ग्रन्थों का भाषान्तर अथवा रूपान्तर हैं तो अनुचित न होगा। यवन लोग शल्य चिकित्सा के विपरीत न थे। यूनानवासियों को आयुर्वेद की जो भी पुस्तकें मिलीं, उनका उस भाषा में अनुवाद किया गया। चूंकि वर्तमान काल में हमें यूनान की

भाषा में भी शस्त्र चिकित्सा पर कोई सर्व प्रसिद्ध ग्रन्थ नहीं मिलते अतः कहना पड़ता है कि आयुर्वेद में शल्य चिकित्सा का अभाव होने से यूनानी शास्त्र भी इस त्रुटि से न बच सके।

(१) हिन्दू पंडितों की तंगदिली भी इसका एक कारण समझा जाता है। जो गुण किसी व्यक्ति अथवा विद्वान में मौजूद था। वह उसके हृदय पर से बाहर न आ सका। मृत्यु के साथ उस का भी श्री गणेश हो गया। मस्तिष्क के मस्मी का चोला धारण करते ही उक्त विज्ञान आने वाली सन्तान के लिए स्वप्न मात्र सा बन गया। उनके संकुचित हृदयों में गुण को गुप्त रखने का भूत बसना था। हा! यह दोष अब भी विद्यमान है! वह दिवस कब आवेगा कि जब हम में उदारता के भाव पैदा होंगे!

इसी दोष को दूर करने के लिए अब भारतीय नेताओं की दृष्टि इस ओर हुई। कालिज स्थापित किये जा रहे हैं, जहां कि प्राचीन तथा पाश्चात्य विद्या को तुलनात्मक दृष्टि से बढ़ाया जाता है ताकि विद्यार्थियों में रीसर्च का भाव पैदा हो और आयुर्वेद की कठिन से कठिन समस्या को सरल से सरल विधि द्वारा सिद्ध किया जा सके। वा प्रत्येक बात को जनता के सम्मुख प्रत्यक्ष रूप से रक्खा जा सके। आयुर्वेद के गौरव को स्थिर रखते हुए गवर्नमेंट को वाध्य किया जावे कि वह अपने प्रचलित विद्यालयों तथा विश्व-विद्यालयों में आयुर्वेद को वही

स्थान दे, जो कि ऐलोपेथी को दिया जाता है, तथा वह आयुर्वेद की उन्नति के लिए उतना ही रुपया व्यय करे जितना कि मैडीकल कालिजों के लिए किया जाता है। यही मेरी हार्दिक कामना है !

इसी कामना पूर्ति के लिए तथा शस्त्र चिकित्सा के विषय को सर्वप्रिय वा सरल बनाने के लिए आज मैं अपने छुटे पुष्प को जनता के सम्मुख उपस्थित करने का साहस कर रहा हूं। यह चित्ताकर्षक पुष्प उस वृहत पुस्तक एक भाग है, जिस को कि मैं 'व्रण बन्धन वा शल्य विज्ञान' के नाम से पाठकों के सम्मुख रखना चाहता था। मेरी हार्दिक इच्छा थी कि इस वृहत पुस्तक को ज्यों का त्यों ही मुद्रित करवाता परन्तु कई कारणों से इस को अब पांच भागों में विभक्त कर दिया है। एक भाग आपे के पवित्र हाथों में ही—शेष चार इस प्रकार से हैं—

(१) शस्त्र भवन वा रोगी भवन।
(२) व्रण वा कीटाविष्ट रोग।
(३) कांड भग्न वा सन्धि भग्न।
(४) अस्थियों वा सन्धियों के रोग।

इस पुस्तक का विषय इसके नाम से ही स्पष्ट है इस में बन्धनों के बांधने की विधियां इस ढंग से वर्णित की गई हैं कि आयुर्वेद का विद्यार्थी तथा स्काउट इन को शीघ्र ही सीख सकता है। बन्धन अर्थात् पट्टियाँ वहीं दी गई हैं जो कि

शस्त्र चिकित्सालयों में अधिक बांधी जाती हैं। इस के अतिरिक्त सप्लिन्ट बनाने के तरीकों वा व्रण परिष्कार पर भी उचित प्रकाश डाला गया है। भाषा सरल वा सुबोध है। सत्तर हाफ़टोन चित्रों ने पुस्तक की उपयोगिता को और भी बढ़ा दिया है। जहां तहां सुश्रुत के श्लोक भी दिये गये हैं।

प्रेस में भेजने से पूर्व पुस्तक को हिन्दू विश्व-विद्यालय काशी, आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी तिब्बी कालिज देहली, श्री महृयानन्द आयुर्वेदिक कालिज लाहौर, अखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद विद्या पीठ कानपुर, तथा सेवा समिति बालचर मण्डल के कार्यकर्ताओं के पास तथा अन्य महानुभावों के पास भेजा गया। उन्होंने जो उचित विचार इस पर प्रगट किये वे भी पाठकों के दिग्दर्शन के लिए साथ ही छपवा दिये गये हैं। इसके लिए मैं भारत रत्न, देश नेता श्री० पंडित मदनमोहन जी मालवीय; डाक्टर एम. एस. वर्मा मैडीकल आफीसर डाक्टर एस. एन. अब्बास मुख्याध्यक्ष पं० सुरेन्द्र मोहन जी आचार्य; पं० किशोरीदत्त जी शास्त्री राज वैद्य; पं० रामचन्द्र जी शर्मा स्काउट कमिश्नर का अत्यन्त कृतज्ञ हूं।

वैद्य विद्या के प्रेमियों तथा विद्यार्थियों ने जिस तरह कि मेरी पहली पुस्तकों (फेफड़ों की परीक्षा वा रोग, मूत्र परीक्षा पाश्चात्य मतानुसार, बुद्धिमती दाई या गृह सुधार शास्त्र वा विसूचिका) का आदर किया है। यदि इसका भी वैसा ही आदर किया गया, तो मैं अपना प्रयत्न सफल समझूँगा और

शीघ्र से शीघ्र अन्य पुस्तकों को मुद्रित करवाने का प्रयत्न करूंगा। केवल आप की सहायता वा सहानुभूति की आवश्यकता है।

धात्री वा प्रसव के विषय पर पुस्तकों का एक दम अभाव है। जो दो चार मिलती हैं, वे अधूरी, छोटी वा संक्षेप में लिखी गई हैं। अतः वे कालेजों की स्कीम को पूर्ण नहीं कर सकतीं। पाठकों को पढ़ कर प्रसन्नता होगी कि आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी तिब्बी कालेज देहली की रीसर्च कमेटी ने मेरे से इस विषय पर पुस्तक तय्यार करवाई है जो कि मुद्रणालय में छपने के लिये भेज दी गई है। इसके पृष्ठ लगभग ८०० वा चित्र १५० होंगे। इसका नाम होगा **धात्री–विद्या या प्रसव–विज्ञान** (Midwifery)।

अन्त में मैं अपने पूज्य पिता श्रीयुत डाक्टर अर्जुनदास जी साहेब का नाम लिये बगैर नहीं रह सकता। उनकी ही कृपा तथा उत्साह से आज मैं 'आचार्य धन्वन्तरि मण्डल' की स्थापना करने पाया हूं। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि वह मुझको इस पवित्र कार्य में उत्साहित करते रहें।

फगवाड़ा — विनीत—

गुरुवार, २५–२–२६ ई० — **शिव शरण वर्मा**

कुछ चोनवी सम्मतियां
(The Benaras Hindu University)

(१) The Benaras Hindu
University office
14-1-25

महाशय जी,

आप ने व्रण बन्धन नाम की पुस्तक हिन्दी में लिखी है, यह सुनकर मुझको बड़ी प्रसन्नता हुई। आप अपनी पुस्तक का एक अध्याय Dr. M. S. Varma Incharge medical Department Hindu University के पते पर भेज दीजिये। वे जब देख कर अपनी सम्मति प्रकट करेंगे, तो मैं आप को लिखूंगा।

आपका—पं० मदन मोहन मालवीय

(२) The Benaras Hindu University
Medical Department

Dear Sir,

I am sorry I could not return your manuscript earlier. Your attempt is praiseworthy. The Book seems to fulfil all the requirements about Bandaging for a beginner in surgery. After you have published it, please let me know I shall certainly recommend it to the Ayurvedic students of our University;

Yours faithfully,

26-3-25 M. S. Verma, Doctor
Incharge Medical Deptt,,

बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय
मैडीकल विभाग

श्री मन्महोदय !

आपकी लिखी पुस्तक शीघ्र लौटा नहीं सका, मुझको शोक है। आप का परिश्रम प्रशंसनीय वा श्लाघ्य है। शस्त्र-चिकित्सा के विद्यार्थियों को व्रण बन्धन के विषय को समझने में यह पुस्तक पूर्णतया सहायता करेगी। मुद्रित करवाते ही सूचित करने की कृपा करें। मैं अवश्य ही अपने विश्व विद्यालय के आयुर्वेदीय विभाग के विद्यार्थियों को इसकी प्रशंसा वा खरीदी जाने के लिए सिफारश करूँगा।

विशुद्ध कामनाओं सहित,
२६-३-२५ आपका—श्री एम. एस. वर्मा डाक्टर
अध्यक्ष आयुर्वेदीय विभाग

3. All India Ayurveda Vidya pith Cownpore

चिकित्सक कार्यालय
कानपुर, २६-१२-२५

प्रिय महोदय !

आपकी पुस्तक वा चित्र हमने २२-१२-२५ को रजिष्ट्री से लौटा दी है। मैंने इसको अच्छी तरह से देखा है। यदि आप इसी रूप में लौटा कर छापना चाहें, तो चिकित्सक मासिक पत्र में छापी जा सकती है। किन्तु चित्र नीचे के होंगे। यदि इच्छा हो तो लिखें। पुस्तक वास्तव में अच्छी है।

हस्ताक्षर—राजवैद्य पं० किशोरीदत्त जी शास्त्री
मन्त्री, भारतवर्षीय आयुर्वेद विद्यापीठ।

4. Dayanand Ayurvedic College Lahore.

Dear Kaviraj Shiv Sharan Verma, namaste. I return herewith your manuscript of 'Brana Bandhan' after its perusal. The book, when printed, will prove very useful to students of Ayurvedic institutions and Vaidas in general. Such a book is badly needed in the market.

I appreciate your services to Ayurveda and wish you success in your noble enterprise.

Yours very Sincerely
Surendra mohan B. A.
Ayurvedacharya
Principal

Lahore
the 20th Oct., 1928

प्रिय कविराज शिव शरण वर्मा जी,

नमस्ते ! आप की हस्त-लिखित 'व्रण बन्धन' नामक पुस्तक भली प्रकार पठन करने के बाद आज वापिस करता हूँ। छपने पर पुस्तक आयुर्वेदीय विद्यालयों वा महाविद्यालयों के विद्यार्थियों वा अन्य वैद्यों को परमोपयोगी सिद्ध होगी। ऐसी पुस्तक की वैद्य विद्या में अधिक आवश्यकता थी।

आप के आयुर्वेद के प्रति इन सेवा भावों वा शुभ कामनाओं की प्रशंसा करता हूं। और मेरी हार्दिक आकांक्षा है कि आप को इस शुभ कार्य में सफलता प्राप्त हो।

आपका स्नेही—
(हस्ताक्षर) श्री० सुरेन्द्रमोहन जी बी. ए.
आयुर्वेदाचार्य
मुख्याध्यक्ष

लाहौर
२०-१०-१९२८

Ayurvedic and Unani Tibbi College Delhi.

5. " It appears to be quite a useful book for the students and the practitioners of Ayurveda "

S. N. Abbas Doctor.

1-11-24. PROFESSOR (*Now Principal*)

"यह आयुर्वेद के विद्यार्थियों वा वैद्यों के लिये एक बहुत उत्तम पुस्तक प्रतीत होती है।

हस्ताक्षर एस. एन. अब्बास प्रोफेसर

१-११-२४ (अब प्रिन्सिपिल)

Seva Samiti Boy Scouts Association.
Delhi

15-1-26

My dear Varmaji,

It has given me great pleasure to go through the manuscript of your book Bandaging in Hindi. It is a nice attempt indeed. As one much concerned with the Scouts I trust it will be of great help to them in first aid work.

Ramchander sharma

Organising Scout Commissioner

Western Circle.

व्रण-बन्धन

अर्थात्

पट्टियां

(Bandages)

व्रण-बन्धन अर्थात् पट्टी की आवश्यकता—

"अबद्धोदंश मशक शीत वातादि पीडितः ।
दुष्टो भवेच्चिरं चाऽनतिष्ठेत्स्नेह भेषजम् ॥
कृच्छ्रेण शुद्धिं रूढिं वा याति रूढो विवर्णताम्"

(अष्टांगहृदय, सूत्र स्थान, अ० २९)

इस श्लोक में बन्धन बाँधने की आवश्यकता दर्शाई गई है। इस का भावार्थ यह है कि यदि घाव पर पट्टी न बाँधी जावे तो दंश, मच्छर, मक्खी, शीत, वायु, धूल, धुआँ आदि के व्रण पर लगने से शुद्ध घाव पुनः बिगड़ जाता है और न उस के बिना व्रण पर की औषधि स्वस्थान पर ही रह सकती है, अतः व्रण या घाव की रोपण क्रिया में विलम्ब पड़ जाता है। यदि ण पुर भी जावे तो उसकी त्वचा के वर्ण का अपनी पूर्वावस्था

मेंआना असम्भव होता है। इस लिए शस्त्रवैद्य को पट्टियों के विषय में सम्पूर्णतया ज्ञान होना बड़ा ही आवश्यक तथा लाभप्रद है, पर यह बिना अभ्यास के होना कठिन है। विद्यार्थियों को एक दूसरे के अंगों पर पट्टी बाँध कर नित्य प्रति अभ्यास करना चाहिये।

पट्टी के लिये वस्त्र—शस्त्र चिकित्सालयों में कई प्रकार के वस्त्र इस प्रयोजनार्थ उपयुक्त किये जाते हैं, परन्तु रुई का ढीला बुना हुआ वस्त्र अधिक व्यवहृत होता है। अतिरिक्त इस के गॉज़, फलालैन, ऊन तथा रबड़ इत्यादि की पट्टियाँ भी काम में आती हैं। सुश्रुत संहिता तथा अन्य प्राचीन आर्ष ग्रन्थों में भी लगभग इन्हीं के प्रयोग करने का विधान है, यथा–

"क्षौम कार्पासविकदुकूल कौशेय पत्रोर्णा चीन पट्ट चर्म्मान्तर्वल्कला लाबूश..............प्रकर्णातश्चैषामादेशः।

(सुश्रुत० सू० अ० १८)

अन्यच्च

"बंधनानि तु देशादीन् वीक्ष्य युंजीत तेषुच।
आविकाजिन कौशयमुष्णं क्षौमं तु शीतलम्॥
शीतोष्णं तूल संतान कार्पासं स्नायु वल्कजम्॥"

(वाग्भट्ट० सू० अ० २९)

जहां तक भी हो पट्टी शुद्ध, निष्कीट, पतले वा दृढ़ वस्त्र की हो और सलवटों इत्यादि से रहित हो तथा वस्त्र का वर्ण श्वेत हो। अष्टांगहृदय में इस बात का उपदेश इस प्रकार से है–

"शुचिसूक्ष्मदृढ़ाः पट्टाः कवल्यः सविकेशिकाः ।
धूपिता मृदवः श्लक्ष्णा निर्वलीका व्रणे हितः ॥"

(सूत्र स्थान० अ० २९)

× × ×

पट्टी की चौड़ाई—पट्टियों की लम्बाई और चौड़ाई शरीर के भिन्न-भिन्न स्थानों के लिए भिन्न-भिन्न हुआ करती है। यथा, अंगुलियों के लिये १ इञ्च तथा शाखाओं वा अन्य भागों के लिये दो, अढ़ाई या तीन इञ्च चौड़ाई वाली पट्टियाँ उपयोग में लाई जाती हैं। सरलता के लिए लगभग चार गज़ लम्बाई की पट्टी को लपेट कर बेलन बना लेना चाहिये। इस में से पट्टी को अंग पर आवश्यकतानुसार लपेट कर शेष पट्टी को काट लेना चाहिये। अधिक छोटी पट्टियों को पुनः पुनः सीने या संयुक्त करने की अड़चन रहती है।

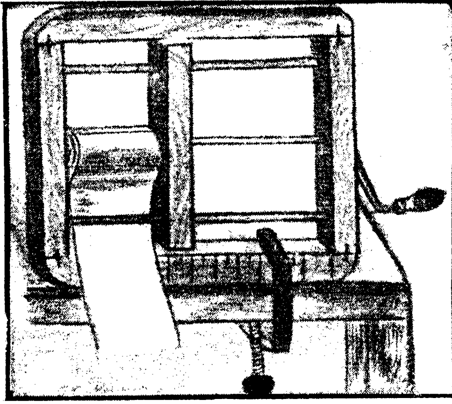
बेलन बनाना (To role a Bandage)—पट्टी को सदाही बेलन के रूप में लाकर अंग पर लपेटना चाहिये। और इस का सम वा दृढ़ बेलन बनाना चाहिये। बेलन के आरम्भिक भाग को कसकर लपेटना चाहिये अन्यथा शेष बेलन शिथिल रह जावेगा। स्मरण रहे कि शिथिल लपेटा हुआ बेलन भली प्रकार से अंगपर नहीं लपेटा जा सकता।

बेलन बनाने की दो विधियाँ हैं:—(१) हाथ से (२) बंधन-चक्री से (Rollar bandage)।

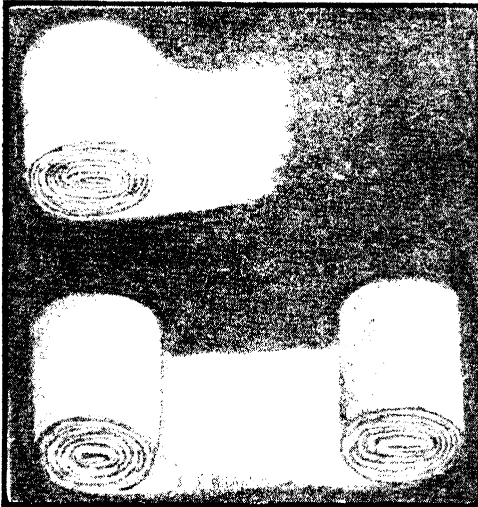
हाथ से बेलन बनाना—(क) पट्टी के शुरू के लग भग ८ इंच टुकड़े को उसके अपने ही ऊपर तह करदो। दो तीन तहों में ही ८ इंच की लम्बाई समाप्त हो जावेगी। अब तुम्हारे पास १ इंच की लम्बाई की एक छोटी सी गद्दी तय्यार हो गई। इस को गोल करके एक छोटा सा दृढ़ बेलन बना लो और आगे बेलन को शुरू करो। इस को बाईं हथेली पर इस भांति रक्खो कि पट्टी का स्वतंत्र भाग बेलन के तले से अंगुलियों के अग्रभाग से होता हुआ सामने रहे, फिर दायें हाथ से लपेटो। जब बेलन अंगुलियों के अग्रभाग पर पहुँचे तो उस को उठा कर पुनः हथेली पर रक्खो और दायें हाथ की अंगुलियों वा हथेली से घुमाओ। पट्टी में कोई मोड़ या गांठ नहीं पड़नी चाहिये। बेलन के पार्श्वों पर लटकते हुए धागों को कैंची द्वारा काट कर साफ़ कर देना चाहिये।

(ख) एक हाथ से पट्टी को पकड़ कर चौड़ी वा ठीक करते जाओ और दूसरे हाथ की अंगुलियों वा अंगुष्ठ से सिरे को पकड़ कर लपेटते जाओ।

यदि बंधन-चक्री से बेलन बनाना हो तो पट्टी के एक सिरे को चक्री की चौकोर डंडी पर स्थिर करके एक दो चक्कर दो, जब पट्टी भली प्रकार से स्थिर हो जावे तो डंडी की हत्थी को दायें हाथ से पकड़ कर घुमाओ और दूसरे हाथ से पट्टी को सीधी वा ठीक करते जाओ। जब पट्टी समाप्त हो जावे तो बेलन को तनिक दबा कर पकड़



१ बन्धन चक्री



२, ३. साधारण वा द्विशिरा बेलन

लो और हत्थी को दो एक उलटे चक्कर दो। बेलन डंडी पर की पकड़ को छोड़ देगा। डंडी को खींच कर बाहर निकाल लो। बेलन तय्यार हो गया। डंडी को पुनः चक्री में डाल दो (देखो चित्र १)

साधारण वा द्विशिरा बेलन—पट्टी को एक सिरे अथवा दोनों सिरों से आरम्भ करके लपेटा जाता है, उसी के अनुसार वह **'साधारण'** वा **'द्विशिरा बेलन'** कहाता है। कभी कभी द्विशिरा बेलन बनाने के लिये दो पृथक पृथक पट्टियों के बेलनों के सिरों को धागे से सी कर या पिन द्वारा इस भांति संयुक्त कर दिया जाता है कि दोनों पट्टियां ठीक एक दूसरे के सामने भिन्न भिन्न दशाओं में बाहर की ओर खुलें (चित्र २ वा ३)।

प्रत्येक **साधारण बेलन के दो सिरे** होते हैं। पट्टी का वह सिरा जो कि बेलन बना चुकने पर ऊपर रहता है—'स्वतन्त्र सिरा' या **'आरम्भिक सिरा'** कहाता है; दूसरा जो कि बेलन के मध्य में होता है, तथा जिस पर बेलन बनाते समय पट्टी को लपेटा जाता है—'मध्यवर्ति' या **'अंतस्थ सिरा'** कहाता है। 'अन्तस्थ' इस लिये कहाता है कि लपेटते समय पट्टी इस सिरे पर आन कर समाप्त होती है।

पट्टी के दो पृष्ठ होते हैं—वाह्य और अन्तः। बेलन में केवल वाह्य पृष्ठ ही दिखलाई दिया करता है।

पट्टी का बांधना—बांधने से पूर्व पट्टी को एक हाथ में पकड़ो। यदि दाहिने अंग पर बांधनी हो तो बेलन को बायें हाथ में पकड़ो और यदि बायें पर तो दायें हाथ से पकड़ लो वा स्वतन्त्र सिरे को दूसरे हाथ से थाम लो। इस सिरे को अंग पर इस तरह रक्खो कि पट्टी का वाह्य पृष्ठ त्वचा पर लगे। पट्टी को लपेटना आरम्भ करो। इस को न तो अधिक कस कर लपेटो और न शिथिल ही लपेटो। पट्टी का आरम्भिक सिरा नीचे दब कर स्थिर हो जावेगा।

कभी कभी विद्यार्थी अज्ञानवश पट्टी को अधिक कस कर बांध दिया करते हैं, परिणाम स्वरूप रोगी की वेदना में वृद्धि तथा रक्त प्रवाह में रुकावट पैदा हो जाती है। यदि उक्त अंग पहले ही किसी व्रणादि से आक्रान्त हो तो कोथ या परिणाश (Sloughing & Gangrene) के होने की अधिक सम्भावना होती है। इस लिये पट्टी बांधने के पश्चात् रोगी के उक्त अंग की जांच करना अत्यावश्यक है। यदि रोगी पट्टी के कस कर बांधे जाने की शिकायत करे अथवा उस के अंग का अग्रभाग, रक्तभ्रमण में रुकावट होने के कारण श्याम पड़ता मालूम हो तो तत्क्षण पट्टी को या तो बदल देना चाहिये अथवा खोल कर बांध देना चाहिये, एक क्षण की देर करना सख्त भूल है।

अविपरीत बन्धन—जो बन्धन नियमानुकूल बांधा गया हो उस को अविपरीत बन्धन कहा जाता है। सुश्रुताचार्य इस

के गुण इस प्रकार से वर्णन करते हैं—

"अविपरीत बन्धे वेदनोपशान्तिरसृक प्रसादोमार्दवंच।"

अर्थात् जो व्रण उचित रीति से बांधा गया हो उस में पीड़ा की शान्ति, रुधिर की शुद्धि और व्रण में मृदुता होता है।

शस्त्र चिकित्सक को दोनों ही हाथों से पट्टी बांधने का अभ्यास करना वा होना चाहिये, कारण कि जब रोगी के सामने खड़े हो कर पट्टी बांधी जावे तो दाईं बाहु या टांग पर बाम हाथ से और बाम बाहु या टांग पर दायें से पट्टी के बांधने का विधान है।

पट्टी का समाप्त करना—अन्त में प्रायः एक साधारण गोल लपेट दे कर पट्टी को समाप्त कर दिया जाता है और सिरे को सेफ्टीपिन या टांके द्वारा स्थिर कर दिया जाता है—अथवा सिरे को बीच में से फाड़ कर दो धज्जियां कर ली जाती हैं, एक धज्जी को अंग के ऊपर से घुमा कर दूसरी ओर की धज्जी से चपटी ग्रन्थि (Reef knot) द्वारा संयुक्त कर दिया जाता है।

बन्धन के आकृत्यानुसार भेद—यद्यपि शारीरिक अंगों वा प्रत्यंगों के आकारानुसार बन्धन कई प्रकार के होते हैं, जैसा कि आगे जाकर बतलाया जावेगा, तथापि इनको, इनके चक्रों वा लपेटों की आकृति के अनुसार दो बड़ी श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है—प्रथम **कुंडली-बंधन** (Spiral) और द्वितीय **स्वस्तिक-बंधन** (Figure of Eight)।

कुंडली बन्धन (Spiral Bandage)—पट्टी को कई साधारण चक्कर देकर लपेटना ही कुंडली बन्धन कहाता है। पिछला चक्कर अपने पहले चक्कर के ऊपर से उसकी लगभग आधी या दोतिहाई चौड़ाई को आवृत्त करता हुआ गुज़रा करता है।

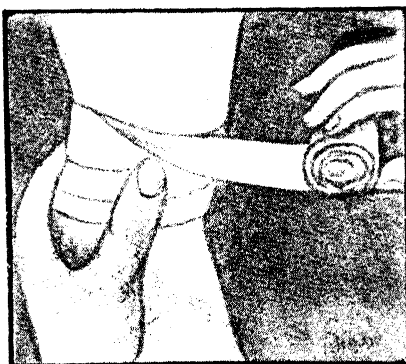
एक ऐसी वस्तु लो जो कि ऊपर से पतली हो और नीचे की ओर क्रमशः मोटी होती चली जावे (यथा गाजर)। ऐसी वस्तु को शंक्वाकार कहा करते हैं। इस पर चोटी से आधार की ओर कुण्डली बन्धन बाँधने में पता चलेगा कि पट्टी के उस किनारे को, जो कि चोटी के निकट है दूसरे किनारे की अपेक्षा कम गोलाई से गुजरना पड़ता है। यदि पट्टी का वस्त्र लचकदार न हो तो प्रत्येक चक्कर में चोटी की ओर का किनारा तनिक शिथिल वा झोलदार रह जावेगा।

शरीर की टाँगें वा बाहु नीचे से पतले वा ऊपर से मोटे होते हैं अतः ठीक ऊपर वाली बात यहां भी देखने में आवेगी। यदि बाहु वा टाँग को शंकु (Cone) मान लिया जावे तो इन की 'चोटी' मणिबंध वा गुल्फ तथा 'आधार' स्कन्ध वा ऊरू होंगे, अतः कुण्डली बन्धन के प्रत्येक चक्कर में पट्टी का मणिबंध या गुल्फ की ओर का किनारा झोलदार होता जावेगा। दुर्बल व्यक्तियों की अपेक्षा मेदस्वी वा मोटे प्राणियों में यह बात अधिक स्पष्टतया देखने में आती है।

झोल को निवृत्त करने के लिये पट्टी को अधिक बलपूर्वक



४. कुण्डली बन्धन



५. मोड़ बनाना

या कस कर लपेटना सर्वथा भूल है। ऐसा करने से ऊपर का किनारा अधिक तन जावेगा और मांस में धँस कर वहाँ एक अति वेदनायुक्त गहराव या झरी पैदा कर देगा। पट्टी में 'मोड़' बना देने से या उस का मार्ग परिवर्तित (स्वस्तिक बन्धन) कर देने से उक्त कठिनाई जाती रहेगी और पट्टी सर्व अङ्ग पर नीचे से ऊपर तक एक समान दृढ़ वा स्थिर रहेगी। (चित्र ४)

नोट—उन कुंडलाकृति लपेटों को, कि जिन में 'मोड़' बनाने पड़ें, **अनुवेल्लित लपेट** और उस कुंडली बन्धन को **अनुवेल्लित बन्धन** के नाम से पुकारा जावेगा।

मोड़ बनाना—(मोड़ बनाने को पट्टी का उलटाना भी कहते हैं) दांये हाथ में पट्टी को पकड़ो, फिर बायें हाथ के अंगुष्ठ या तर्जनी अंगुलि को पट्टी पर तिरछी रख कर निचले किनारे को दबा लो और बेलन को ऊपर से ले आओ, पट्टी उलट जावेगी। जितने कोण पर कि पट्टी ऊपर को चढ़ रही थी, उसी कोण पर अब नीचे को उतरेगी, पश्चात् दायें हाथ से पट्टी को तनिक खींच कर ठीक कर दो और बायें हाथ को हटा लो। चक्कर देने आरम्भ करो। प्रत्येक लपेट या चक्कर में पट्टी जब उस स्थान की रेखा पर पहुँचे तो मोड़ बनाते जाओ। जब तक कि अंग का शंकाकृति भाग नीचे से ऊपर तक आवृत न हो जावे, ऐसा ही करते जाओ। (चित्र ५)

मोड़ बनाते समय निम्न लिखित बातों का ध्यान रखना चाहियेः—

(१) जहां तक सम्भव हो 'मोड़' अंग के बाह्य भाग पर देना चाहिये और ध्यान रहे कि वह किसी अस्थि या उभार पर न हो।

(२) सब मोड़ एक सीधी रेखा में होने चाहियें और साथ ही एक दूसरे के समानान्तर होने चाहियें—देखने में अच्छे मालूम होंगे।

(३) मोड़ बनाते समय पट्टी को तनिक ढीला कर दो। धीरे से मोड़ बना कर लपेट को आवश्यकतानुसार कस दो।

स्वस्तिक लपेट या स्वस्तिक बन्धन—कुंडली बन्धन के निचले किनारे के झोल को दूर करने के लिये एक और विधि भी प्रयोग में लाई जाती है, इस को स्वस्तिक चक्कर या स्वस्तिक लपेट के नाम से पुकारा जाता है। इस के लपेट स्वस्तिक चिह्न 卐 की भांति एक दूसरे पर से गुजरा करते हैं। इसका आकार आर्यभाषा के अंक ४ या आंग्ल भाषा के अङ्क 8 से मिलता है, इसी लिए पाश्चात्य वैद्यवर इस को अंक आठ की पट्टी कहा करते हैं। इस बन्धन में पट्टी के मार्ग को इस लिए बदल दिया जाता है कि वह अंग के पृष्ठ पर ठीक बैठ सके। पट्टी को एक दम ऊपर ले जाओ और अंग पर से घुमा कर एक दम इस प्रकार से नीचे को लाओ कि वह ऊपर जाने वाले अर्थात् ऊर्ध्व गामी भाग को विषम रीति से (तिरछी) अंग की मध्यवर्ति रेखा से एक आध इञ्च परे एक बिन्दु पर काटे (चित्र ६), यदि पट्टी एक ओर से थोड़ी उठी रहे तो

प्रथम वा द्वितीय स्वस्तिक चक्रों के बीच एक साधारण लपेट दे देना चाहिये जैसा कि चित्र से प्रगट है।

सुपाशा बन्धन (Spica)—सुपाशा बन्धन उन स्वस्तिक लपेटों या बन्धनों को कहा जाता है कि जो गात्र वा किसी शाखा के संगम पर अथवा किसी शाखा के लघु वा वृहत भागों के बीच में बांधे जाते हैं यथा नितंब या पांव का सुपाशा बन्धन।

× × × ×

इस पुस्तक में केवल उन्हीं बन्धनों का उल्लेख किया जावेगा जो बहुत आवश्यक प्रतीत होते हैं तथा नित्य प्रति शस्त्र क्रिया में व्यवहृत होते हैं।



शिर के बन्धन

(१) ललाट-बन्धन (Oxipito Frontal Bandage)

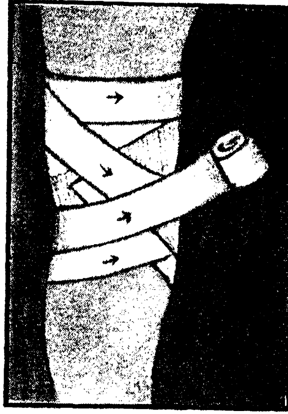
चौड़ाई (पट्टी की)—दो इञ्च

क्षेत्र—ललाट, कानों के ऊपर का भाग और पश्चात् कपाल ।

प्रयोजन(क) उक्त क्षेत्र में परिष्कार (Dressing) को स्थिर करता है तथा (ख) कपाल के व्रणों के रक्त-पात को रोकता है ।

विधि –(१) रोगी के सामने खड़े होकर बायें हाथ में थामे हुए स्वतन्त्र सिरे को उसके ललाट पर रख बेलन को बाईं शंखास्थि को आवृत करते हुए, कान के ऊपर से ठीक पश्चादस्थि पर ले जाओ और वहाँ से दाईं शंखास्थि को ढाँपते हुए दायें कान के ऊपर से ललाटास्थि पर ले आओ। यहाँ पर यह लपेट स्वतन्त्र सिरे को दाब कर स्थिर करेगा । (२)आवश्यकतानुसार दो तीन लपेट दिये जा सकते हैं । पट्टी को माथे पर लाकर पिन द्वारा संयुक्त करना चाहिये । पिन को पश्चात्-अस्थि या शंखास्थि पर कभी न लगाओ, अन्यथा लेटते समय उक्त व्यक्ति को कष्ट होगा । पट्टी को पश्चादस्थि पर ले जाते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि लपेट पश्चात् उभार के ऊपरी भाग से न जाने पावें । (चित्र नं० ७)

卐 卐 卐



६. स्वास्तक लपेट



७. ललाट बन्धन

(२) मण्डल बन्धन (Circular Bandage)—

"वृत्तेंगे मण्डलम" —

सुश्रुत

चौड़ाई—दो इञ्च।

क्षेत्र—कपाल की चोटी, शंख देश, एक ओर का गाल, ठोढ़ी का निम्न-भाग, दूसरी ओर का गोस्तन देश (mastoid region)

प्रयोजन—(क) कपाल के व्रणों की रक्षा करता है। (ख) कान की अगाड़ी या पिछाड़ी के परिष्कार को स्थिर रखता है।

विधि—स्वतन्त्र सिरे को पार्श्विकास्थियों के संगम पर ब्रह्मरन्ध्र के पीछे इस तरह रक्खो कि पट्टी शिर के बाईं ओर से खोली जा सके। (१) सिरे को थाम कर बेलन को बाईं पार्श्विकास्थि के उभार पर से ठीक नीचे की ओर शंखास्थि को आवृत करते हुए बायें कान के सामने तथा अधोहन्वस्थि के ऊपर से चिबुक के ठीक नीचे ले जाओ और वहां से दायें कान के पीछे से शिर पर पहुँच जाओ। स्वतन्त्र सिरे को दाब कर पट्टी को स्थिर कर दो। (२) आवश्यकतानुसार दो तीन लपेट दो। (चित्र ८)

卐 卐 卐

(३) दोहरा मण्डल बंधन (Double Circular)—

चौड़ाई—दो इञ्च

क्षेत्र—कपाल की चोटी, शंख वा गोस्तन देश, दोनों ओर के गाल, ठोढ़ी का निम्न-भाग।

प्रयोजन—(क) कपाल के व्रणों की रक्षा करता है। (ख) कान के आगे या पीछे की ड्रैसिंग को स्थिर करता है। मण्डल बन्धन की अपेक्षा इसमें यह विशेषता है कि एक तो यह दृढ़ होता है और दूसरे इसके द्वारा कपाल का बहुत सारा भाग आवृत किया जा सकता है।

विधि—(१) पट्टी को कपाल की चोटी से आरम्भ करो, और बायें कान के पीछे वा ठोढ़ी के नीचे से होते हुए दायें कान के सामने से आरम्भिक स्थान पर पहुँच जाओ और पट्टी को स्थिर कर दो। (२) दूसरे लपेट को प्रथम के साथ साथ नीचे को लाओ और ठोढ़ी के नीचे से निकाल दायें कान की पिछाड़ी से आरम्भिक स्थान पर पहुँच जाओ। (३) तीसरा लपेट बायें कान के सामने, ठोढ़ी के नीचे वा दायें के सामने से आरम्भिक स्थान तक दो।

इन तीन लपेटों को आवश्यकतानुसार लगाया जा सकता है। यदि अधिक स्थान को आवृत करने की आवश्यकता हो, तो कान के अग्र-भाग पर जाने वाले लपेटों को थोड़ा बहुत आगे को बढ़ाया जा सकता है। पट्टी की दृढ़ता में कोई अन्तर न आवेगा।



८. मण्डल बन्धन



९. सरल बन्धन या ललाट मण्डल बन्धन

(४) सरल बन्धन या ललाट मण्डल बन्धन—
(Simple or Crossed Circular)—

चौड़ाई—दो इञ्च

क्षेत्र—इस बन्धन में ललाट बन्धन वा मण्डल बन्धन दोनों ही सम्मिलित हैं। या यूँ कहो कि इसके समस्थ (horizontal) वा ऊर्ध्ववर्तन (Vertical) दो प्रकार के लपेट हैं। इसका क्षेत्र वही है, जो कि ऊपर वाले बन्धन संख्या १ वा संख्या २ का है।

प्रयोजन—(क) शिर के रक्तपात को रोकता है, कपाल की चोटी, कान का अग्र भाग वा हनु के कोन पर की परिष्कार को स्थिर करता है।

विधि—(१) ललाट बन्धन का एक लपेट देने के पश्चात् जब पुनः दाहिने कर्ण के ऊपर शंखास्थि पर पहुँचो तो वहां पर तर्जनी अंगुलि रख कर पट्टी को उस के ऊपर से कान के सामने ठीक नीचे को मोड़ लो। अंगुलि रखने के स्थान पर पिन लगाना अधिक अच्छा है। (२) अंगुलि को वहीं रहने दो और मण्डल बन्धन की विधि अनुसार ठोड़ी के तले से पट्टी को शिर पर ले जाओ ताकि मोड़ा हुआ भाग स्थिर किया जा सके। यहां पर बन्धन का एक लपेट पूरा हो गया। ठोड़ी पर के लपेट को अधिक दृढ़ करने के लिये उसके ऊपर से पट्टी को एक बार और ले जाओ और शिर पर समाप्त करो। चिबुक के नीचे से ले जाते हुए बेलन उलटा हो जावेगा। (चित्र ६)

(५) मंडल-ललाट बन्धन--

चौड़ाई—दो इंच।

क्षेत्र—ललाट-मण्डल बन्धन का।

प्रयोजन—ललाट-मण्डल बन्धन में का।

विधि—(१) यह ललाट-मण्डल बंधन की ही भांति बाँधा जाता है। भिन्नता केवल इतनी ही है कि इसमें प्रथम मंडलाकृति लपेट दिया जाता है ताकि शिर पर का परिष्कार भली प्रकार से स्थिर हो सके। (२) पश्चात् दाईं शंखास्थि के ऊपर पट्टी में पिन लगा कर अथवा अंगुलि रख कर बेलन को ललाट की ओर मोड़ लो। ललाट पर से एक या दो लपेट देकर पट्टी को आगे संयुक्त कर दो।



(६) ग्रन्थिल बंधन (Knotted Bandage)

(एक पट्टी से)

चौड़ाई—दो इंच।

क्षेत्र—यह दो प्रकार के चक्रों से निर्मित है—(१) ललाट चक्र (२) ऊर्ध्वतन चक्र-अतः क्षेत्र स्पष्ट ही है।

प्रयोजन—(क) शंखदेश पर दबाव डालता है (ख) वहां के रक्तपात को रोकता है।

विधि—(१) सिरे को थोड़ा सा लम्बा छोड़ कर शंखास्थि के निकट से आरम्भ करो। शिर के ऊपर तथा दूसरी ओर



१०. ग्रंथिल बंधन



११. शंख बन्धन

शंखास्थि को आवृत करते हुए चिवुक के नीचे से पट्टी को पुनः वहीं ले जाओ। (२) शंखास्थि के ऊपर कान को बचा कर दोनों सिरों को एक दूसरे पर मोड़ दो, बेलन घूम कर पीछे पश्चात् उभार को ओर और दूसरा सिरा ललाट को ओर आजावेगा, दोनों को चपटी ग्रंथि द्वारा संयुक्त कर दो। (चित्र १०)।



(७) ग्रंथिल बंधन (Knotted Bandage)—

(दो पट्टियों से या द्विशिरा बेलन से)

विधि—(१) द्विशिरा बेलन के मध्य को दाँयें कान के तनिक ऊपर रक्खो। दोनों सिरों को समस्थ रूप में ललाट पर तथा पश्चात् प्रवर्द्धन पर ले जाओ। दोनों सिरे वाम पार्श्व पर शंख देश पर मिलेंगे। (२) इन को एक दूसरे पर घुमा दो। नीचे वाले बेलन को ऊपर कपाल की ओर और ऊपर वाले को नीचे की ओर चिवुक के तले ले जाओ। (३) जब दोनों दाहिने शंखदेश पर मिलें तो उन को पुनः एक दूसरे पर घुमा दो। अग्र-बेलन को पीछे और पश्चात् बेलन को आगे ललाट पर ले आओ। ऐसे ही आवश्यकतानुसार लपेट दो। ध्यान रहे कि गांठें या मोड़ ठीक एक दूसरे पर रहें-आगे पीछे न हों।

(८) शंख बन्धन (Temporal Bandage)—

चौड़ाई—दो इञ्च।

क्षेत्र—ललाट, दोनों शंख देश, पश्चात् देश।

प्रयोजन—(क) शंख देश पर विशेषतया शांखिकी धमनी पर दबाव डालता है (ख) रक्तपात को रोकता है (ग) परिष्कार को स्थिर रखता है।

विधि—ललाट बन्धन के सदृश एक दो लपेट देकर जब पट्टी पुनः अस्वस्थ भाग के कर्ण के निकट पीछे से आवे तो इस को लपेट के समान्तर ले जाने के प्रथम ललाट के ऊपरी भाग की ओर तिरछा ले जाओ और पार्श्व पर लपेटते हुये पश्चात् उभार से तिरछा ही ललाट पर नीचे को भृकुटि की ओर लाओ। ललाट पर से चक्कर देकर पुनः ऐसे ही लपेट बनाते जाओ। पश्चात् का प्रत्येक लपेट अपने पूर्वज से तनिक ऊपर को हटता जावेगा। चित्र (११) से बन्धन की आकृति भली प्रकार से समझ में आ जाती है। इस को देखने से तुम्हारे मन में यह भ्रम उत्पन्न होता होगा कि लपेटों में कुण्डली बन्धन के सदृश 'मोड़' बनाये गये हैं, पर वास्तव में यह बात नहीं है। पट्टी को ऊपर नीचे तिरछा ले जाने से ही मोड़ों का भ्रम पड़ता है।

卐 卐 卐

(९) **द्विमुद्रा बन्धन** (Double looped Bandage)—इस को आंग्ल भाषा में इलयट-ब्लेक (Elliot Blake) के नाम से भी पुकारा जाता है।

चौड़ाई—दो इञ्च।

क्षेत्र—दोनों कानों का अग्र भाग, चिबुक का निम्न भाग, कण्ठ, पश्चात् देश।

प्रयोजन—परिष्कार को स्थिर रखता है। कंठ के लिये विशेष उपयोगी है।

विधि—सिरे को ब्रह्म रन्ध्र से तनिक पीछे रक्खो और पट्टी को बायें कान के पिछाड़ी से तिरछी नीचे की ओर पश्चात् प्रवर्धन के निम्न भाग पर लाओ, वहां से ग्रीवा के बाम भाग पर से तथा चिबुक के नीचे से निकाल अधो हन्वस्थि के बायें भाग को आवृत करते हुए ऊपर की ओर कान के आगे से शिर पर पहुंच जाओ। पट्टी को स्थिर कर दो।

अब शिखर से नीचे की ओर उतरो। दायें कान के पिछाड़ी-पिछाड़ी पश्चात् उभार के नीचे तक बन्धन को लाओ। यहां पर पट्टी को प्रथम लपेट के ऊपर से गुज़रना पड़ेगा। बाईं मन्या पर से लपेट देते हुए चिबुक के तले से निकाल कर अधो हन्वस्थि के दक्षिण भाग पर ले जाओ और कान के अग्र भाग पर से शिखर तक पहुँच जाओ। आवश्यकतानुसार कई लपेट दो (चित्र १२)।

卐 卐 卐

(१०) चिबुक बन्धन या बार्टन बन्धन (Barton's Bandage)—

चौड़ाई—दो इंच।

क्षेत्र—मूर्द्धा का मध्य भाग, दोनों शंखास्थियाँ, दोनों गाल, दोनों शंखदेश, चिबुक की निचली पृष्ठ वा अग्र पृष्ठ, दोनों पार्श्व देश, पश्चात् देश का निम्न भाग।

प्रयोजन—उक्त स्थानों के रक्तपात को रोकता है। ठोड़ी पर ऊपर वा पीछे की ओर दबाव डालता है। अधोहन्वस्थि के भग्न में प्रयुक्त किया जाता है।

विधि—पट्टी को कपाल के शिखर से शुरू करो वा बायें कान के पश्चात् भाग से नीचे को लाकर ग्रीवा के पीछे से आगे को दायें कान के नीचे २ ठोड़ी के सामने से होते हुए पश्चात् उभार पर पहुँच जाओ और वहां से दायें कान के पीछे से ऊपर आरम्भिक स्थान पर पट्टी को ले जाओ। फिर बायें कान के आगे और गाल के ऊपर से नीचे की ओर लाओ और ठोड़ी के नीचे से निकाल कर दूसरी ओर ले जाओ और दायें कान के सामने से निकाल कर आरम्भिक स्थान पर पहुँच जाओ। इन्हीं चक्रों पर आवश्यकतानुसार लपेट दो।

卐 卐 卐

(११) **वितान बन्धन**—"मूर्द्धनिवितानं"—सुश्रुत।

चौड़ाई—दो इंच।

क्षेत्र—कपाल का शिखर।

प्रयोजन—कपाल पर के परिष्कार को स्थिर रखता है।

विधि—ललाट बन्धन के दो लपेट दो और पिन द्वारा पट्टी को ललाट के मध्य में स्थिर कर दो। बेलन को मोड़ कर ठीक



१२. द्विमुद्रा बन्धन



१३. उष्णीष बन्धन
(एक पट्टी से)

सिरे के ऊपर से पश्चात् उभार की ओर ले जाओ। वहाँ भी इस को पिन से संयुक्त कर दो और आगे को लौटा लाओ। इसी प्रकार दो तीन लपेट दो। आगे से पीछे को या पीछे से आगे को आने वाले लपेट क्रमवार मध्य लपेट के दायें वा बायें उस की दो तिहाई चौड़ाई को आवृत करते हुए जायेंगे।

मंडल ललाट बन्धन में ठोढ़ी के नीचे से लपेट देना पड़ता है परन्तु इसमें ठोढ़ी के नीचे से कोई लपेट नहीं देना पड़ता और कार्य भी वही निकलता है। यही कारण है कि कई रोगी मंडल ललाट बन्धन की अपेक्षा इसको अधिक पसंद करते हैं।



(१२) उष्णीष या पुनरावर्तक बन्धन (Recurrent Bandage of Head)—(एक पट्टी से)

चौड़ाई—दो इञ्च

क्षेत्र—कपाल। इस पट्टी का दबाव केवल ललाट के चक्रों पर ही होता है।

प्रयोजन—सिर पर परिष्कार को स्थिर रखता है। रक्तपात रोकने के लिये इसको प्रयोग में नहीं लाना चाहिये। इससे द्विशिरा बेलन द्वारा बाँधा हुआ बन्धन उत्तम है।

विधि—(१) पट्टी को ललाट से शुरू करो, और शिर की चोटी के ठीक ऊपर से पश्चात् उभार से तनिक नीचे लेजाओ और पुनः लौटा कर ललाट पर ले आओ। लौटते समय

पट्टी अपने पूर्व चक्र के दाहिनी ओर उसकी आधी चौड़ाई को आवृत करती गुज़रेगी। (३) माथे पर से उलटा कर पुनः पीछे को ले आओ, अब पट्टी पहले चक्र के बाईं ओर उसकी आधी चौड़ाई को आवृत करती हुई जावेगी। (४) ऐसे ही लपेट बनाते जाओ। प्रत्येक लपेट में पट्टी बारी २ मध्य रेखा से परे हटती जावेगी। जब सम्पूर्ण कपाल आवृत हो जावे तो ललाट पर से दो मण्डलाकृति लपेट दो—ये दोनों कानों के ऊपर से तथा पश्चात्-उभार पर से गुज़रेंगे और शिर पर के अग्र-पश्चात् वा पश्चात्-अग्र लपेटों को दाब कर स्थिर करेंगे। जब तक मण्डलाकृति लपेट देकर पट्टी को स्थिर न कर दिया जावे तब तक रोगी ललाट पर के सिरों को और शस्त्र-वैद्य पश्चात् पर के सिरों को थामे रक्खे। (चित्र १३)

卐 卐 卐

(१३) उष्णीष या पुनरावर्तक बन्धन (Recurrent Bandage of Head)—(द्विशिरा बेलन से)

चौड़ाई—एक या डेढ़ वा दो या तीन इँच की दो पट्टियाँ।

क्षेत्र—कपाल।

प्रयोजन—'क' यह एक पट्टी द्वारा बाँधे हुए उष्णीष बन्धन की अपेक्षा दृढ़ होता है और बिना किसी दूसरे व्यक्ति की सहायता के बाँधा जा सकता है। 'ख' परिष्कार को स्थिर रखता है पर इसको रक्त पात में प्रयुक्त नहीं करना चाहिये।



१४. पुनरावर्तक बन्धन (अपूर्ण)



१५. पुनरावर्तक बन्धन (पूर्ण)

विधि—पट्टी के छोटे बेलन को दायें हाथ में और बड़े चौड़े बेलन को बायें हाथ में पकड़ लो और रोगी के एक ओर खड़े हो जाओ।

(१) बेलन के मिलान को ललाट पर रख कर दोनों पट्टियों को अपनी अपनी ओर के पार्श्व पर से पश्चात् उभार तक ले जाओ। यहाँ पहुँच कर दोनों पट्टियाँ भिन्न २ मार्ग ग्रहण करेंगी। तंग पट्टी माथे के ही ऊपर से ललाट बन्धन के सदृश लपेटों को पूरा करेगी परन्तु चौड़ी पट्टी उसके विपरीत शिर के ऊपर पीछे से आगे वा आगे से पीछे कई बार अपने पथ को तय करेगी। यही दोनों के पृथक २ मार्ग हैं। बड़े बेलन को अपने प्रत्येक घेरे में सामने ललाट के मध्य में और पीछे पश्चात् उभार के निकट अवश्य पहुँचना होता है। इन स्थानों पर तंग पट्टी चौड़ी पट्टी को अपने नीचे दबाती हुई गुज़रेगी। प्रत्येक बार जब तंग पट्टी चौड़ी पट्टी को नीचे दबाती हुई गुज़रती है, तो बेलनों को पकड़ने के लिये हाथ बदलने पड़ते हैं। जब तंग बेलन शिर के दाहिनी ओर अपना मार्ग पूरा करता है तो उसको दायें हाथ से और बाईं ओर होता है तो बाएँ हाथ से पकड़ना पड़ता है।

(२) चौड़ी पट्टी से कपाल पर लगा हुआ प्रथम लपेट पीछे से आगे को शिर की मध्यवर्ति रेखा के ठीक ऊपर २ से आयेगा और माथे के आगे तङ्ग पट्टी का लपेट उसका अपने नीचे स्थिर करता हुआ वाम पार्श्व से पीछे को चला जावेगा।

(३) चौड़ी पट्टी को मोड़ कर शिर के ऊपर से पश्चात् उभार पर ले जाओ; स्मरण रहे कि यह लपेट मध्यवर्ति लपेट के दाईं ओर उस की दो तिहाई चौड़ाई को आवृत्त करता हुआ जावेगा। इस को नीचे तक ले जाओ और तंग पट्टी को इस पर से खोलते हुए दायें पार्श्व पर से ललाट पर ले जाओ।

(४) चौड़ी पट्टी का तीसरा लपेट पीछे से आगे को मध्यवर्ति लपेट के बाईं ओर उस की दो तिहाई चौड़ाई को आवृत्त करता हुआ आवेगा (चित्र १४)।

(५) इसी भांति और लपेट देते जाओ। जब शिर भली प्रकार से आवृत हो जावे और चौड़ी पट्टी छोटी पट्टी के ही मार्ग पर आ जावे तो दोनों सिरों को, जो कि एक दूसरे के सम्मुख पड़े होते हैं, आपस में ग्रन्थि द्वारा या पिन द्वारा संयुक्त कर दो। सिरों को नीचे की ओर मोड़ देना चाहिये ताकि पट्टी के धागे निकलने न पावें (चित्र १५)



(१४) शिर का स्वस्तिक बन्धन (Figure of Eight)—

चौड़ाई—दो इञ्च।

क्षेत्र—कपाल का मध्यवर्ति स्थान, दोनों शंख देश, दोनों गाल, ठोड़ी का निम्न भाग, दोनों पार्श्व देश और पश्चात् देश।



१६. शिर का स्वस्तिक बन्धन



१७. पार्श्विक पुनरावर्तक बन्धन

प्रयोजन—(क) यह अति दृढ़ होता है, पर ललाट बन्धन के लपेटों को साथ ही सम्मिलित कर देने से इस की दृढ़ता और बढ़ जाती है (ख) परिष्कार को स्थिर रखता है (ग) रक्तपात को रोकता है।

विधि—मण्डल बन्धन का एक लपेट दे कर पट्टी को बायें कान के पीछे पश्चात् उभार के गिर्द पीछे से घुमा कर ऊपर की ओर दायें कान के पिछाड़ी से शिर की चोटी तक ले जाओ। यहां पर इस बन्धन का एक लपेट पूरा हो जावेगा। आवश्यकतानुसार कई एक लपेट दिये जा सकते हैं। प्रथम स्वस्तिक चक्र के मिलन का स्थान शिर की चोटी से कुछ आगे को रखना चाहिये ताकि पट्टी पीछे को हट न जावे। पश्चात् के लपेटों को क्रमशः पीछे को हटाते जाना चाहिये ताकि आवश्यक स्थान आवृत किया जा सके। (चित्र १६)



(१५) पार्श्विक पुनरावर्तक बंधन (Partial Recurrent)—

चौड़ाई—एक इञ्च वा डेढ़ इञ्च की दो पट्टियाँ।

क्षेत्र—कपाल का कोई सा स्थान तथा ललाट से पश्चात् तक का घेरा।

प्रयोजन—कपाल पर की ड्रेसिंग को स्थिर रखता है।

विधि—एक पट्टी को ललाट बन्धन के सदृश लपेटा जाता है और दुसरी पट्टी से एक पार्श्व से दूसरे पार्श्व तक

के चक्र पूरे किये जाते हैं। ललाट पर की पट्टी अपने प्रत्येक चक्र में कपाल पर की पट्टी को अपने नीचे दबाती हुई गुजरेगी—इस प्रकार से पट्टी स्थिर होती जावेगी। इन लपेटों को आवश्यकतानुसार आगे वा पीछे की ओर हटाया जा सकता है। (चित्र १७)।

सिक्खों के लिये यह बन्धन विशेष लाभकारी है। कारण कि उनके लम्बे बाल व्रण पर से आगे वा पीछे को हटाये जा सकते हैं। आगे के बाल आगे वा पीछे के बाल पीछे बांधे जा सकते हैं और उन में नित्य प्रति कंघी की जा सकती है।

नेत्र के बन्धन

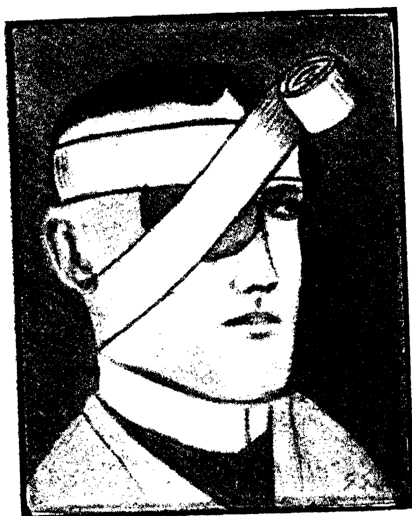
(१६) स्वस्तिक बन्धन (एक नेत्र के लिए) (Monocular Bandage)—

चौड़ाई—डेढ़ इञ्च।

क्षेत्र—ललाट बन्धन का क्षेत्र, एक नेत्र, समीपवर्ति गाल का थोड़ा सा भाग।

प्रयोजन—(क) एक आँख पर परिष्कार को स्थिर रखता है (ख) आंख को धूल धुँआं वा धूप से सुरक्षित रखता है।

विधि—(१) अस्वस्थ नेत्र के ऊपर ललाट पर सिरे को रक्खो और और स्वस्थ नेत्र की ओर से ललाट पर एक लपेट पूरा करो। जब दूसरा लपेट स्वस्थ भाग के कान तक पहुँच जावे तो पट्टी का रुख पश्चात् उभार की ओर कर दो।



१८. नेत्र बन्धन



१९. स्वस्तिक बन्धन (दोनों नेत्रों के लिये)

(२) उभार के नीचे से चक्कर दे कर पट्टी को दूसरी ओर के कान के नीचे से निकाल अस्वस्थ नेत्र को आवृत करते हुए ऊपर ललाट पर के लपेट तक ले जाओ (चित्र १८)।

इस को कस कर न लपेटना चाहिये। अन्यथा नेत्र पर अधिक दबाव के कारण रोगी को कष्ट होगा। पट्टी को कान के नीचे से ले जाने की अपेक्षा कान के ऊपर से (आवृत करते हुए) भी ले जाया जा सकता है। ऐसी दशा में कान के पीछे रुई की गद्दी या गॉज़ की तह रख देनी चाहिये।

卐 卐 卐

(१७) **स्वस्तिक बन्धन** (दोनों नेत्रों के लिए) (Binocular Bandage)—

चौड़ाई—डेढ़ इञ्च।

क्षेत्र—ललाट बन्धन का क्षेत्र, दोनों नेत्र, दोनों गालों का कुछ स्थान।

प्रयोजन—(क) नेत्रों पर की ड्रेसिङ्ग को स्थिर रखता है (ख) इन को धूल, धुंआ वा धूप से सुरक्षित रखता है।

विधि—(१) ललाट पर एक लपेट दाईं ओर से बाईं ओर को दो (२) जब पुनः बायें कान के पास पहुँचो तो पट्टी को पश्चात् उभार के नीचे से घुमा कर दूसरे कान के नीचे से ऊपर की ओर ललाट पर दायें नेत्र को आवृत करते हुए ले जाओ (३) वहां से बाईं पार्श्विकास्थि के ऊपर से प्रथम लपेट के साथ साथ दायें कान के ऊपर शंखास्थि पर ला कर पट्टी का रुख़ दायें नेत्र की ओर कर दो। बायें नेत्र को आवृत

करते हुए बायें कान के नीचे से पश्चात् उभार के निम्न भाग पर ले जाओ और वहां से दायें कान के ऊपर से ठीक ललाट पर ले जाओ। इस भाँति बन्धन दोनों नेत्रों पर से अपने पथ को तय करेगा, आवश्यकतानुसार और भी लपेट दिये जा सकते हैं।

दायें नेत्र के लिए पट्टी नीचे से और बायें के लिए ऊपर से आवेगी। यदि लपेट अधिक संख्या में देने हों तो सब से नीचे का लपेट नेत्र के निम्न भाग पर से जाना चाहिये और पश्चात् का प्रत्येक लपेट क्रमशः ऊपर की ओर हटता जाना चाहिये (चित्र १६)।



(१८) नेत्र का चीनबन्धन (Moor fields' Bandage)-

"अपांग योश्चीनम्"—

सुश्रुत

यह बन्धन नेत्रों के लिए ऊपर के दोनों स्वस्तिक बन्धनों (संख्या १५ या १६) की अपेक्षा अधिक उपयोगी है, कारण कि यह रोगी के शिर को सरहाने से बिना उठाये ही बांधा जा सकता है और परिष्कार को बदला जा सकता है। इस के बनाने वा बांधने की विधि (चित्र २० से) स्पष्ट है।

यदि अगले रोज़ नेत्र को धो कर परिष्कार (dressing) बदलनी हो तो माथे पर की ग्रन्थि को खोल कर बन्धन को कुछ ढीला कर दो और उस को उठा कर पीछे ललाट पर



२०. चीन बन्धन



२१. चतुरस्र या चतुरपुच्छ बन्धन

रख दो । कार्य समाप्ति पर बन्धन को पुनः उठा कर नेत्रों पर रख दो फीतों को खींच कर माथे पर ग्रन्थि लगा दो ।

卐 卐 卐

(१६) चतुरस्र या चतुर पुच्छ बन्धन (Four Tailed Bandage)—

चौड़ाई—तीन इञ्च ।

लम्बाई—तीन फुट ।

क्षेत्र—ठोढ़ी, दोनों गाल, पश्चात् देश, पार्श्व देश ।

प्रयोजन—ठोढ़ी पर ऊपर वा पीछे को ओर दबाव डालता है, अधो-हन्वस्थि के भग्न में लाभकारी है ।

विधि—तीन फुट लम्बा और तीन इञ्च चौड़ा मलमल का टुकड़ा लो । इसको बीचों बीच इस प्रकार से फाड़ो कि ठीक इसके चार सिरे बन जावें और बीच में कोई चार इञ्च के स्थान बिना कटा ही रहने दो । पट्टी के मध्य में से दो इंच लम्बा और एक इंच चौड़ा टुकड़ा काट कर निकाल दो । यह छेद ठोड़ी की नोक के लिये बन गया । इसको ठोड़ी की नोक पर रख दो । पट्टी का आधा भाग ठोड़ी की पिछाड़ी और आधा भाग आगे निम्न ओष्ठ के नीचे रहेगा ।

निम्न ओष्ठ के समीपवर्ति भाग के सिरों को पीछे की ओर कानों के तले से पश्चात् भाग पर ले जाओ और चपटी ग्रंथि द्वारा संयुक्त कर दो । शेष दोनों सिरों को गालों के ऊपर की ओर ले जाकर ब्रह्मरन्ध्र के सामने ग्रंथिद्वारा संयुक्त करदो ।

अब लटकते सिरों को आपस में चपटीग्रंथि (Reef knot) द्वारा इस भाँति बांध दो कि दायाँ सिरा दायें से और बायाँ सिरा बायें से मिल जावे और दोनों मध्यवर्ति रेखा के पार्श्वों पर रहें।

ग्रंथियाँ लगाते समय पट्टी को बल पूर्वक ऊपर को खींच लेना चाहिये ताकि चिबुक पर ऊपर का पीछे की ओर आवश्यक दबाव पड़ सके। (चित्र २१)

卐 卐 卐

(२०) कर्ण बंधन

चौड़ाई—दो इञ्च

क्षेत्र—ललाटबन्धन का क्षेत्र, अस्वस्थकर्ण, दूसरी ओर का पार्श्विक देश।

प्रयोजन—(क) कान की ड्रसिङ्ग को स्थिर करता है। (ख) उसको धूल वा शीत से बचाता है।

विधि—(१) कान पर रखी हुई रुई इत्यादि के उपरले भाग को दबाता हुआ एक लपेट आगे से, ललाट तथा पश्चात् उभार से गुज़रता हुआ दो। (२) दूसरा लपेट उसी के ऊपर से आरम्भ करो। यह लपेट जब पश्चात् उभार पर पहुँचे तो पट्टी को कर्ण पाली के नीचे से निकाल कर ऊपर की ओर माथे पर ले जाओ। (३) और सिर पर से पीछे की ओर घुमा कर पट्टी को पुनः अस्वस्थ कान के ऊपर से आगे लाकर ललाट पर का एक लपेट पूरा करो। यहाँ पर तीन लपेट



२२. कर्ण बन्धन



२३. ललाट वा चिबुक का स्वस्तिक बन्धन

पूर्ण होगये। चौथा लपेट दूसरे लपेट के सदृश कान के नीचे से ऊपर को उसकी उपरली दो तिहाई चौड़ाई को आवृत करता हुआ गुज़रेगा। इसी भाँति इतने लपेट दो कि परिष्कार भली प्रकार्थ आवृत हो जावे। (चित्र २२)



(२१) ललाट वा चिबुक का स्वस्तिक बंधन—(Figure of Eight of the Four head and Chin).

चौड़ाई – डेढ़ इञ्च।

क्षेत्र—ललाट, कानों के ऊपर का भाग, कानों का निम्न भाग, चिबुक का अग्रपृष्ठ वा पश्चात् देश।

प्रयोजन—(क) पश्चात् देश की परिष्कार को स्थिर रखता है। (ख) वहाँ के रक्त-पात को रोकता है।

विधि—(१) पट्टी को ललाट पर से शुरू करो और दोनों कानों के ऊपर से शिर पर एक लपेट देकर आरम्भिक स्थान पर पहुँच जाओ। पट्टी स्थिर हो जावेगी। (२) अब पट्टी को एक कान के ऊपर से पश्चात् उभार पर ले जाओ और वहाँ से दोनों कानों के नीचे नीचे चिबुक के अग्रभाग से पश्चात् भाग तक लपेट को पूरा करो। (चित्र २३)

आवश्यकतानुसार ऐसे दो तीन लपट दो।



ग्रीवा वा कक्षा के बन्धन

(२२) वर्तुल ग्रीवा बंधन या प्रतोलीबंधन (Circular of the Neck)—

"ग्रीवा मेढ्रयोः प्रतोली"—

सुश्रुत

चौड़ाई—दो इञ्च

क्षेत्र—ग्रीवा का घेरा।

प्रयोजन—ग्रीवा पर के व्रणों की रक्षा करता है।

विधि—बन्धन के सिरे को कृकाटिका से आरम्भ कर ग्रीवा पर एक लपेट दो। बन्धन स्थिर हो जावेगा। आवश्यकतानुसार दो तीन लपेट दो।

卐 卐 卐

(२३) ग्रीवा वा शिर का पाश्चात्त्य स्वस्तिक वन्धन—(Posterior Figure of Eight of Head and Neck).

चौड़ाई—दो इंच।

क्षेत्र—ललाट बन्धन का क्षेत्र, ग्रीवा का घेरा।

प्रयोजन—ग्रीवा का पश्चात् देश की ड्रसिङ्ग को स्थिर रखता है।

विधि—(१) बन्धन को ललाट पर से आरम्भ कर के दोनों कानों के ऊपर से सिर पर एक लपेट देकर पुनः पश्चात् उभार तक पहुँच जाओ। (२) वहाँ पर से ग्रीवा पर से घुमा कर पश्चात् उभार तक ले जाओ। (चित्र २४)



२४. ग्रीवा वा शिर का पाश्चात्य स्वस्तिक बन्धन



२५. ग्रीवा वा शिर का प्राक्तन स्वस्तिक बन्धन

यहाँ पर बंधन का एक पूरा लपेट समाप्त होता है। आवश्यकतानुसार दो तीन लपेट दो।

卐 卐 卐

(२४) ग्रीवा वा शिर का प्राक्तन स्वस्तिक बंधन (Anterior Figure of Eight of Head and Neck)—

चौड़ाई—दो इंच।

क्षेत्र—ग्रीवा का घेरा, ठोढ़ी का निम्न-भाग, हनु का कोण, एक ओर का गाल या दोनों गाल, कपाल की चोटी।

प्रयोजन—जब वर्तुल ग्रीवा बन्धन से कार्य नहीं चलता और ग्रीवा के सामने का व्रण बहुत दूर तक फैला हुआ हो तो इस बन्धन से प्रयोजन सिद्ध हो जाता है।

विधि—(१) ग्रीवा के सामने से शुरू करो और अस्वस्थ भाग की ओर से ग्रीवा पर 'वर्तुल-ग्रीवा' का एक चक्कर पूरा करो और स्वतन्त्र सिरे को स्थिर कर दो।

(२) दूसरा लपेट प्रथम लपेट से तनिक ऊपर को हटता हुआ दो।

(३) तीसरा लपेट आरम्भ करो और ग्रीवा के पार्श्व पर पहुँच कर पट्टी को कान के आगे या पीछे से शिर के ऊपर ले जाओ। (चित्र २५)

यदि पट्टी को कान के आगे से ऊपर ले आया गया हो तो दूसरे कान के पीछे से पट्टी को खोलते हुए नीचे उतरो। चौथा लपेट ग्रीवा पर और पाँचवाँ शिर पर से अपने घेरे को

पूर्ण करता है। आवश्यकतानुसार कई एक लपेट दिये जा सकते हैं।

卐 卐 卐

(२५) कक्षा बन्धन (कक्षा का स्वस्तिक बंधन)—
(Figure of Eight of one Axilla)—

चौड़ाई—दो इञ्च

क्षेत्र—अस्वस्थ कक्षा, दूसरी ओर की कक्षा का निम्न भाग।

प्रयोजन—कक्षा में के व्रणों की रक्षा करता है।

विधि—(१) पट्टी के सिरे को अस्वस्थ कक्षा के अग्रक के निकट इस प्रकार रक्खो कि वह स्कन्ध की ओर पीछे को खुले। एक हाथ में सिरे को थाम कर बेलन को पीछे से कक्षा के नीचे से निकाल उरश्छादनी के ऊपर से कन्धे पर ले आओ और पट्टी को स्थिर कर दो।

(२) अब बेलन को यहाँ से दूसरी कक्षा की ओर पृष्ट पर ले आओ और कक्षा में से निकाल उरश्छादनी वृहती के ऊपर से जत्रु को आवृत करते हुए ठीक कन्धे पर ले आओ। यहाँ पर कक्षा बन्धन के स्वस्तिक लपेट का चक्कर सम्पूर्ण होता है।

स्वस्तिक लपेट चाहे ग्रीवा मूल से आरम्भ होकर स्कन्ध की ओर जावें अथवा बाहर के ग्रीवा-मूल की ओर आवें। दोनों ही ठीक हैं। (चित्र २६)

नोट—पट्टी के सिरे को ग्रीवा के एक पार्श्व पर स्कन्ध के



२६. कक्षा बन्धन



२७. दोनों कक्षाओं का स्वस्तिक बन्धन

निकट भी रक्खा जा सकता है और पट्टी को आगे की ओर खोला जा सकता है।

卐 卐 卐

(२६) दोनों कक्षाओं का स्वस्तिक बन्धन—(Figure of Eight of both Axillæ)

चौड़ाई—दो इञ्च।

क्षेत्र—दोनों कक्षा, ग्रीवा का निम्न भाग।

प्रयोजन—कक्षाओं में की परिष्कार को आवृत करता है। अक्षक या प्रगंडास्थि के शिर के भग्न में कक्षा में रक्खी हुई गद्दी को स्थिर रखता है।

विधि—(१) पट्टी को ग्रीवा के बायें पार्श्व से कन्धे के निकट से शुरू करो। बायें कन्धे के सामने वा उसी ओर की कक्षा में से पीछे को निकाल आरम्भिक स्थान पर पहुँच जाओ, पट्टी स्थिर हो जावेगी।

(२) बेलन को छाती के सामने से दाईं कक्षा की ओर ले आओ—कक्षा के तले से पीछे को निकाल दायें स्कन्ध के ऊपर ले आओ और वहाँ से पट्टी को खोलते हुए छाती के सामने से बाईं कक्षा पर पहुँच जाओ।

(३) बाईं कक्षा के तले से निकाल कर पीछे पृष्ठ पर से होते हुए दायें कन्धे पर पहुँच जाओ। (चित्र २७)

पट्टी को कन्धे के सामने वा कक्षा के तले से पीछे को

निकाल पीठ पर से खोलते हुए पुनः बायें कन्धे (आरम्भिक स्थान) पर पहुँच जाओ।

ऐसे दो या तीन लपेट दो।

× × ×

(२७) कक्षा वा ग्रीवा का स्वस्तिक बन्धन—(Figure of Eight of Neck and Axilla)—

चौड़ाई—दो इंच

क्षेत्र—ग्रीवा का घेरा, कक्षा वा स्कन्ध का ऊपर का भाग।

प्रयोजन—कक्षा के परिष्कार को स्थिर करता है। ग्रीवा के एक पार्श्व पर नीचे की ओर बड़ा व्रण हो तथा वर्तुल-ग्रीवा वन्धन से काम न चले तो इसको काम में लाया जाता है।

विधि—(१) कक्षा के स्वस्तिक बन्धन संख्या २५ के अनुसार पट्टी को आरम्भ करो और दूसरी ओर की कक्षा के तले से ले जाने के ग्रीवा मूल पर एक लपेट दे कर आरम्भिक स्थान पर आ जाओ। (२) कक्षा पर लपेट दे कर पुनः ग्रीवा-मूल पर ले जाओ। इसी भाँति आवश्यकतानुसार लपेट दो। अन्तिम सिरे को कन्धे पर पिन द्वारा संयुक्त कर दो।

(२८) दूसरी विधि—

विधि—(१) पट्टी को ग्रीवा के आगे से आरम्भ करो। ग्रीवा पर एक लपेट दे कर स्वतन्त्र सिरे को थाम दो। दूसरा



२८. कक्षा वा ग्रीवा का स्वस्तिक बन्धन



२९. कक्षा वा ग्रीवा का विषम वर्तुल बन्धन

लपेट तत्सदृश पर तनिक नीचे हटा कर लगाओ। तीसरा लपेट आरम्भ करो। (२) अस्वस्थ भाग पर पहुँच कर पट्टी को स्कन्ध पर से कक्षा के तले से निकाल पीछे से ऊपर की ओर अंस पर खोलते हुये पुनः ग्रीवा के अग्र भाग पर पहुँच जाओ। (३) ग्रीवा पर लपेट दे दो। ऐसे कई एक लपेट ऊपर या नीचे सरकते हुये दिये जा सकते हैं। (चित्र २८)

(२६) कक्षा वा ग्रीवा का विषम वर्तुल बन्धन (Oblique Circular of Neck and Axilla)—

चौड़ाई—दो इंच

क्षेत्र—कक्षा का मध्यवर्ति भाग।

प्रयोजन—अपने क्षेत्र में परिष्कार को स्थिर रखता है।

विधि—पट्टी को कक्षा में से शुरू करो। पीछे से पट्टी को निकाल पीठ पर से दूसरी ओर के कन्धे के ऊपर ले जाओ और वहाँ से तिरछी छाती के ऊपर से आरम्भिक स्थान पर पहुंच जाओ। पट्टी स्थिर हो जावेगी। अन्य लपेट पट्टी को दृढ़ कर देंगे। इनको क्रमशः ऊपर को या नीचे की ओर बढ़ाया जा सकता है, परन्तु इनको अधिक दूरी तक नहीं बढ़ाना चाहिये अन्यथा वह च्युत हो कर कक्ष के नीचे आ जावेंगे। (चत्र २६)

(३०) ग्रीवा वा वक्ष का प्राक्तन स्वस्तिक बंधन (Anterior Figure of Eight of Neck and Chest)--

चौड़ाई—अढ़ाई इञ्च।

क्षेत्र—ग्रीवा, वक्ष का सामने का भाग, कक्षाओं के नीचे वक्ष की परिधि।

प्रयोजन—(१) वक्ष के सामने के भाग की परिष्कार को स्थिर करता है। छाती के प्राक्तन स्वस्तिक बन्धन संख्या ४८ की अपेक्षा इसमें यह विशेषता है कि इसमें दोनों बाहु स्वतन्त्र रहते हैं।

विधि—(१) ग्रीवा के सामने से पट्टी को शुरू करो और ग्रीवा पर एक लपेट दो। मान लो कि लपेट ग्रीवा के सामने दाहिनी ओर से बाईं ओर को दिया गया है। पट्टी को स्थिर करो। (२) पट्टी को अब तिरछी छाती पर से, बायें बाहु के नीचे से पीछे को निकाल लो और पीछे से दायें बाहु के नीचे से होते हुये आगे को निकाल लो। (३) पुनः दोनों बाहुओं के नीचे से वक्ष के घेरे पर एक पूरा लपेट दो। (४) जब दायें बाहु के नीचे से निकल कर पट्टी छाती के आगे पहुँचे तो इसको तिरछी ऊपर को बायें स्कन्ध पर ले जाओ और ग्रीवा पर पीछे से चक्कर देकर आरम्भिक स्थान पर पहुँच जाओ।

ऐसे कई एक लपेट दो ताकि सर्व स्थान भली प्रकार से आवृत्त किया जा सके। (चित्र ३०)



३०. ग्रीवा वा वक्ष का प्राक्तन स्वस्तिक बन्धन



३१. ग्रीवा का सुपाशा बन्धन

(३१) ग्रीवा वा वक्ष का पाश्चात्य स्वस्तिक बन्धन (Posterior Figure of Eight of Neck and Chest)

चौड़ाई—अढ़ाई इञ्च।

क्षेत्र—ग्रीवा, वक्ष के पीछे का भाग, कक्षाओं के नीचे वक्ष पर की परिधि।

प्रयोजन—वक्ष के पश्चात् भाग (पीठ की ओर का) पर परिष्कार को स्थिर रखता है।

विधि—यह ग्रीवा वा वक्ष के प्राक्तन स्वस्तिक बन्धन नं० ३० की भाँति ही बाँधा जाता है। भेद केवल इतना ही है कि यह कृकाटिका (ग्रीवा के पीछे का भाग) से आरम्भ किया जाता है और अपना पथ पीछे की ओर से पूरा करता है।

× × × ×

(३२) ग्रीवा का सुपाशा बन्धन (Spica of Neck)—

चौड़ाई—अढ़ाई इञ्च।

क्षेत्र—स्कन्ध, ग्रीवा का अस्वस्थ पार्श्व, ग्रीवा का घेरा, दोनों कानों का अग्र वा पश्चात् स्थान, चिबुक, ब्रह्मरन्ध्र, तथा ललाट बन्धन का क्षेत्र।

प्रयोजन—स्कन्ध के उपरले भाग से ले कर ऊपर शिर तक के स्थान की परिष्कार को स्थिर करता है।

विधि—इस को तीन भागों में बाँटा जा सकता है—

(क) दायें कन्धे के ऊपर से पट्टी को शुरू करो और आगे से पीछे को दाईं कक्षा में से निकाल कर ग्रीवा पर एक

स्वस्तिक लपेट दो। इसी के साथ साथ दो तीन और स्वस्तिक लपेट दो, ये लपेट क्रमशः ऊपर को बढ़ते जावेंगे।

(ख) बेलन दायें कन्धे पर होगा। पट्टी को ग्रीवा पर आगे से पूरा लपेट देते हुए अधोहनु के नीचे से वा बायें कान के पिछाड़ी से शिर के ऊपर पहुँच जाओ और दायें कान के आगे से नीचे को ले आओ तथा पुनः ग्रीवा पर घुमा कर अपने पूर्ववत् मार्ग पर अर्थात् हनु के नीचे से शिर की परिधि पर एक और लपेट को पूरा करो। इस बार पट्टी का पथ बायें कान के अगाड़ी और दायें कान के पिछाड़ी से होगा।

(ग) पट्टी को हनु के नीचे से हनु वा ग्रीवा के मध्यवर्ति कोण में से गुज़ार कर बाईं ओर से पश्चात् उभार पर ले जाओ और ललाट पर एक चक्कर दे कर ललाट बन्धन के एक लपेट को पूरा करो। सिरे को पिन द्वारा संयुक्त कर दो।

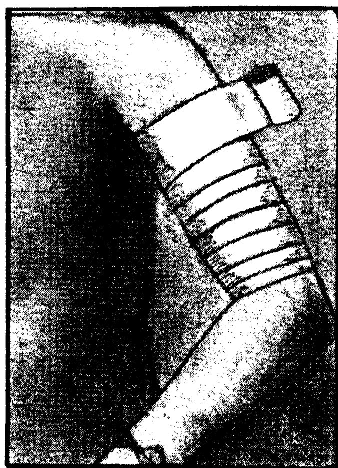
ललाट पर का लपेट शिर पर के दिये हुए लपेटों को स्थिर रखेगा। इस के अतिरिक्त उचित स्थानों पर पिन लगा देने चाहिये ताकि बन्धन ऊपर नीचे हटने न पावे (चित्र ३१)।

ग्रीवा के वाम भाग को आवृत करने के लिए पट्टी को बायें स्कन्ध से आरम्भ करो और बाईं ओर ही जा कर समाप्त करो।



३२ स्कन्ध बन्धन



३३. प्रगंड का अनुवेल्लित बन्धन

ऊर्ध्व शाखा के बन्धन

(३३) स्कन्ध बन्धन—(Shoulder Bandage)

चौड़ाई—दो इञ्च ।

क्षेत्र—बाहु का उपरला भाग, कन्धे वा बाह्य वा पार्श्विक भाग तथा दूसरी ओर की कक्षा ।

प्रयोजन—स्थानीय परिष्कार को स्थिर रखता है ।

विधि—(१) पट्टी के सिरे को बाहु पर अंसाच्छादनी पेशी के अन्तर्निवेश के स्थान के ऊपर रक्खो और बेलन को दूसरे हाथ से पकड़ लो । बाईं बाहु पर पीछे से चक्कर दे कर पट्टी को कक्षा की ओर से आगे निकाल लो और स्वतन्त्र सिरे के ऊपर से ले जा कर पट्टी को बाहु के पीछे पकड़ लो । (२) वहां से पृष्ठ की ओर घुमाकर दूसरे स्वस्थ कन्धे की कक्षा में से निकाल लो और अस्वस्थ कन्धे की बाहु पर ले जाओ । यहां पर बन्धन का एक लपेट समाप्त होता है । (३) दूसरा लपेट पहले लपेट के साथ साथ उस के उपरले किनारे को दबाता हुआ दो, कक्षा के नीचे पट्टी पर झोल नहीं पड़ने चाहिये । इसी प्रकार इतने लपेट दो कि जिस से अंस वा ग्रीवा के मूल का सर्व स्थान आवृत हो जावे । स्वस्थ कक्षा में बाद का प्रत्येक लपेट अपने पहले लपेट को आवृत करता हुआ गुज़रता है, परन्तु कक्षा के बाहर वक्ष पर थोड़ा बहुत ऊपर को सरकता जाता है । इसी प्रकार बाहु या स्कन्ध पर के लपेट भी शनैः शनैः ऊपर को बढ़ते जाते हैं ।

नोट—कई शस्त्र वैद्य शुरु में बाहु पर दो तीन साधारण कुंडलाकृति लपेट दे लिया करते हैं और जब कक्षा तक पहुँच जाते हैं तो स्कन्ध वा दूसरी कक्षा वाले स्वस्तिक लपेट दे कर पट्टी को समाप्त करते हैं । इस बन्धन को स्कन्ध का ऊर्ध्वगा सुपाशा बन्धन (Ascending Spica of Shoulder) भी कहा जाता है (चित्र ३२) ।

(३४) स्कन्ध का अधोगा सुपाशा (Descending Spica of Shoulder)—

चौड़ाई—दो इञ्च ।

क्षेत्र—ऊर्ध्वगा सुपाशा का ।

विधि—बाहु के मध्य से कुंडलाकृति लपेट देते हुए कक्षा तक पट्टी को ले जाओ और पहला स्वस्तिक लपेट कन्धे वा वक्ष पर से गुज़रता हुआ, क्षेत्र के सब से ऊपर के भाग पर से जाता हुआ बनाओ । बाद का प्रत्येक स्वस्तिक लपेट इस से तनिक नीचे को हटता जावेगा ।

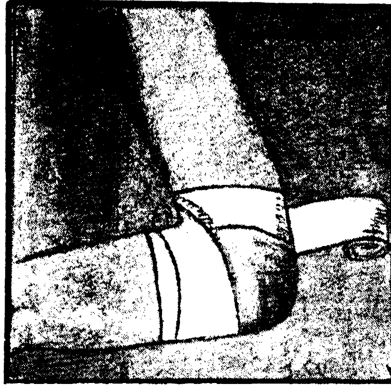
  

(३५) प्रगंड का कुंडली बन्धन (Spiral Bandage of the Arm)—

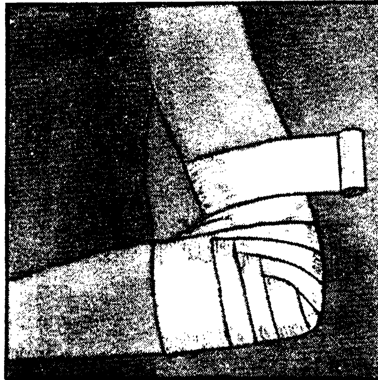
चौड़ाई—दो इञ्च ।

क्षेत्र—कूपरे से स्कन्ध तक का स्थान ।

प्रयोजन—(क) उक्त क्षेत्र पर के व्रण के परिष्कार को



३४. कूर्पर का एककेन्द्रिक स्वस्तिक बन्धन



३५. कूर्पर का प्रतिकेन्द्रिक स्वस्तिक बन्धन

स्थिर रखता है (ख) प्रगंडास्थि के भग्न में स्पलिन्टों को बांधता है और उन को निश्चेष्ट रखता है।

विधि—कोहनी के ऊपर एक साधारण गोल लपेट दे कर पट्टी को स्थिर करो, और कुंडलाकृति लपेट देते हुए स्कन्ध के निम्न भाग पर पहुँच जाओ। ऊपर का प्रत्येक लपेट बारी बारी अपने नीचे वाले लपेट के ऊपर की दो तिहाई चौड़ाई को आवृत करता हुआ जावेगा। (चित्र ३३)।

(३६) कूर्पर का एककेन्द्रिक स्वस्तिक बंधन (Concentric Figure of Eight of Elbow)—

चौड़ाई—दो इञ्च।

क्षेत्र—कूर्पर (कोहनी)

प्रयोजन—(क) परिष्कार को स्थिर रखता है। (ख) दबाव डालता है।

नियम—बन्धन बाँधने से पूर्व बाहु को थोड़ा या समकोन पर मोड़ लेना चाहिये।

विधि—(१) अग्रबाहु के ऊपर के भाग पर साधारण लपेट दे कर पट्टी को स्थिर करो और सन्धि के प्राक्तन पृष्ठ (अन्दर की सतह) पर से ऊपर की ओर तिरछी ले जाकर कोहनी के ऊपर बाहु पर एक गोल लपेट दो। (२) बन्धन को पुनः प्राक्तन पृष्ठ से नीचे की ओर लाओ और अग्रबाहु पर के लपेट के ऊपर के दोतिहाई भाग को आवृत

करते हुए एक लपेट दो। ऐसे कई एक लपेट दो जो कि क्रमशः कूर्पर की नोक के निकट आते जावें। (चित्र ३४)

卐 卐 卐

(३७) कूर्पर का प्रतिकेन्द्रिक स्वस्तिक-बंधन
(Eccentric Figure of Eight of Elbow)—

चौड़ाई—दो इञ्च।

क्षेत्र—कूर्पर सन्धि।

प्रयोजन—(क) परिष्कार को स्थिर रखता है। (ख) दबाव डालता है।

नियम—यह तब बांधा जा सकता है जब कि अग्र-बाहु थोड़ा या समकोण पर मुड़ा हुआ हो।

विधि—(१) कूर्परकूट (olecranon) से गुज़रते हुये कोहनी पर दो लपेट देकर पट्टी को स्थिर करो। (२) तीसरा लपेट जब कूर्परकूट तक पहुँचे तो इसको दूसरे लपेट से तनिक नीचे से ले जाओ, परन्तु सामने की ओर पट्टी अपने पूर्व लपेट को आवृत करती हुई जावेगी। (३) चौथा लपेट दूसरे लपेट से तनिक ऊपर दो, परन्तु कोहनी के सामने की ओर पट्टी अपने पूर्व लपेट को आवृत करती हुई जावेगी।

ऐसे कई एक लपेट दो ताकि कोहनी भली प्रकार से आवृत हो जावे। ये सब लपेट बारी बारी कूर्परकूट से परे ही परे होते जावेंगे (चित्र ३५)।

卐 卐 卐

(३८) अग्रबाहु का अनुवेल्लित बंधन (Spiral Reverse of Forearm)

चौड़ाई—दो इंच

क्षेत्र—मणिबन्ध से कूर्पर तक

प्रयोजन—परिष्कार वा स्पलिन्टों को स्थिर रखता है।

विधि—कलाई पर एक लपेट देकर पट्टी को स्थिर करो। कोहनी की ओर कुण्डलाकृति लपेट देने आरम्भ करो। दो या तीन लपेट देने के पश्चात् पट्टी में एक झोल (जो कि अंग की मोटाई पर निर्भर है) उत्पन्न हो जावेगा। अतः प्रत्येक बार जब पट्टी को बाहु के सामने लाओ तो वहां पर 'मोड़' बना दो (चित्र ३६)। अग्रबाहु का ऊपर का भाग प्रायः समान मोटाई का हुआ करता है अतः वहाँ पर 'मोड़' बनाने की कोई आवश्यकता नहीं। ऊपर साधारण गोल लपेट देकर पट्टी को समाप्त करो। 'मोड़' चाहे अंग के बाह्य पृष्ठ पर हों या अन्तरीय पृष्ठ पर, पर सब एक ही रेखा में होने चाहिये।

(३६) अग्र-बाहु का स्वस्तिक बंधन (Figure fo Eight of Forearm)—

चौड़ाई—दो इंच।

क्षेत्र—मणिबन्ध से कूर्पर तक।

प्रयोजन—ड्रैसिंग (परिष्कार) को स्थिर करता है।

विधि—(१) मणिबन्ध पर पट्टी का एक चक्कर देकर बन्धन को स्थिर करो और ऊपर को कुण्डलाकृति लपेट

लगाओ। दो या तीन लपेट लगाने के पश्चात् पट्टी का निचला किनारा तनिक शिथिल वा झोलदार रह जावेगा। यहाँ से स्वस्तिक लपेट देने आरम्भ करो। (२) पट्टी को ठीक ऊपर कोहनी की ओर ले जाओ और इस जोड़ के निम्न भाग पर पूरा लपेट देते हुए नीचे को उतरो और जहाँ पर कुण्डलाकृति लपेट देने बन्द किये थे ठीक वहीं आ जाओ (चित्र ३७ क)। वहाँ पट्टी का पूरा चक्कर देकर पुनः स्वस्तिक लपेट को आरम्भ करो। ऐसे कई एक लपेट दो। पश्चात् का प्रत्येक लपेट अपने पूर्व की डेढ़ इंच चौड़ाई को आवृत करता हुआ जावेगा। कोहनी के पास दो एक साधारण लपेट देकर पट्टी को समाप्त करो (चित्र ३७ ख)।

(४०) **स्वस्तिक वाहु-गोफण बंधन** (The Figure of Eight Arm sling Bandage)—

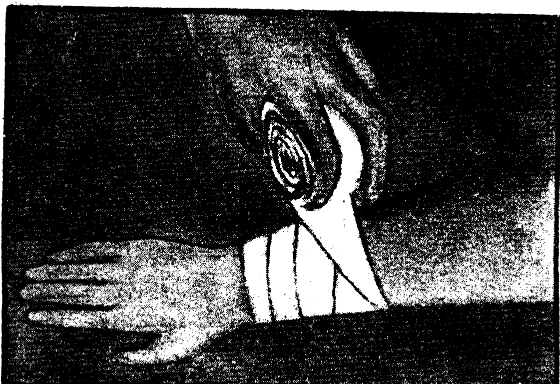
चौड़ाई—दो इञ्च।

क्षेत्र—बाहु वा अग्रबाहु, दूसरी ओर का स्कन्ध और उसके समीपवर्ति कक्षा का तली का स्थान, पृष्ठ।

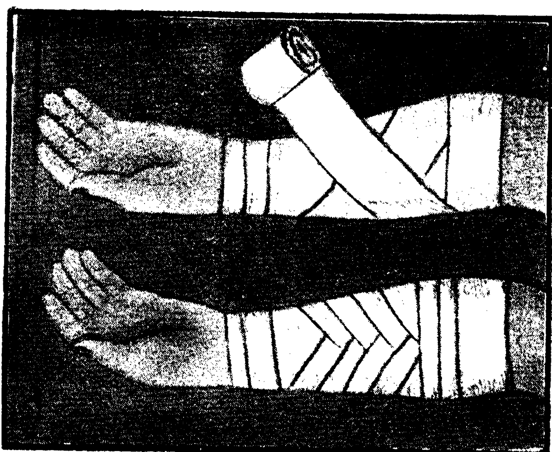
प्रयोजन—रोगी वाहु को हिला नहीं सकता। अतः वाहु या अग्र वाहु के अस्थि-भग्नों या संधि-भग्नों में लाभकारी है।

विधि—प्रगंड वा प्रकोष्ठ को वक्ष पर जैसे रखना चाहते हो, उसी स्थान या अवस्था में कर दो। रोगी या कोई अन्य व्यक्ति इसको सहारे रक्खे।

(१) शरीर के आगे अस्वस्थ से स्वस्थ भाग की ओर



३६. अग्रबाहु का अनुवेल्लित बन्धन



३७. अग्रबाहु का स्वस्तिक बन्धन

पट्टी को लाते हुए एक पूरा लपेट प्रगंड, प्रकोष्ठ तथा वक्ष को कपूर्र के पास दबाता हुआ दो।

(२) दूसरा लपेट उसी के ऊपर से ले जाओ और पीछे पृष्ठ की ओर से लाकर कोहनी के निकट नीचे से आगे को लाओ और सीधे ही वक्ष के आगे से दूसरे कन्धे पर लेजाओ जैसा कि चित्र से स्पष्ट है। इसके लगाने से पूर्व बाहु की उँचाई को स्थिर कर लो। तीसरा लपेट पहले लपेट के साथ उसकी ऊपर की दो तिहाई चौड़ाई को आवृत करता हुआ दो और चौथा लपेट दूसरे के साथ साथ तनिक हाथ की ओर हटता हुआ हो। इसी प्रकार बारी बारी लपेट बनाते जाओ। (चित्र ३८)

(४१) हस्त-अनुवेल्लित बंधन—(Spiral Reverse of Hand)

चौड़ाई—डेढ़ इञ्च।

क्षेत्र—कलाई, करपृष्ठ, अङ्गुष्ठ के आधार पर के थोड़े से स्थान को छोड़ कर शेष हस्ततल।

प्रयोजन—(क) कर-पृष्ठ या हस्ततल की परिष्कार को स्थिर रखता है। (ख) स्प्लिन्टों को बाँधता है।

विधि—कलाई पर एक साधारण लपेट देकर पट्टी को स्थिर करो। कर-पृष्ठ पर से पट्टी को खोलते हुए प्रथम पार्वों के मध्य तक ले जाओ और यदि आवश्यकता हो तो अंगुलियों

के अग्र भाग तक ले जाओ। चारों अंगुलियों पर एक साथ गोल लपेट देकर हस्त के केन्द्र की ओर कुण्डलाकृति लपेट देने आरम्भ करो। हाथ के पहुँचते ही पट्टी में 'मोड़' बनाने शुरू करो अर्थात् प्रत्येक बार जब पट्टी कर-पृष्ठ पर आवे इस को उलटा दो, ताकि बन्धन भली प्रकार से बैठ जावे। इस पट्टी में अंगुष्ठ को सम्मिलित नहीं करना चाहिये। यदि इसको भी आवृत करना आवश्यक हो तो इस पर पृथक लपेट लगाने चाहिये।

(४२) हाथ का स्वस्तिक बन्धन—(Figure of Eight of Hand)

चौड़ाई—डेढ़ इञ्च।

क्षेत्र—कलाई, कर पृष्ठ, अंगुष्ठ के आधार पर थोड़े से स्थान को छोड़ कर शेष करतल।

प्रयोजन—(क) परिष्कार को स्थिर करता है। (ख) भग्न में स्पलिन्टों को बाँधता है।

विधि—(१) कलाई पर एक साधारण चक्कर देकर बन्धन को स्थिर करो और पट्टी को करपृष्ठ पर से तिरछी गुज़ार कर प्रथम पोवों के मध्य में ले जाओ। यदि अंगुलियों को भी सम्मिलित करना हो तो अंगुलियों के अन्त तक पट्टी को ले जाओ। (२) अंगुलियों पर कुण्डलाकृति लपेट देते हुए हाथ के केन्द्र की ओर आ जाओ। (३) जब हाथ के



३८. स्वस्तिक बाहु गोफण बन्धन



३९. हाथ का स्वस्तिक बन्धन

निकट पहुँचो तो पट्टी को करपृष्ठ पर से तिरछी गुज़ार कर ठीक ऊपर मणिबन्ध (कलाई) पर ले जाओ और वहां एक चक्राकार लपेट दो। (चित्र ३६)

पट्टी को पुनः करपृष्ठ पर के स्वस्तिक लपेट के साथ साथ नीचे को लाओ, ताकि पृष्ठ पर का अनावृत भाग भी आवृत किया जा सके। इसी प्रकार कई एक लपेट लगाओ। अंगुष्ठ को हस्त-बन्धन में सम्मिलित नहीं करना चाहिये, इसके लिये पृथक लपेट लगाने चाहिये।

卐 卐 卐

(४३) हस्त वा बाहु का मिश्रित बन्धन—

चौड़ाई—दो इंच।

क्षेत्र—हाथ, मणिबन्ध, अग्रबाहु, कूर्पर, बाहु।

प्रयोजन—उस क्षेत्र पर के बड़े बड़े व्रणों के परिष्कार को स्थिर रखता है।

विधि—सर्वप्रथम एक स्वस्तिक लपेट मणिबन्ध तथा हस्ततल पर अँगुलियों के पास से गुज़रता हुआ दो। तत्पश्चात् कई लपेट दो जो कि क्रमशः अँगुलियों से परे हटते जावें। इनमें पट्टी करपृष्ठ के ऊपर से होकर कलाई के नीचे से होती हुई वा उस पर चक्र पूरा कर अंगुष्ठ के मूल पर पहुंचेगी और हाथ की पृष्ट पर से होती हुई कनिष्ठा के मूल के पास से घूम कर चक्र को पूरा करेगी। जब इन लपेटों से करपृष्ट तथा कलाई आवृत हो जावे तो अग्रबाहु पर कुण्डली

बन्धन बाँधते हुए कोहनी के निकट पहुँच जाओ। यहाँ बन्धन समाप्त हो गया।

यदि कूर्पर तथा प्रगंड को भी सम्मिलित करना हो तो रोगी से कहो कि अपने बाहु को समकोण पर मोड़ ले। मुड़ी हुई कोहनी पर स्वस्तिक लपेट देकर बाहु पर अनुवेष्ठित बन्धन के सदृश पट्टी को बाँधते हुए ऊपर जाकर समाप्त करो और सेफ़्टी पिन द्वारा सिरे को स्थिर कर दो।

卐 卐 卐

(४४) अंगुष्ठ बन्धन (अंगुष्ठ का सुपाशा बन्धन) (Spica of the Thumb)

चौड़ाई—एक इञ्च।

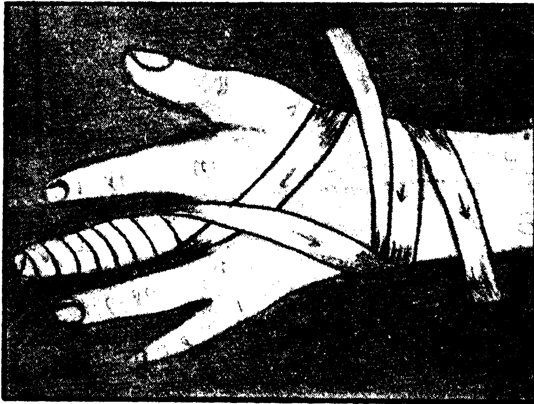
क्षेत्र—अंगुष्ठ, मणिबन्ध।

प्रयोजन—(क) अंगुष्ठ की गति को रोकता है। (ख) परिष्कार को स्थिर रखता है।

विधि—(१) मणिबन्ध पर कुंडलाकृति एक दो लपेट दो। पट्टी स्थिर हो जावेगी। बेलन सदा कलाई के बाह्य पृष्ठ पर बहिर्मणिक से अन्तर्मणिक की ओर आना चाहिये। (२) दो एक लपेट देने के पश्चात् पट्टी को बहिर्मणिक से अंगुष्ठ की ओर और इसके पृष्ट पर से प्रथम पोर्वे के निम्न-भाग पर ले आओ। वहां एक लपेट दे दो। (३) पश्चात् हाथ की पृष्ठ पर से मणिबन्ध के अन्तरीय भाग पर पहुँच जाओ। नीचे आते समय पट्टी को (अंगुष्ठ मूल पर) अपने ही ऊपर से



४०. अंगुष्ठ का सुपाशा बन्धन



४१. अंगुलि बन्धन

गुज़रना पड़ेगा। मणिबन्ध के अन्तरीय पृष्ठ से पुनः अंगुष्ठ पर लाकर प्रथम लपेट के साथ साथ उसके नीचे के किनारे को दबाता हुआ एक और लपेट दो। इसी प्रकार अन्य लपेट दिये जा सकते हैं।

ये लपेट क्रमशः अंगुष्ठ के अग्रभाग से दूर और मणिबन्ध के निकट होते जावेंगे। जब सर्व स्थान भली प्रकार से आवृत हो जावे तो कलाई पर एक दो साधारण लपेट देकर पट्टी को समाप्त कर दो। (चित्र ४०)

अंगुलीय बन्धन
(Finger Bandages)

(४५) अंगुली का कुंडली बन्धन या कोष बन्धन—
(Spiral of Finger)

"तत्र कोशमंगूष्ठाङ्गुलिपर्वसु विदध्यात्"

सुश्रुत—सूत्रस्थान अ० १८

चौड़ाई—एक इञ्च।

क्षेत्र—कोई अँगुली।

प्रयोजन—(क) परिष्कार को स्थिर करता है। (ख) स्थानीय संधियों की गति को रोकता है।

विधि—यद्यपि कुंडली बन्धन से अंगुली भली प्रकार से आवृत की जा सकती हैं, तथापि यह बन्धन उतना दृढ़ नहीं होता जितना कि अँगुली का स्वस्तिक बन्धन।

(१) कलाई पर एक दो लपेट दो और पट्टी को स्थिर कर दो। पट्टी के आरम्भिक सिरे को खुला भी छोड़ा जा सकता है ताकि उसका दूसरा सिरा इसके साथ ग्रन्थि द्वारा बाँधा जा सके। (२) पट्टी को करपृष्ठ पर अंगुष्ठ मूल से अँगुलीय-मूल की ओर लाओ और अँगुली पर एक दो खुले २ साधारण लपेट देकर अन्तिम पोर्वे के अग्रभाग पर पहुँच जाओ। (३) अंगुली को आवृत करना शुरू करो।

कई चिकित्सक अंगुली के अन्तिम पोर्वे पर ही एक दो लपेट देकर पट्टी को स्थिर करके उसको आवृत करना शुरू कर देते हैं। पर इस तरह के बन्धन के उतर जाने की अधिक सम्भावना होती है।

नियमानुसार कुँडलाकृति लपेट देते हुए नीचे की ओर मूल तक पहुँच जाओ। यदि प्रत्येक कुंडली लपेट में अंगुली के वाह्य पृष्ठ पर मोड़ बना दिया जावे, तो और भी अच्छा होगा। इससे बन्धन अधिक दृढ़ हो जावेगा।

(४) अन्तिम लपेट को पीछे कर-पृष्ठ पर तिरछा ले जाओ। अब बेलन पृष्ठ पर की पट्टी को नीचे दबाता हुआ जावेगा। कलाई पर एक आध लपेट देकर दोनों सिरों को आपस में बाँध दो। यदि पहला सिरा खुला नहीं छोड़ा गया तो इसको पिन द्वारा संयुक्त कर दो। (चित्र ४१)

नोट—यदि अंगुली के अग्र-भाग को भी पट्टी से आवृत करना हो तो इसी बन्धन के साथ अंगुली का पुनरावर्तक बन्धन (संख्या ४७) भी सम्मिलित किया जा सकता है।

(४६) अंगुली का स्वस्तिक बन्धन—(Figure of Eight of Finger)

चौड़ाई—एक इञ्च।

क्षेत्र—कोई अंगुली।

प्रयोजन—(१) परिष्कार को स्थिर रखता है। (ख) गति को रोकता है।

विधि—(१) अंगुली के अन्तिम पोर्वे पर एक दो लपेट देकर पट्टी को स्थिर करो। (२) अब इसको तिरछी पृष्ठ पर से द्वितीय पोर्वे के आधार तक ले जाओ तथा यहाँ लपेट देकर पुनः आरम्भिक स्थान पर तिरछी ही ले जाओ—इस तरह एक स्वस्तिक चक्र सम्पूर्ण हो जाता है। (३) इसी प्रकार और भी स्वस्तिक लपेट लगाये जा सकते हैं जो कि बारी बारी अंगुलीय मूल की ओर हटते जाते हैं। लपेट का निचला किनारा तना हुआ रहना चाहिए। यदि उपरला किनारा कुछ शिथिल रह जावे तो कुछ चिन्ता की बात नहीं, कारण कि यह अगले स्वस्तिक लपेट के नीचे दब जाया करता है। (४) अंगुलीय मूल पर पहुँच कर एक साधारण लपेट देकर पट्टी को समाप्त कर दो, अथवा इसको करपृष्ठ पर से मणिबन्ध तक स्वस्तिक लपेट के रूप में समाप्त कर दो।

नोट—यदि इस के साथ पुनरावर्तक बन्धन (संख्या ४७) सम्मिलित कर दिया जावे तो अंगुली का अग्र-भाग भी आवृत किया जा सकता है।

(४७) अंगुली का पुनरावर्तक बन्धन (The Recurrent of the Finger) **या स्थगिक बन्धन**

"अंगुष्ठांगुलि मेढ्राग्रेषु स्थगिका"

सुश्रुत

चौड़ाई—एक इंच या डेढ़ इंच।

क्षेत्र—अंगुली, अंगुली की नोक, करपृष्ठ का कुच्छ भाग, या कलाई का घेरा। कभी कभी यह बन्धन दो तीन अंगुलियों पर एक साथ ही बाँध दिया जाता है।

प्रयोजन—(क) परिष्कार को स्थिर रखता है। (ख) नख पर के आघातों के लिये उपयोगी है।

विधि—(१) पट्टी को करभास्थि के निकट अंगुलि के आधार से शुरू करो—ठीक नोक पर से लेजाते हुए हस्त-तल की ओर अंगुली के आधार तक पहुँच जाओ और पुनः लौट कर आरम्भिक स्थान तक आ जाओ। लौटते समय पट्टी अपने पूर्व लपेट के एक ओर उसको एक तिहाई चौड़ाई को आवृत करेगी। (२) पुनः लौटा कर हस्ततल की ओर ठीक नोक के ऊपर से ले जाओ—पट्टी पूर्व-लपेट की दो तिहाई चौड़ाई को आवृत करती जावेगी। इन पुनरावर्तक लपेटों को अपने हाथ के सहारे रक्खो। ऐसे दो या तीन लपेट पर्याप्त हैं। (३) अब इनको कुण्डलाकृति लपेटों से या स्वस्तिक लपेटों से स्थिर कर दो। आधार पर पहुँच कर कर-पृष्ठ पर से मणि-बन्ध के घेरे पर दो स्वस्तिक लपेट लगा कर पट्टी को समाप्त कर दो।

वक्ष वा उदर के बन्धन

(४८) **वक्ष का प्राक्तन स्वस्तिक बन्धन** (Anterior Figure of Eight of Chest)—

चौड़ाई—दो या तीन इञ्च।

क्षेत्र—वक्ष के सामने का उपरला भाग तथा दोनों कन्धों पर के घेरे।

प्रयोजन—वक्ष के उपरले भाग के व्रणों की रक्षा करता है और परिष्कार को स्थिर रखता है। यदि इस को ग्रीवा के बन्धन के साथ सम्मिलित कर दिया जावे तो यह ग्रीवा, ग्रीवा का निम्न भाग वा जत्रु को भी आवृत कर सकता है। इस को वक्ष के कुंडली बन्धन के साथ भी मिलाया जा सकता है।

विधि—(१) वक्षोऽस्थि के उपरले सिरे से पट्टी को आरम्भ करो और बेलन को किसी कन्धे के ऊपर ले जाओ। मान लो कि बेलन अब दाहिने कन्धे के ऊपर है। इस को पीछे से दायें बाहु के नीचे से निकाल आरम्भिक स्थान पर ले आओ। पट्टी स्थिर हो जावेगी।

(२) अब इस को बायें कन्धे पर ले जाओ और बायें बाहु के नीचे से आगे को निकाल पुनः आरम्भिक स्थान पर पहुँच जाओ। इस प्रकार बन्धन का एक स्वस्तिक चक्र सम्पूर्ण हो जाता है। ऐसे ही दो तीन लपेट और दिये जा सकते हैं।

स्वस्तिक चिह्नों को क्रमशः ऊपर वा नीचे की ओर बढ़ाया जा सकता है ताकि आवश्यक स्थान घेरा जा सके (चित्र ४२)।

× × × ×

(४९) वक्ष का पाश्चात्य स्वस्तिक बन्धन (Posterior Figure of Eight of Chest)—

चौड़ाई—दो या तीन इञ्च।

क्षेत्र—वक्ष की पिछाड़ी का उपरला भाग, कन्धों के सामने के घेरे।

प्रयोजन—वक्ष के पीछे के परिष्कार को स्थिर रखता है। इस बन्धन को वक्ष के कुंडली बन्धन के साथ भी सम्मिलित किया जा सकता है।

विधि—(१) रोगी के पीछे खड़े हो जाओ। कृकाटिका के निचले भाग पर से पट्टी को आरम्भ कर के दायें कन्धे के ऊपर ले जाओ और दायें बाहु के नीचे से निकाल स्वतन्त्र सिरे को स्थिर करते हुए (२) बायें कन्धे की ओर ले जाओ। कन्धे के ऊपर से पट्टी को खोलते हुए बायें बाहु के तले से निकाल पृष्ठ पर से ठीक बायें कन्धे पर पहुँच जाओ। ऐसे दो या तीन स्वस्तिक चक्र ऊपर या नीचे की ओर हटते हुए दिये जा सकते हैं ताकि आवश्यक स्थान आवृत किया जा सके (चित्र ४३)।



४२ वक्ष का प्राक्तन स्वस्तिक बन्धन



४३ वक्ष का पाश्चात्य स्वस्तिक बन्धन

(५०) वक्ष का अधोगामी कुंडली बन्धन (Descending Spiral)—

चौड़ाई—तीन या चार इञ्च।

क्षेत्र—बाहुओं के नीचे से निकलने वाली समस्थ-रेखा के निम्न का वक्षस्थल का भाग।

प्रयोजन—उक्त क्षेत्र में के परिष्कार को स्थिर करता है। यदि बन्धन को ऊपर की ओर बढ़ाना हो तो इस को वक्ष के प्राक्तन या पाश्चात्य स्वस्तिक बन्धन के साथ सम्मिलित किया जा सकता है और यदि नीचे को बढ़ाना हो तो इस के साथ उदर का अधोगामी कुंडली बन्धन संख्या ५५ मिलाया जा सकता है।

विधि—(१) पट्टी को वक्षोऽस्थि के मध्य से शुरु करो, और दोनों बाहुओं के नीचे से वक्ष की परिधि को पूरा करते हुए आरम्भिक स्थान पर पहुँच जाओ, पट्टी स्थिर हो जावेगी। (२) दूसरा लपेट इसी के ऊपर से दो। तीसरे का रूझान दूसरे से कोई एक इञ्च नीचे की ओर रख वक्ष पर एक सम्पूर्ण लपेट दो। चौथा तीसरे के समान्तर और पाँचवां चौथे के समान्तर बनाओ·········। जब वक्षस्थल भली प्रकार से नीचे तक आवृत हो जावे तो एक दो साधारण गोल लपेट दे कर पट्टी को समाप्त कर दो। इस में पट्टी के नीचे की ओर च्युत हो जाने की अधिक सम्भावना होती है। अतः कन्धों के ऊपर से दो धज्जियों को आगे वा पीछे लपेटों के

साथ पिनों द्वारा या टांकों द्वारा संयुक्त कर देना चाहिये जैसा कि बहु-पुच्छ बन्धन में दर्शाया गया है।



(५१) वक्ष का उद्धगामी कुंडली बन्धन (Ascending Spiral)—

विधि—इस के बांधने की विधि भी वही है जो कि ऊपर अधोगामी कुंडली बन्धन संख्या ५० में बताई गई है। भेद केवल इतना ही है कि पट्टी नाभि पर से आरम्भ की जाती है और ऊपर की ओर लपेटी जाती है।



(५२) स्तन बन्धन (स्तन का सुपाशा बंधन)—(Spica of One Breast)—

चौड़ाई—तीन इञ्च।

क्षेत्र—वक्ष के निम्न भाग की परिधि, एक स्तन (अस्वस्थ स्तन), उसी ओर के स्कन्ध की पिछाड़ी, और अभिमुख स्कन्ध की शिखर।

प्रयोजन—(क) परिष्कार को स्थिर करता है (ख) स्तन को आश्रय देता है अर्थात् उस को उठाये रखता है, जिस के कारण व्रण में वेदना कम होती है (ग) स्तन पर दबाव भी डालता है।

विधि—(१) जिस स्तन पर बन्धन बांधना हो उस के निकट पार्श्व पर सिरे को रक्खो। अस्वस्थ से स्वस्थ स्तन



४४—एक स्तन का सुपाशा (अपूर्ण)



४५—एक स्तन का सुपाशा (पूर्ण)

की ओर वक्षोऽस्थि के निम्न भाग के समतल पर दो एक साधारण लपेट दो ताकि पट्टी भली प्रकार से स्थिर की जा सके। (२) अब पट्टी को अस्वस्थ स्तन के निचले किनारे को तनिक दबाते हुए दूसरी ओर के कन्धे पर ले जाओ और पृष्ठ पर से नीचे को वा आगे स्तन की ओर लाओ। (३) कटि देश पर पूर्व लपेट के समान्तर उस के ऊपर के दो तिहाई भाग को आवृत करता हुआ एक लपेट दो (४) और पश्चात् अभिमुख स्कन्ध पर के लपेट को पूरा करो। यह लपेट भी अपने अग्रगामी की उपरली दो तिहाई चौड़ाई को आवृत करता हुआ आवेगा। इस प्रकार लपेटों की रेखाओं में एक इञ्च का अन्तर रहेगा। स्कन्ध के शिखर का क्षेत्र संकीर्ण होने के कारण, वहां पर यह अन्तर आध या चौथाई इञ्च से बढ़ना न चाहिये (चित्र ४४ वा ४५)।

ऐसे कई एक लपेट दो ताकि स्तन भली प्रकार से आवृत किया जा सके।

यदि उचित हो तो स्तन-वृन्त को लपेटों के बीच में खुला ही छोड़ दो या बन्धन में कैंची द्वारा एक गोल छिद्र कर दो ताकि वह बाहर निकला रहे और पट्टी के भार या दबाव से बच जावे।

卐 卐 卐

(५३) दोनों स्तनों पर बंधन—(Bandage of Both Breasts)।

चौड़ाई—तीन इञ्च।

क्षेत्र—वक्ष के निम्न भाग की परिधि, दोनों स्तन, पृष्ठ, दोनों कन्धों के शिखर।

प्रयोजन—(क) स्तनों को आश्रय देता है (ख) उन पर दबाव डालता है (ग) परिष्कार को स्थिर रखता है।

विधि—इकले स्तन के बन्धन में पट्टी स्तन के निम्न भाग से अभिमुख अर्थात् सामने वाले कन्धे पर जाती है। अतः स्तन पर दबाव या खिंचाव नीचे से ऊपर को पड़ता है और स्तन ऊपर को उठा रहता है। एक ही पट्टी द्वारा दोनों स्तनों के बांधने में एक स्तन पर पट्टी ऊपर लिखित नियम के प्रतिकूल रहेगी अर्थात् स्तन से स्कन्ध की ओर जाने के स्थान पर स्कन्ध से स्तन की ओर उतरेगी। अतः पट्टी का यह भाग यदि कम अस्वस्थ स्तन की ओर रहे तो कोई हानि नहीं।

मान लो कि स्त्री का बायां स्तन अधिक अस्वस्थ है (क) पट्टी को वक्षोस्थि के निम्नांश से शुरु करो और वक्ष के दायें पार्श्व से घुमा, पृष्ठ वा बायें पार्श्व से आरम्भिक स्थान पर पहुँच जाओ। पट्टी स्थिर हो जावेगी (२) दूसरा लपेट प्रथम लपेट के ही ऊपर लगाओ और वक्ष के वाम भाग पर पहुँच जाओ। (३) अब स्तन के निचले किनारे को आवृत करते हुए दायें कन्धे के ऊपर तथा बायें कन्धे की पृष्ठ पर पट्टी को खोलते हुए बायें बाहु के तले २ आरम्भिक स्थान पर पहुंच जाओ। (४) पुनः बेलन को दायें पार्श्व की ओर ले जाओ और



४६ दोनों स्तनों का सुपाशा (अपूर्ण)



४७ दोनों स्तनों का सुपाशा (पूर्ण)

पीठ पर से बायें कन्धे के ऊपर से आगे को निकाल कर पट्टी को छाती पर खोलते हुए नीचे की ओर दायें स्तन के निचले किनारे को आवृत करते हुए पहुँच जाओ। स्तन को तनिक ऊपर उठा दो अन्यथा पट्टी की निम्न-गति से यह नीचे को खिच जावेगा और स्त्री को कष्ट देगा।

(५) पट्टी को दायें पार्श्व की ओर ले जाओ और पृष्ठ पर से बायें पार्श्व की ओर आगे को निकाल लो। (६) वहाँ से पूर्व लपेट से एक इंच ऊपर बायें स्तन के ऊपर से वा दायें कन्धे की शिखर पर से पृष्ठ पर होते हुए वाम पार्श्व से आगे को निकाल लो। और वक्षोऽस्थि पर वक्ष की परिधि को घेरते हुए जब पुनः पृष्ठ पर पहुँचो तो बेलन को तिरछा ऊपर ले जाओ और बायें कन्धे के ऊपर से निकाल दायें स्तन पर ले जाओ। यह लपेट पहले लपेट से एक इंच ऊपर रहना चाहिये (चित्र ४६)

ऐसे तीन लपेट पूरे करो।

कुंडलाकृति चार लपेट जो कि वक्षोस्थि के निम्न-भाग के समतल पर रहते हैं इस प्रकार से हैं—

प्रथम लपेट—बायें स्तन के नीचे वा दायें स्तन के ऊपर।

द्वितीय लपेट—बायें स्तन के ऊपर वा दायें स्तन के नीचे।

तृतीय लपेट—प्रथम लपेट के पीछे पीछे, पर दोनों स्तन वृन्तों के अधिक निकट।

चतुर्थ लपेट—द्वितीय लपेट के पीछे पीछे, पर दोनों स्तन वृन्तों के अधिक निकट। (चित्र ४७)

(५४) छिन्न स्तन पर बन्धन (Bandage for Dressing after removal of Breast)—

चौड़ाई--तीन इञ्च।

क्षेत्र—नाभि से वक्षोऽस्थि के ऊर्ध्व भाग पर्यन्त वक्ष की परिधि, छिन्न स्तन का समीपवर्ति स्कन्ध वा कक्षा।

प्रयोजन—बन्धन के नाम से ही स्पष्ट है।

विधि—स्त्री को आराम से लेटने दो या बिठला कर उस के पीछे शय्या-चौकी (Bedrest) रख दो।

छिन्न स्तन की ओर के बाहु को पकड़ कर पार्श्व के समकोन पर कर दो—पकड़े रक्खो या इस के नीचे एक दो तकिये रख दो।

(१) कटि पर नाभि के निम्न से आरम्भ करो और कुछ एक कुंडलाकृति लपेट देते हुए ऊपर की ओर आओ। यदि वाम स्तन पर शस्त्र क्रिया की गई हो तो लपेटों को दाईं ओर से बाईं ओर को लाना चाहिये। (२) कुंडलाकृति लपेटों से सर्व स्तन जब भली प्रकार से आवृत किया जा चुके तो पट्टी को वक्ष पर से अस्वस्थ भाग की ओर के स्कन्ध पर ले जाओ। (३) स्कन्ध के शिखर पर से पीछे को चक्र दे कर पट्टी को उसी की कक्षा के तले से आगे को निकाल पुनः स्कन्ध पर ले जाओ और पृष्ठ पर से होते हुए दूसरी ओर की कक्षा

में से निकाल कर आगे छाती पर ले जाओ। इस भांति स्तन के ऊपर के भाग से स्वस्तिक लपेट बनने आरम्भ होंगे।

(४) पट्टी को पुनः स्कन्ध पर ले जाओ और स्वस्तिक चक्र को पूरा करो परन्तु इस बार पट्टी प्रथम स्वस्तिक चक्र के नीचे के किनारे को आवृत करती हुई जावेगी और बाहु पर थोड़ा सा कूर्पर की ओर हटती जावेगी।

ऐसे तीन या चार लपेट पर्याप्त हैं।

卐 卐 卐

(५५) उदर का अधोगामी कुंडली बन्धन-(Descending Spiral of Abdomen)—

चौड़ाई—तीन इंच।

क्षेत्र—उदर वा पृष्ठ।

प्रयोजन—(क) परिष्कार को स्थिर करता है। (ख) उदर पर के टाँको की रक्षा करता है। (ग) उदर में स्थित आशयों को अंत्रवृद्धि या नाभिवृद्धि की थैली में जाने से रोकता है।

विधि—(१) पट्टी को कौड़ी-प्रदेश (Epigastrium) से शुरू करो और आगे से पीछे को दो साधारण लपेट दो ताकि पट्टी स्थिर हो जावे। (२ तीसरा वा बाद का प्रत्येक लपेट अपने पूर्व लपेट की नीचे की दो-तिहाई चौड़ाई को आवृत करता हुआ जावेगा। निम्न भाग पर एक गोल लपेट देकर पट्टी को समाप्त कर दो। पट्टी को जघन चूड़ाओं की रेखा से नीचे तक ले जाना चाहिये अन्यथा पट्टी के ऊपर

की ओर च्युत हो जाने की अधिक सम्भावना होती है। पट्टी को अधिक दृढ़ करने के लिये इसपर टांके लगा देने चाहियें।

卐 卐 卐

(५६) उदर का उद्गामी कुण्डली बन्धन—
(Ascending Spiral of Abdomen)

विधि—यह बन्धन ऊपर वाले बन्धन के सदृश ही बाँधा जाता है। इसको जघनचुड़ाओं के निम्न भाग से शुरू करके ऊपर कौड़ी-प्रदेश पर समाप्त किया जाता है।

卐 卐 卐

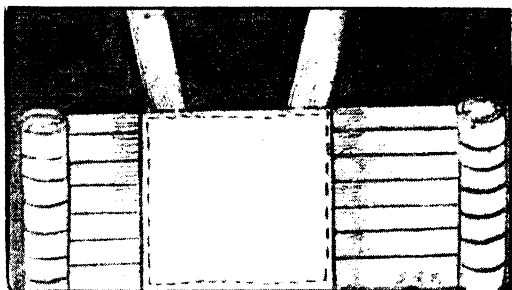
(५७)वहुपुच्छ बन्धन—(Many Tailed Bandage)
यह बन्धन ६ या ८ धज्जियों से मिल कर बनता है।

प्रत्येक धज्जी की चौड़ाई—दो या अढ़ाई इंच।

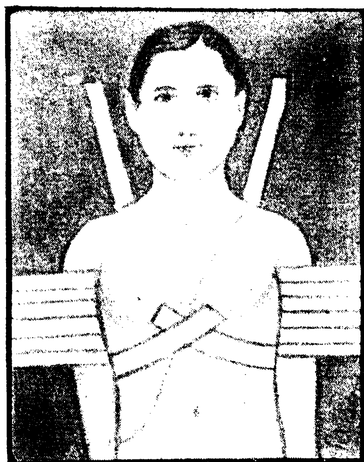
" " " लम्बाई—अंग की परिधि पर डेढ़ लपेट पूरा कर सके—एक गज़ लम्बाई पर्याप्त है।

क्षेत्र—यह बन्धन वक्ष वा उदर पर पृथक पृथक बाँधा जा सकता है। अतः वक्ष पर बाँधते समय इसका क्षेत्र वक्ष-स्थल वा पृष्ठ का ऊर्ध्वभाग होगा और उदर पर बाँधते समय उदर वा पृष्ठ का निम्न भाग होगा।

प्रयोजन—परिष्कार को स्थिर रखता है। छाती या उदर पर के व्रणों के लिये लाभकारी है। सद्योव्रण के टाँको की खिंचावट को रोकता है अतः उनकी रक्षा करता है। यदि इसको विधिपूर्वक बना कर रख लिया जावे, तो यह



४८ बहु पुच्छ बन्धन (वक्ष के लिए)



४९ बहु पुच्छ बन्धन (वक्ष पर)

हर समय हर व्यक्ति के लिये उपयुक्त किया जा सकता है। चाहे वह रोगी कितना ही मोटा या पतला क्यों न हो।

यह उदर या वक्ष पर पृथक पृथक रूप से बाँधा जाता है। अतः इसके बनाने की विधि भी पृथक २ है:—

(वक्ष के लिये)—धज्जियों को मेज़ पर एक दूसरे के समान्तर इस भांति रक्खो कि प्रत्येक नीचे की धज्जी अपनी उपरली धज्जी के निचले किनारे को आवृत करती हुई जावे। सब धज्जियों के मध्य में ६ या ७ इञ्च चौड़ाई का टुकड़ा लगा दो। यदि टुकड़ा न लगाना हो तो इन पर नीचे से ऊपर टांकें लगा दो। टांकों की एक स्तर मध्य में रहे और दो उस से तीन तीन इञ्च की दूरी पर सिरों की ओर। टुकड़े के उपरले किनारे पर दो चौड़े फ़ीते लगा दो ताकि उन को प्रत्येक कन्धे पर से ला कर आगे बन्धन से संयुक्त किया जा सके। बन्धन नीचे को न गिर सकेगा (चित्र ४८)।

(उदर के लिये)—धज्जियों को एक दूसरे के समान्तर इस प्रकार रक्खो कि प्रत्येक ऊपर की धज्जी अपने नीचे की धज्जी के ऊपर वाले किनारे को आवृत करती जावे। मध्य में एक वैसा ही टुकड़ा लगा दो। सब से नीचे की धज्जी को शेष धज्जियों की अपेक्षा इतना लम्बा रक्खो कि सामने की सांथल पर से उसका एक पूरा लपेट दिया जा सके।

प्रयोग विधि—पट्टी के मध्य को रोगी की पीठ पर इस प्रकार रक्खो कि धज्जियों के सिरे पार्श्वों की ओर लटकें। धज्जियों को बारी बारी आगे ला कर लपेटते जाओ। वक्ष के लिए सब से पहले नीचे की धज्जी को लपेटो और सिरों को बारी बारी पीछे की धज्जियों से दबाते जाओ। चित्र में केवल वक्ष पर बांधने की विधि ही दर्शाई गई है (चित्र ४६)।



अधो शाखा के बन्धन

(Bandages for Lower Extremities)

(५८) कोपीन बन्धन—(T. Bandage) इस का आकार साधुओं की लंगोटी के सदृश होता है। इस बन्धन में दो पट्टियां सम्मिलित हैं। एक पट्टी कटि पर के लिए और दूसरी सीवन पर के लिये। छोटी पट्टी बड़ी के मध्य में जुड़ी रहती है।

लम्बाई—(बड़ी पट्टी)—कटि पर के घेरे को पूरा कर सके। लगभग १ गज़, (छोटी पट्टी) लगभग डेढ़ या दो फुट।

चौड़ाई—तीन इञ्च।

क्षेत्र—कटि पर का घेरा, सीवन।

प्रयोजन—गुदा वा सीवन की ड्रेसिङ्ग को स्थिर करता है।

विधि—कटि पर आने वाली पट्टी के दोनों सिरों को आगे ला कर चपटी ग्रन्थि लगा दो। लटकती हुई पट्टी को दोनों ऊरुओं के मध्य में श्रोणि आधार के ऊपर से आगे को निकाल ऊपर कटि वाली पट्टी से संयुक्त कर दो। छोटी पट्टी को फाड़ कर दो भागों में विभक्त कर लेना चाहिये ताकि वह अंड कोष के दोनों ओर से निकाली जा सके (चित्र ५०)।

(५९) श्रोणि वा श्रोणि-आधार का बंधन (Perinium Bandage)—

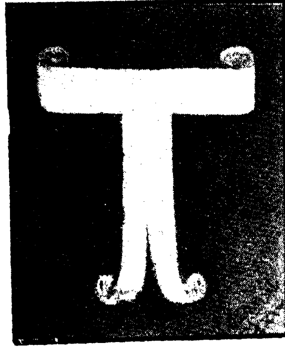
चौड़ाई—तीन इञ्च।

क्षेत्र—श्रोणि आधार, दोनों ऊरुवों का ऊर्ध्व भाग, धड़ का निम्न भाग।

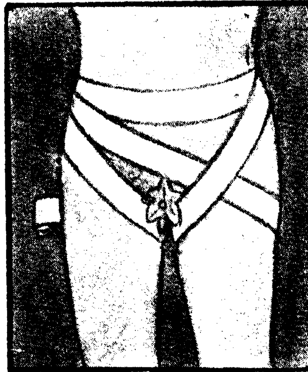
प्रयोजन—(क) श्रोणि आधार पर दबाव डालता है। (ख) परिष्कार को स्थिर करता है।

विधि—(१) श्रोणि पर जघन-चूड़ाओं से तनिक नीचे दाईं ओर से बाईं ओर को लपेट देकर पट्टी को पीछे से आगे दाईं ओर से निकाल लो और उसके निम्न भाग तथा बायें वंक्षण पर ले जाओ। (२) बाईं ऊरु के नीचे, चूतड़ के उभार के पास से पट्टी को ले जाते हुये, श्रोणि आधार के ऊपर दायें वंक्षण पर पहुँच जाओ और उसको आवृत कर पुरोर्ध्वकूट से कटि के पीछे लपेट दो। (३) पट्टी को बायें पुरोर्ध्वकूट से आगे को निकाल बायें वंक्षण की रेखा के साथ साथ नीचे को ले जाओ और श्रोणि आधार पर से दायें चूतड़ के उभार के साथ साथ पट्टी को खोलते हुये दाईं ऊरु पर लाकर सीधे बायें पुरोर्ध्वकूट तक ले जाओ। यहाँ पर इस बन्धन का एक पूरा लपेट समाप्त होता है। आवश्यकतानुसार ऐसे कई एक लपेट दिये जा सकते हैं (चित्र ५१)

यदि बन्धन किसी पुरुष के बांधा गया है तो शिश्न को ड्रैसिंग में किये हुये छिद्र द्वारा बाहर निकाल देना चाहिये।



५० कोपीन बन्धन



५१ श्रोणि बन्धन (प्रथम विधि)

(६०) दूसरी विधि—

(१) श्रोणि पर जघन चूड़ाओं के तनिक नीचे दाईं ओर से बाईं ओर को लपेट दे कर पट्टी को पीछे से आगे दाईं ओर से निकाल लो।

(२) अब इसको दायें वंक्षण की रेखा पर से नीचे को ले जा कर श्रोणिआधार के बीचों बीच बायें ऊरु के पीछे से बायें पुरोर्ध्वकूट को आवृत करते हुये उदर के ऊपर से दायें भाग पर पहुंच जाओ (चित्र ५२)।

(३) अब पट्टी को कटि के पीछे से बाईं ओर ले जाओ और बायें वंक्षण की रेखा के साथ साथ श्रोणि-आधार पर से दाहिने ऊरु के पीछे से आगे को निकाल लो और दायें पुरोर्ध्वकूट को आवृत्त करते हुए बाम भाग पर जघन चूड़ा पर पहुँच जाओ। ऐसे कई लपेट आवश्यकतानुसार दिये जा सकते हैं।

(६१) वंक्षण का उद्गामी सुपाशा बन्धन—(Ascending Spica of One Groin)—

चौड़ाई—तीन इञ्च।

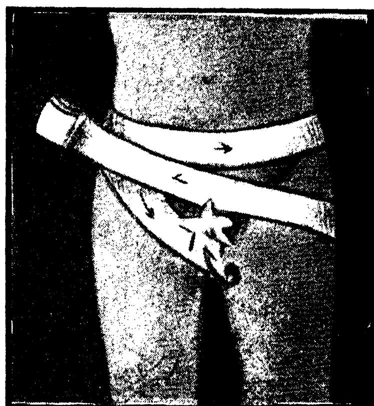
क्षेत्र—कटि, वंक्षण, उदर का निम्न भाग, और ऊरु का ऊर्ध्व भाग।

प्रयोजन—(क) परिष्कार को स्थिर रखता है (ख) वंक्षण पर दबाव डालता है।

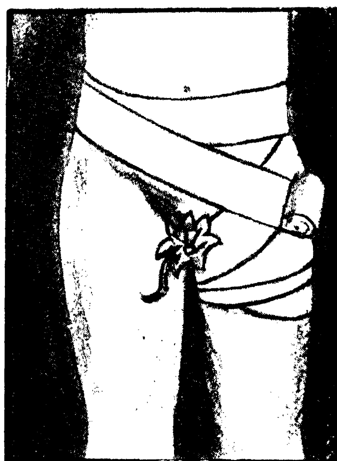
विधि—(१) ऊरु के सामने उस के उपरले भाग के साथ अन्दर से बाहर को दो एक साधारण लपेट दो। पट्टी स्थिर हो जावेगी। (२) अब इस को नीचे से ऊपर तथा बाहर को उसी ओर के जघनचूड़ा पर लाओ और कटि पर एक पूरा लपेट दे कर पुनः बेलन को पीठ पर से स्वस्थ भाग की ओर के जघनचूड़ा पर ले जाओ। (३) वहां से तिर्य्यक रूप में भगसन्धि के ऊपर लाओ और वंक्षण पर के प्रथम लपेट को दबाते हुए ऊरु पर लपेट दे कर वंक्षण पर के स्वस्तिक चक्र को पूरा करो। स्वस्तिक चक्र को पूर्ण करने से पूर्व ऊरु पर एक साधारण गोल लपेट दे देना चाहिये ताकि त्रिकोनवत अनावृत स्थान जो कि वंक्षण से तनिक नीचे रह जाया करता है, आवृत किया जा सके। इसी प्रकार कई एक लपेट दो। पहला स्वस्तिक लपेट उस के निम्न भाग पर रहना चाहिये और पश्चात् के लपेट क्रमशः ऊपर को बढ़ते जाने चाहियें (चित्र ५३)।

लपेटों के स्वस्तिक स्थान एक सीधी रेखा में रहने चाहियें और जिस स्थान पर अधिक दबाव की आवश्यकता हो वहीं पर आने चाहियें। यदि अन्तिम स्वस्तिक लपेट कुछ शिथिल पड़ते मालूम हों तो उन को सेफ्टी पिनों द्वारा शेष पट्टी से संयुक्त कर देना चाहिये (चित्र ५४)।



५२ श्रोणि बन्धन (द्वितीय विधि)



५३ वंक्षण का उद्‌गामी सुपाशा बन्धन (अपूर्ण)

(६२) वंक्षण का अधोगामी सुपाशा बंधन—(Dscending Spica)

चौड़ाई—तीन इञ्च।

क्षेत्र—वंक्षण के उद्गामी सुपाशा का।

प्रयोजन—वंक्षण के उद्गामी सुपाशा में का।

विधि—जघन चूड़ाओं पर पट्टी को स्थिर कर तिरछी नीचे को अस्वस्थ वंक्षण के उपरले भाग पर लाओ। उस पर लपेट देकर अन्दर से बाहर को वंक्षण के उपरले भाग के ऊपर से ले जाओ और कटि पर एक चक्र को पूरा करो। पश्चात् का प्रत्येक स्वस्तिक लपेट अपने पूर्व लपेट से क्रमशः नीचे को हटता जावेगा और उसकी दो तिहाई चौड़ाई को आवृत करेगा। सब स्वस्तिक चिन्ह एक सीधी लम्बमान रेखा में वंक्षण पर रहने चाहिये।

卐 卐 卐

(६३) दोनों वंक्षणों का उद्गामी सुपाशा बंधन—(Ascending Spica of Both Groins)

चौड़ाई—तीन इंच।

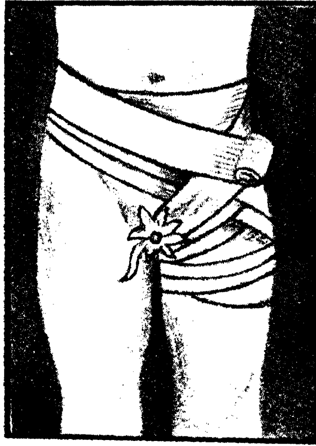
क्षेत्र—श्रोणि का घेरा, उदर का निम्न-भाग, दोनों वंक्षण, और दोनों ऊरवों का ऊर्ध्व भाग।

प्रयोजन—(क) परिष्कार को स्थिर रखता है। (ख) दोनों वंक्षणों पर दबाव डालता है।

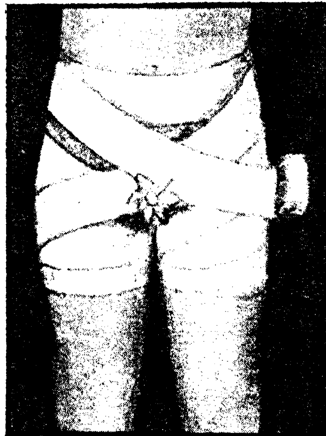
विधि—(१) बाईं ऊरु के ऊर्ध्वभाग पर दो साधारण लपेट देकर पट्टी को स्थिर करो। स्मरण रहे कि बेलन ऊरु के सामने अन्दर से बाहर को जाना चाहिये। (२) पट्टी को तिरछी ऊपर वा बाहर को उसी ओर के जघन-चूड़ा (Crest of ilium) पर ले जाओ और कटि पर पूरा लपेट देकर पृष्ठ पर से दाहिनी जघनचूड़ा पर पहुँच जाओ। (३) वहाँ से दाहिने वंक्षण के बीचोबीच दायें ऊरु पर डेढ़ लपेट देकर ऊपर को विटपसन्धि को आवृत करते हुए बाईं जघन चूड़ा पर बेलन को ले जाओ। (४) पीठ पर से घुमा कर पट्टी को दाईं जघन-चूड़ा पर ले जाओ और विटप संधि के ऊपर से नीचे को तिरछी बायें ऊरु पर ले जाओ। ऐसे तीन या चार लपेट पूरे करो ताकि सर्वस्थान आवृत हो जावे। पश्चात् का प्रत्येक स्वस्तिक लपेट अपने पूर्व लपेट की दो तिहाई चौड़ाई को आवृत करता हुआ क्रमशः ऊपर की ओर बढ़ता जाता है।

नोट—(१) बन्धन को देखने से पता चलेगा कि पट्टी एक वंक्षण पर तिर्य्यक रूप में ऊपर अन्दर से बाहर को जाती है और दूसरे वंक्षण पर ऊपर से नीचे की ओर बाहर से अन्दर को जाती है। इन दोनों के बीच में एक लपेट कटि पर भी दे देना चाहिये अन्यथा बन्धन के नीचे की ओर च्युत हो जाने की अधिक सम्भावना रहेगी।

(२) परन्तु जब पट्टी व्यत्यस्त रूप में ऊपर को बाहर से अन्दर को लाई जाती है तो यह स्वयमेव ही दूसरे वंक्षण



५४ वंक्षण का उद्गामी सुपाशा (पूर्ण)



५५ दोनों वंक्षणों का उद्गामी सुपाशा

पर नीचे को वा बाहर को उतरने से पूर्व कटि पर लगभग एक पूरा चक्र समाप्त कर चुकती है। अतः इन दोनों के बीच में कटि पर अन्य गोल लपेट देने की कोई आवश्यकता नहीं। (चित्र ५५)।

卐 卐 卐

(६४) दोनों वंक्षणों का अधोगामी सुपाशा—(Descending Spica of Both Groins)—

विधि—यह बन्धन ऊपर वाले उद्गामी सुपाशा जैसा ही है। भेद केवल इतना ही है कि पट्टी को जघन चूड़ाओं पर स्थिर कर के, नीचे की ओर, दायें वा बायें वंक्षण पर, बारी बारी स्वस्तिक लपेट बनाये जाते हैं और ऊरु पर गोल लपेट दे कर इन को स्थिर कर दिया जाता है।

卐 卐 卐

(६५) नितंब का उद्गामी सुपाशा बन्धन—(Ascending Spica of Buttock)

चौड़ाई—तीन इञ्च।

क्षेत्र—एक ओर का नितंब या चूतड़, कटि का घेरा और ऊरु का घेरा।

प्रयोजन—(क) परिष्कार को स्थिर करता है (ख) दबाओ डालता है।

विधि—(१) ऊरु के उपरले भाग पर उस के पीछे अन्दर से बाहर को जाते हुए दो लपेट दो। पट्टी को स्थिर

कर दो। (२) इस को चूतड़ पर से तिरछी वंक्षण की ओर जघन चूड़ा के समतल पर लाओ और वहां पट्टी का डेढ़ लपेट दे कर नितंव पर से नीचे को उतर आओ (देखो चित्र ५६)। (३) ऊरु पर एक गोल लपेट पूर्व लपेट से तनिक ऊपर दो, तथा नितंव पर से पहले स्वस्तिक लपेट की दो तिहाई चौड़ाई को आवृत करता हुआ ऊपर की ओर एक और स्वस्तिक चक्र को पूरा करो।

ऐसे कई एक लपेट दो ताकि नितंव वा चूतड़ भली प्रकार से आवृत हो जावे। सब के सब स्वस्तिक चिह्न एक सीधी रेखा में हों और साथ ही उस स्थान पर हों जहां कि अधिक दबाओ की आवश्यकता है।



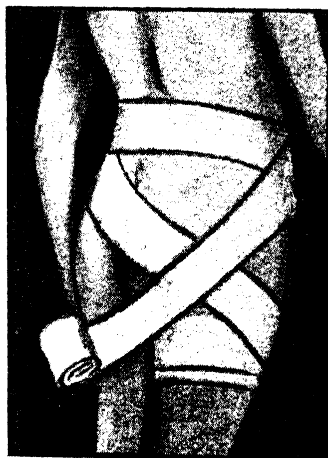
(६६) नितंव का अधोगामी सुपाशा बन्धन—(Descending Spica of Buttock)

यह बन्धन नितंव के उद्गामी सुपाशा की भांति ही बांधा जाता है। भेद केवल यही है कि पट्टी को कटि से शुरु किया जाता है और स्वस्तिक लपेट क्रमशः नीचे की ओर उतरते बनाये जाते हैं।

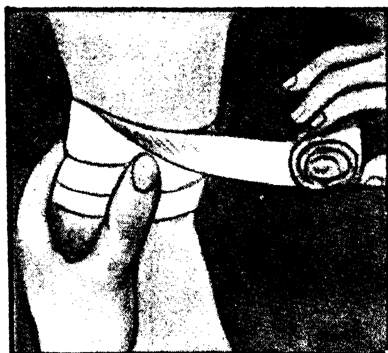


(६७) ऊरु या जांघ का अनुवेल्लित बंधन—(Spiral Reverse of Thigh)

चौड़ाई—तीन इंच।



५६ नितंब बन्धन



५७ ऊरु का अनुवेल्लित बन्धन

क्षेत्र—ऊरु।

प्रयोजन—ऊरु पर दबाव डालता है, परिष्कार को स्थिर रखता है।

विधि—(१) ऊरु के निम्न भाग पर जानु से तनिक ऊपर गोल लपेट द्वारा पट्टी को स्थिर करो। (२ ऊपर की ओर कुंडलाकृति लपेट आरम्भ करो। ऊपर २ का प्रत्येक लपेट नीचे वाले लपेट की दो तिहाई चौड़ाई को आवृत करेगा। कुछ एक लपेट देने के पश्चात् जब पट्टी का ऊपर का किनारा नीचे के किनारे की अपेक्षा अधिक खिंचा हुआ हो तो पट्टी में 'मोड़' बनाने अर्थात् उस को उलटाना शुरू करो। प्रत्येक बार जब पट्टी सामने आवे, उसमें 'मोड़' बना दो। (चित्र ५७) (३) वंक्षणके पास एक दो साधारण लपेट देकर पट्टी को समाप्त करो या सुपाशा बन्धन बाँध दो। बन्धन को नीचे की ओर च्युत होने से बचाने के लिये ऊपर से नीचे तक कुछ एक पिन लगा दो। मोटे व्यक्तियों के प्रति यह बात कभी भी विस्मरण न करो, अन्यथा पट्टी आध घण्टे में ही शिथिल पड़ कर पांवों तक आजावेगी।

卐 卐 卐

(६८) जानु बन्धन—(Knee Bandage)

चौड़ाई—अढ़ाई इंच।

क्षेत्र—जानु।

प्रयोजन—(क) परिष्कार को स्थिर रखता है (ख) दबाव डालता है।

विधि—(१) पाली के नीचे टाँग पर पट्टी को व्यत्यस्त रूप में ऊपर से नीचे वा बाहर की ओर रक्खो। टाँग के पीछे जानु के निम्न-भाग से चक्र देकर पट्टी के अग्र व्यत्यस्त भाग को दबाते हुए बंलन को जानु के पीछे ले जाओ। २) अभ्यन्तरीय उभार पर पहुंच बन्धन को स्थिर करने के लिये सन्धि से तनिक ऊपर ऊरु के निम्न भाग पर एक साधारण गोल लपेट दो और पुनः अभ्यन्तरीय उभार पर पहुँच जाओ। (३) अब उसको जान्वस्थि पर व्यत्यस्त रूप में रक्खे हुए सिरे पर से उसकी दो तिहाई चौड़ाई को आवृत करते हुए नीचे को बाहर की ओर लाओ। जानु संधि के पीछे से लाकर ऊरु के निम्न-भाग पर पहले लपेट को पूर्णतया आवृत करते हुए एक चक्र दो और जान्वस्थि के ऊपर से नीचे को लाओ। प्रत्येक उद्गामी लपेट अपने नीचे के लपेट की दो तिहाई चौड़ाई को आवृत करता हुआ जायेगा। (चित्र ५८)

इस चित्र तथा व्याख्या में केवल दो लपेटों की ही विधि बतलाई गई है। इसी प्रकार और लपेट दिये जा सकते हैं। अन्त में जानु से ऊपर ऊरु पर गोल लपेट देकर पट्टी को समाप्त कर दो।

(६९) जंघा का स्वस्तिक बंधन—(Figure of Eight of leg)

चौड़ाई—अढ़ाई इञ्च।

क्षेत्र—टखने से जानु पर्यन्त।

प्रयोजन—परिष्कार को स्थिर करता है।

नोट—यदि टांग के शोथ-युक्त हो जाने की सम्भावना हो तो इस के साथ टखने अर्थात् गुल्फ का स्वस्तिक बन्धन संख्या ७१ भी सम्मिलित कर देना चाहिये।

विधि—(१) टखने के ऊपर एक साधारण लपेट द्वारा पट्टी को स्थिर करो। (२) जानु की ओर कुण्डलाकृति लपेट दो। जब पट्टी का निचला किनारा शिथिल पड़ता प्रतीत हो, तो स्वस्तिक लपेट देने आरम्भ करो। (३) बेलन को अन्तर-गुल्फ की ओर से निकाल जंघा के सामने से पिंडली के ऊपर तक ले जाओ और जानु के नीचे लपेट देकर बेलन को नीचे वाह्य गुल्फ की ओर ले जाओ। इसी भाँति और स्वस्तिक लपेट बनाये जा सकते हैं। प्रत्येक लपेट क्रमशः ऊपर को हटता जावेगा। पहले स्वस्तिक लपेट में जानु के नीचे एक साधारण लपेट दे देने से यह लाभ है कि पट्टी नीचे की ओर च्युत होने से बची रहती है (चित्र ५९)।

(७०) **जंघा का अनुवेल्लित बंधन** (Spiral of Leg)—

चौड़ाई—अढ़ाई इंच।

क्षेत्र—गुल्फ से जानु पर्यन्त।

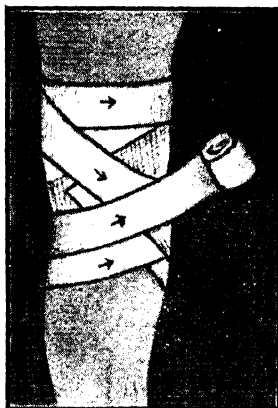
प्रयोजन—(क) परिष्कार को स्थिर रखता है, (ख) टांग पर की शोथ को रोकता है।

विधि—गुल्फों के तनिक ऊपर से पट्टी को शुरू करो और ऊपर की ओर कुण्डलाकृति लपेट लगाने आरम्भ करो। ऊपर का प्रत्येक लपेट अपने नीचे वाले लपेट की उपरली दो तिहाई चौडाई को आवृत करता हुआ जावेगा। बन्धन के निम्न अंश से ही पट्टी में मोड़ बनाने आरम्भ कर देने चाहिये पर यह नियम अधिक पतले व्यक्तियों की टांग पर लागू नहीं, कारण कि उनकी जंघा अति दुर्बल वा पतली होने के कारण पट्टी में झोल नहीं पड़ा करते।

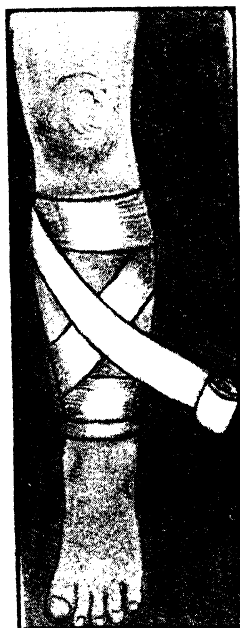
'मोड़' टांग के अग्रभाग पर मध्यरेखा में रहने चाहियें। और पिंडली के सब से ऊपरले भाग पर पहुँच कर 'मोड़' बनाने बन्द कर देने चाहिये। यहाँ पट्टी को एक साधारण गोल लपेट लगाकर समाप्त कर देना चाहिये।

नोट पट्टी को इतना ऊँचा मत ले जाओ कि जिस से जानु की गति में बाधा पड़े।



५८.जानु बन्धन



५९ जंघा का स्वस्तिक बन्धन



६० गुल्फ का स्वस्तिक बन्धन

(७१) गुल्फ का स्वस्तिक बंधन (Figure of Eight of Ankle)

चौड़ाई—दो इञ्च।

क्षेत्र—पाँव का घेरा, गुल्फ का अन्तरीय भाग, गुल्फ के ऊपर टाँग का निम्न भाग।

प्रयोजन—(क) परिष्कार को स्थिर रखता है (ख) गुल्फ पर दबाव डालता है और (ग) उसकी गति को रोकता है।

विधि—(१) गुल्फ के ऊपर जंघा के निम्न भाग पर पट्टी को स्थिर करो। (२) बेलन को वाह्य गुल्फ पर से पांव के ऊपर से नीचे की ओर तिरछा लाओ और अंगुलियों के निकट लपेट देकर ऊपर अन्तर्गुल्म की ओर पट्टी को ले जाओ। यहाँ पर पहला स्वस्तिक लपेट समाप्त हो जावेगा। (चित्र ६०) ऐसे दो या तीन स्वस्तिक लपेट दिये जा सकते हैं जो कि क्रमशः ऊपर को बढ़ते जावेंगे।

टखने से तनिक ऊपर साधारण लपेट देकर पट्टी को समाप्त करो।

卐 卐 卐

(७२) पांव का सुपाशा बन्धन—(Spica of Foot)

चौड़ाई—दो इञ्च।

क्षेत्र—गुल्फ वा पांव की सम्पूर्ण पृष्ठ (पार्ष्णि की निम्न पृष्ठ को छोड़ कर)

प्रयोजन—परिष्कार को स्थिर रखता है।

विधि—(१) गुल्फ पर एक गोल लपेट से पट्टी को स्थिर करो। (२) पाद-पृष्ठ के ऊपर से पट्टी को नीचे की ओर तिरछी लाते हुए अंगुलियों के निकट दो या तीन कुण्डलाकृति लपेट लगाओ। यदि आवश्यकता हो तो यहां पट्टी में 'मोड़' भी बनाये जा सकते हैं। (३) तब उसको एड़ी के पीछे से निकाल कर पाद-पृष्ठ पर से पुनः अंगुलियों के आधार या मूल पर ले जाओ। (चित्र ६१)

इस प्रकार से एक स्वस्तिकचक्र पूर्ण होता है। दो या तीन लपेट लगाने से सर्व स्थान आवृत हो जावेगा। प्रत्येक लपेट गुल्फ पर क्रमशः ऊपर की ओर तथा पाद-पृष्ठ पर अंगुलियों की ओर हटता जावेगा। गुल्फ के ऊपर एक गोल लपेट देकर पट्टी को समाप्त करो।

(७३) पार्ष्णि बन्धन—(Bandage of Heel)—

चौड़ाई—दो इञ्च।

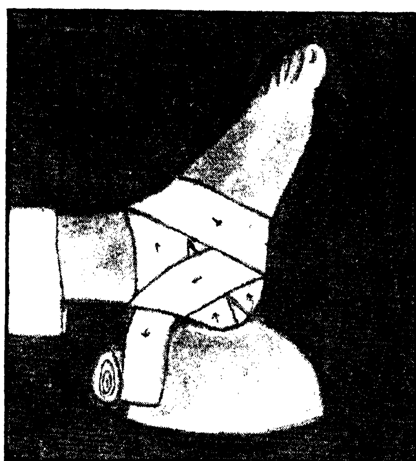
क्षेत्र—पार्ष्णि वा गुल्फ का सर्व स्थान।

प्रयोजन—(क) पार्ष्णि (एड़ी) पर परिष्कार को स्थिर रखता है (ख) गुल्फ की गति को रोकता है।

विधि—दाईं पार्ष्णि के लिए बेलन को दायें हाथ में और सिरे को बायें हाथ में पकड़ो, बाईं पार्ष्णि के लिए इस के विपरीत पकड़ो। रोगी को अपने सामने बिठला कर उस की



६१ पांव का सुपाशा बन्धन



६२ पार्ष्णि बन्धन

एड़ी को तनिक ऊँचा कर लो ताकि बेलन सरलता पूर्वक नीचे से निकाला जा सके।

पट्टी को एड़ी के नीचे इस प्रकार रक्खो कि यह अन्तर्गुल्फ की ओर खुल सके।

प्रथम लपेट पार्ष्णि तथा गुल्फ के सामने के भाग पर से दो। पट्टी के सिरे को एड़ी (पार्ष्णि) पर स्थिर कर दो।

दूसरा लपेट इस से तनिक ऊपर और तीसरा इस से तनिक नीचे दो। इस प्रकार दूसरा लपेट प्रथम लपेट के पार्ष्णि पर के ऊपर के आधे भाग को आवृत करता हुआ अन्तर्गुल्फ पर से पादतल की ओर तीसरा लपेट बनाने के लिए चला जावेगा और तृतीय लपेट के रूप में पार्ष्णि के पादतल की ओर के अधो भाग को आवृत करता हुआ पुनः ऊपर को चला जावेगा।

चौथे लपेट को दूसरे से भी ऊपर और पांचवें लपेट को तीसरे से नीचे पादतल की ओर रक्खो।

पंचम लपेट निर्माणार्थ पट्टी जब पादतल के अंगुष्ठ की ओर के किनारे पर पहुँचे तो इस को पाद पृष्ठ पर ले जाने के पार्ष्णि के पार्श्व पर घुमा दो और पार्ष्णि की कण्डरा तथा वाह्य गुल्फ के ऊपर से ला कर गुल्फों के सामने ले जाओ और छटे लपेट के रूप में पादतल के पंचम लपेट के भाग को आवृत करते हुए, पंचम लपेट के सदृश पार्ष्णि के वाह्य पार्श्व

पैर से पट्टी को खोल कण्डरा पर से होते हुए चतुर्थ लपेट के ऊपर ऊपर सातवें लपेट को पूरा करो (चित्र ६१)।

卐 卐 卐

(७४) पादांगुष्ट बंधन (Bandage for Great Toe)-

चौड़ाई—एक इञ्च।

क्षेत्र—अन्तिम सिरे को छोड़ कर अंगुष्ठ का सर्व भाग, पाद-पृष्ठ का थोड़ा सा भाग, गुल्फ का घेरा।

प्रयोजन—(क) परिष्कार को स्थिर करता है। (ख) संधि की गति को रोकता है।

विधि—(१) टखने के ऊपर एक लपेट दो। सिरे को अन्तर्गुल्फ पर रख अन्दर से बाहर को लपेट देना चाहिये। (२) पादतल पर से पट्टी को निकाल अंगुष्ठ के ऊपर सन्धि पर से अन्तर्गीय पृष्ठ पर पहुंच जाओ। (३) अंगुष्ठ पर साधारण लपेट दे कर उसके अग्रभाग पर पहुँच जाओ। यहाँ से कुण्डलाकृति लपेट देते हुये पीछे की ओर अंगुष्ठ मूल पर पहुँच जाओ। (४ अब पाद-पृष्ठ पर से होते हुये पाद-तल के नीचे से पट्टी को निकाल अन्तर्गुल्फ के पास बेलन को ले जाओ तथा स्वतन्त्र या आरम्भिक सिरे से चपटी ग्रन्थि द्वारा संयुक्त करदो। यदि आरम्भिक सिरा खुला न छोड़ा गया हो तो अन्तस्थ सिरे को, टखने पर एक गोल लपेट दे कर पट्टी से पिन द्वारा संयुक्त कर दो (चित्र ६२)।

卐 卐 卐

(७५) दूसरी विधि—पांव के अग्रभाग पर अंगुलीय-मूल से तनिक पीछे पट्टी को स्थिर करो और अंगुष्ठ की पृष्टपर से उसके अग्रभाग पर पहुँच जाओ। अंगुष्ट पर दो कुण्डलाकृति लपेट लगाओ और दो स्वस्तिक लपेट अङ्गुष्ठ के आधार वा पट्टी के पांव पर के आरम्भिक स्थान के बीच लगाओ। तथा पट्टी को पादपृष्ट पर समाप्त करो। प्रत्येक स्वस्तिक लपेट बनाने के पूर्व अंगुष्ठ पर एक साधारण लपेट लगा देना चाहिये। स्वस्तिक लपेट अधिक दृढ़ हो जावेंगे।

卐 卐 卐

(७६) पादांगुल का कुंडली बन्धन—

चौड़ाई—एक इञ्च।

क्षेत्र—नोक को छोड़ कर अंगुलि का शेष स्थान।

प्रयोजन—(क) परिष्कार को स्थिर रखता है (ख) सन्धि की गति को रोकता है।

विधि—इस को हाथ की अंगुलियों के कुंडली अर्थात् कोष बन्धन संख्या ४५ के सदृश ही बांधा जाता है। यदि पादांगुल के अग्र भाग को भी आवृत करना हो तो इस के साथ पुनरावर्तक बन्धन भी सम्मिलित किया जा सकता है।

卐 卐 卐

(७७) स्थाणु का बन्धन या स्थाणु का पुनरावर्तक बन्धन (Recurrent Bandage For a Stump)—

चौड़ाई—तीन इञ्च या आवश्यकतानुसार न्युन वा अधिक।

क्षेत्र—ठुंठ, स्थाणु तथा उक्त अंग का उपरला स्थान।

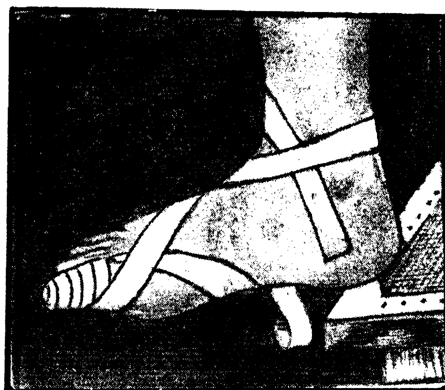
प्रयोजन—बाहु वा टांग पर कहीं छेदन क्रिया (amputation) करने के पश्चात् वहां की परिष्कार, मांस तथा त्वचा के लोथड़ों को स्वस्थान पर रखने के लिए उपयोगी है।

विधि—विद्यार्थी इस को अपनी बन्द मुट्ठी पर बांध कर सीख सकते हैं।

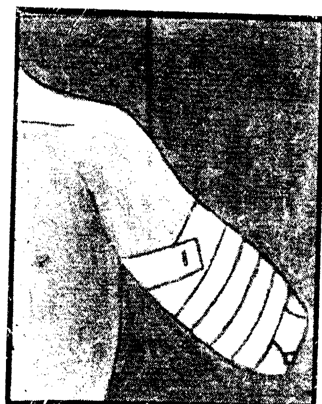
छिन्न अंग को बायें हाथ की अंगुलियों तथा अंगुष्ठ से इस प्रकार पकड़ो कि स्थाणु सामने को रहे। स्थाणु के अग्र भाग से अंगुलियों वा अंगुष्ठ का अन्तर लगभग दस या बारह अंगुल के होना चाहिये।

(१) इस स्थान पर कुण्डलाकृति एक-दो लपेट देकर पट्टी को अंगुष्ठ से थाम लो। (२) ठुंठ के केन्द्र पर से निकाल कर पट्टी को बाहर की सतह पर लाओ और वहां पर अंगुलियों से थाम पुनः ठुंठ के सामने से प्रथम लपेट के एक किनारे को दबाते हुए अंगुष्ठ तक ले आओ और वहां से दूसरे किनारे को दबाते हुए पीछे अंगुलियों तक चले जाओ। जब सर्व स्थान भली प्रकार से आवृत हो जावे तो (३) कुंडलाकृति लपेट देने आरम्भ करो या स्वस्तिक लपेट देते हुए ठुंठ के अन्तिम भाग से मूल तक पहुँच जाओ। (४) अन्त में अंग के उपरले भाग पर दो एक गोल लपेट देकर पट्टी को संयुक्त कर दो। (चित्र ६४) अथवा—

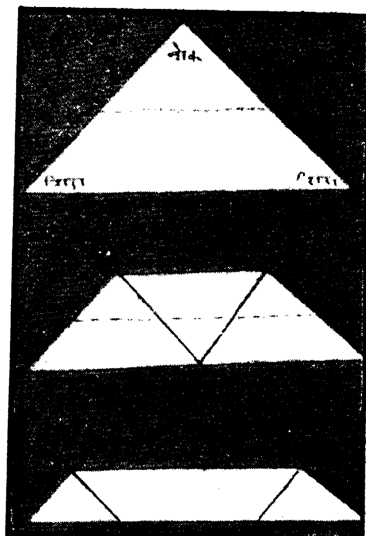
यदि स्थाणु बाहु का हो तो ग्रीवा पर स्वस्तिक लपेट देकर



६२ पादांगुष्ठ बन्धन



६४ स्थाणु बन्धन



६५,६६,६७, त्रिभुजाकार या त्रिकोण बन्धन

और यदि ऊरु पर हो तो कटि पर स्वस्तिक लपेट देकर पट्टी को समाप्त करना चाहिये। पट्टी अधिक दृढ़ हो जावेगी।

卐 卐 卐

त्रिभुजाकार या त्रिकोन बन्धन—(Triangular Bandage)—

यद्यपि शस्त्र वैद्य इस को शस्त्र चिकित्सा में बहुत कम प्रयुक्त करते हैं, पर 'प्रारम्भिक-सहायता (First aid) में इसी को प्रधानता दी जाती है। जो, बालचर-संस्था (Scouting) से घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं, उन के लिए तो यह एक उपयोगी वस्तु है। इसकी आवश्यकता निम्न के दो कारणों से स्पष्ट है—

(१) इस के बांधने में बहुत कम अभ्यास की आवश्यकता है।

(२) इस के द्वारा, रक्त प्रवाह में रुकावट पैदा होने की कम सम्भावना होती है।

(**लम्बाई या चौड़ाई**)—३६ या ३८ वर्ग इञ्च का एक वस्त्र का टुकड़ा लो। इस को कोना कोनी तह कर के दो सम भागों में बांट लो। प्रत्येक टुकड़ा एक त्रिकोण बन्धन होगा।

इस पट्टी को तीन भिन्न भिन्न विधियों से प्रयोग किया जाता है—

(१) **खुली पट्टी**—जब सारी की सारी पट्टी फैली हुई हो।

२. **चौड़ी पट्टी**—पट्टी को फैला कर 'नोक' को बड़ी भुजा के मध्य में लाओ।

३. **तंग पट्टी**—चौड़ी पट्टी को पुनः दोहरी कर लो (देखो चित्र सं० ६५, सं० ६६, सं० ६७)।

× × × ×

शरीर के भिन्न भिन्न भागों पर बांधने की विधियां

(७८) शिर पर—खुले बन्धन को शिर पर इस प्रकार रक्खो कि नोक पश्चात्-उभार के पीछे लटकती रहे और बड़ी भुजा ललाट पर आवे। दोनों सिरों को कानों के ऊपर से पश्चात् उभार के नीचे तक ले जाओ और पुनः शिर के घेरे पर से ललाट पर ले जाओ तथा ग्रन्थि द्वारा संयुक्त कर दो। नोक को तनिक खींच कर ऊपर को मोड़ दो और पिन से संयुक्त कर दो।

(७९) हनु पर—तंग पट्टी को ठोड़ी के नीचे इस प्रकार रक्खो कि एक ओर का सिरा लम्बा रहे। लम्बे सिरे को शिर के ऊपर से दूसरी ओर कान के आगे से नीचे को लाओ। दोनों सिरों को एक दूसरे पर घुमा कर लम्बे सिरे को चिबुक के ऊपर सामने से निकाल, दोनों सिरों को ग्रीवा के पीछे खींच कर ग्रन्थि लगा दो।

(८०) स्कन्ध पर—सर्व प्रथम अस्वस्थ स्कन्ध के बाहु को गल पट्टी में डाल दो। खुली पट्टी को कन्धे पर इस प्रकार रक्खो कि बड़ी भुजा नीचे को, मध्य भाग कन्धे पर और नोक ग्रीवा की ओर रहे। बड़ी भुजा को बाहु के ऊपर घुमा कर बाहर की ओर गांठ लगा दो और नोक को गल पट्टी के एक परत के नीचे से निकाल कर थोड़ा सा खींच लो ताकि बन्धन की सलवटें निकल जावें। नोक को

गल पट्टी पर से मोड़ कर स्कन्ध पर बिछी हुई पट्टी से पिन द्वारा संयुक्त कर दो।

(८१) **कोहनी पर**—मोड़ी हुई कोहनी पर खुली पट्टी को इस प्रकार रक्खो कि नोक कोहनी के ऊपर कन्धे की ओर और बड़ी भुजा कोहनी के नीचे कलाई पर आवे। दोनों सिरों को अग्र बाहु के ऊपर से तथा एक दूसरे के सामने से घुमा कर ऊपर बाहु पर ले जाओ और वहां एक चक्र दे कर बाहु के अग्र भाग पर ग्रन्थि लगा दो। नोक को खींच कर नीचे को मोड़ दो। बाहु को बाहु-गोफणा में डाल दो।

(८२) **हाथ पर**—खुले वा बन्द हाथ पर बांधने की विधि एक ही है।

खुली पट्टी के बीच हाथ को इस प्रकार रक्खो कि करतल नीचे की ओर वा अंगुलियां नोक की ओर रहें। नोक को ऊपर की ओर मोड़ कर कलाई तक ले जाओ। सिरों को नोक के ऊपर से कलाई पर एक लपेट दो और एक दूसरे के सामने से निकाल कर नीचे की ओर ले जाओ। नोक को खींच कर पीछे को उलटा दो। दोनों सिरों को पुनः घुमा कर ऊपर की ओर गांठ लगा दो।

(८३) **नितम्ब पर** दो पट्टियां लो—एक तंग और दूसरी खुली। तंग को कटि पर पेटी के रूप में बाँध दो और चौड़ी पट्टी को ऊरु सन्धि पर इस प्रकार से रक्खो कि बड़ी भुजा ऊरु पर व्यत्यस्त रूप में पड़ी रहे और नोक ऊपर की

ओर रहे। नोक को पेटी के बीच से निकाल लो। दोनों सिरों का ऊरु के ऊपर घुमाकर एक चक्र दो और बाहर की ओर गाँठ लगा दो। नोक को खींच कर नीचे की ओर मोड़ दो और पिन से संयुक्त कर दो।

(८४) पांव पर—पांव के तले बन्धन को इस प्रकार रक्खो कि नोक आगे को अँगुलियों की ओर रहे और नोक पार्ष्णि से चार इञ्च के अन्तर पर पीछे को रहे। नोक को मोड़ कर ऊपर को ले जाओ। दोनों सिरों को घुमा कर टखने पर ग्रन्थि लगादो। नोक को पुनः खींच कर उलटा दो और आगे पिन से संयुक्त कर दो।

(८५) वक्ष पर—रोगी को अपने सामने खड़ा करो। खुली पट्टी को वक्षस्थल पर इस प्रकार रक्खो कि किनारा अस्वस्थ भाग की ओर के कन्धे पर पीछे को लटके। दोनों सिरों को पीछे पृष्ठ पर ले जाओ और उसी ओर की कक्षा के निकट गाँठ लगादो। इस अभिप्राय के लिये पृष्ठ पर से आने वाला सिरा दूसरे सिरे की अपेक्षा अधिक लम्बा रखा जाता है। नोक को ऊपर की ओर खींच कर खूब तान दो और स्कन्ध के पीछे की ओर नीचे सिरों के साथ ग्रंथि लगादो।

(८६) पृष्ठ पर—इस को पृष्ठ पर बाँधने के लिये वक्ष पर की विधि के अनुसार ही बांधो। भिन्नता इतनी है कि खुली पट्टी को पृष्ठ पर फैला कर रक्खा जाता है।

(८७) गोफणाएं (गल-पट्टियां)—

(Slings)

बाहु या हाथ को आश्रय देने के लिये गल-पट्टियां प्रयोग में लाई जाती हैं और किसी बड़े रोमाल को कोनाकोनी तह करके त्रिकोन के आकार में ले आने से बड़ी सरलता पूर्वक बन सकती हैं।

हस्त गोफणा या छोटी गल-पट्टी—(Hand Sling)—

प्रथम विधि—तिकोनिया वस्त्र को तह करके गलूबन्द बना लो। रोगी के सम्मुख खड़े हो जाओ। पट्टी का एक सिरा स्वस्थ कन्धे के ऊपर से और दूसरे को हाथ पर से घुमा कर अस्वस्थ बाहु की ओर के कन्धे पर ले आओ। दोनों सिरों को कृकाटिका पर ग्रन्थि द्वारा संयुक्त कर दो, परन्तु ग्रन्थि लगाने से पूर्व हाथ की ऊँचाई को स्थिर कर लेना चाहिये और उसी की ऊँचाई के अनुसार ही गोफणा की लम्बाई रखनी चाहिये। (चित्र ६८)

स्मरण रहे कि हस्त तल पर से जाने वाला भाग सदा ही अभिमुख स्कन्ध पर से जाया करता है। इसके विपरीत बांधने से हाथ के पट्टी में से निकल जाने की सम्भावना होती है। यदि कृकाटिका पर की ग्रंथि रोगी के लिये कुछ दुःख का कारण प्रतीत हो तो सिरों में ग्रन्थि लगाने की अपेक्षा उनको रोगी के कन्धों पर कोट से पिनों द्वारा संयुक्त कर देना चाहिये।

दूसरी विधि—स्वस्थ भाग के कन्धे पर से पट्टी को ले जाने की अपेक्षा इस को कक्षा के नीचे से निकाल दूसरे कन्धे पर सिरे के साथ चपटी ग्रंथि द्वारा संयुक्त कर दो।

卐 卐 卐

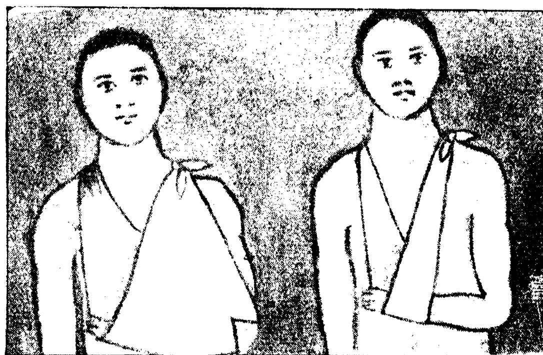
(८८) बाहु गोफणा या बड़ी गल-पट्टी—(Arm Sling)—

रोगी के सम्मुख खड़े हो जाओ। एक हाथ में पट्टी की नोक को और दूसरे में पट्टी के एक सिरे को पकड़ लो। इस त्रिकोन के आधार को कलाई की ओर तथा 'नोक' को कूर्पर की ओर इससे तनिक हटा कर रखो। स्वस्थ भाग की ओर के कन्धे पर एक सिरे को रख कर दूसरे सिरे को दूसरे कन्धे पर ले जाओ—बाहु को इस गोफणा में डाल दो। सिरों को थोड़ा सा खींच कर हाथ को कोहनी की अपेक्षा तनिक ऊँचा कर दो। सिरों में चपटी ग्रन्थि लगा दो। नोक को या तो बाहु की ओर से मोड़ कर सामने वाले परत के साथ पिन द्वारा संयुक्त कर दो अथवा भीतर की ओर ही मोड़ दो। (चित्र ६६)

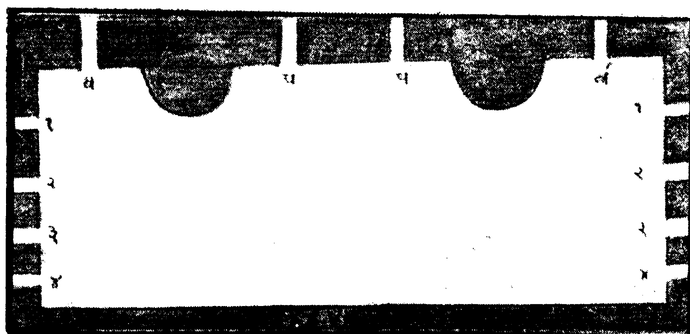
卐 卐 卐

(८९) फुप्फुस जाकट—(Pneumonia Jacket or Jacket for lungs)

प्रयोजन—फुप्फुस क्षेत्र या वक्षस्थल को शीत से



६८. हस्त गोफणा ६९ बाहु गोफणा



७० श्रीयुत् डाकटर अर्जुन दास साहेब की फुप्फुस जाकट

बचाता है। औषधियों के लेप वा परिष्कार को स्थिर रखता है फुप्फुसौष,* परिफुप्फुसौष† इत्यादि रोगों में लाभकारी है।

विधि—फलालैन या खादी के दो टुकड़े ऐसे लो कि जिन में से प्रत्येक वक्ष पर की परिधि को जत्रु से अन्तिम पर्शुका तक आवृत करता हुआ पृष्ठ पर भी पूरा आ सके—सारांश यह कि वक्षस्थल को पूर्णतया घेर सके।

कक्षा के नीचे आने वाले भाग को कैंची से गोल कतर कर निकाल दो, ताकि वस्त्र कक्षा के तले भी ठीक आ सके वा कोई सलवट न पड़ने पावे, इसको ठीक वासकट समझो। एक टुकड़े को अपने सामने मेज़ पर फैला लो और दोनों पार्श्विक अर्थात् छोटे किनारों पर सिरों से चार चार इञ्च अन्दर की ओर चार या पाँच इञ्च लम्बाई वाले फ़ीते लगादो, फ़ीते आवश्यकतानुसार चार या कुछ अधिक होने चाहिये। ऊपर के किनारे पर भी चार फ़ीते लगा दो। दूसरे टुकड़े पर कोई फ़ीता न लगाओ। (चित्र ७० में अ, अं, प, पं)

फ़ीतों रहित वस्त्र के एक ओर औषधि का लेप लगा कर मध्यभाग को पृष्ठ पर रखो और सिरों को कक्षाओं के तले से

---

* इन रोगों की तथा फेफड़े के अन्य रोगों की पूर्ण व्याख्या मैं अपनी लिखी हुई पुस्तक "फेफड़ों की परीक्षा वा उनके रोग" में कर चुका हूं। अतः पाठक वहां देख लें।

—लेखक

† फुप्फुसौष (Pneumonia) परिफुप्फुसौष (Pleurisy)

निकाल कर सामने ले आओ—वक्ष को आवृत कर दो। फ़ीतों सहित वस्त्र पर औषधि न लगाओ। इस को पहले टुकड़े के सदृश उनके ऊपर से वक्षस्थल पर लपेट दो।* फ़ीतों को तनिक खींच दो, ताकि जाकट की सलवटें निकल जावें। सामने वाले फ़ीतों को आगे और ऊपर वाले फ़ीतों को कन्धों के ऊपर आपस में ग्रन्थियों द्वारा संयुक्त कर दो। ऊपर वाला वस्त्र नीचे वाले वस्त्र को स्थिर रक्खेगा।

शीत ऋतु में ऊपर दो परत लगाने चाहियें और मध्य में रुई की पतली पतली स्तर जमा कर सी देना चाहिये, ताकि रुई फैली रहे। पश्चात् फ़ीते संयुक्त कर देने चाहिये।

यदि एक ही फुप्फुस अस्वस्थ हो तो नीचे वाले वस्त्र के केवल आधे ही भाग पर औषधि का लेप करना चाहिये। अगले दिन जाकट को खोल पुरानी लेप उतार कर नई लेप लगा देनी चाहिये।

यह जाटक मुझ को मेरे परम पूज्य पिता श्रीयुत् डाक्टर अर्जुन दास साहिब की बतलाई हुई है। अतः इस को यदि मैं 'डाक्टर अर्जुन दास साहिब की फुप्फुस जाकट' कहूं तो कोई अनुचित नहीं।

* यदि इस को दो भागों में विभक्त कर लिया जावे तो और भी अच्छा हो। एक भाग को एक पार्श्व पर और दूसरे को दूसरे पार्श्व पर वक्षोस्थि से पृष्ठ वंश तक लगाया जा सकता है। इस से श्वास लेने में कष्ट न होगा।

गॉज़ के बन्धन (Gauze Bandages)—

आधुनिक समय में व्रण को बाँधने के लिये गॉज़ भी अब इतना ही बरता जाने लगा है, जितना कि मलमल, तथा इसको मलमल की अपेक्षा अच्छा समझा जाता है। स्मरण रहे कि बड़े २ व्रणों के लिये तथा स्थाणु के लिये गॉज़ के बन्धन इतने उपयोगी सिद्ध नहीं होते क्योंकि इनमें मलमल की भाँति अधिक दबाव नहीं डाला जा सकता। जहाँ पर कम दबाव की आवश्यकता हो, वहाँ पर गौज़ का ही बन्धन बाँधना चाहिये।

ब्लीचड गॉज़ (Bleached Gauze) हलकी सस्ती वा बाँधने में सरल होने से अच्छी समझी जाती है। गॉज़ भिन्न २ चौड़ाई की होती हैं। सबसे अच्छी वह है कि जिसके एक वर्ग इञ्च में ४० × ४४ धागे हों।

गॉज़ का बन्धन मलमल के बन्धन की अपेक्षा अधिक सछिद्र वा विरला होता है। अतः अधिक शीतल होता है और अंग पर पूर्णतया बैठ जाता है।



सप्लिन्ट वा स्थाई बन्धन

(Splints and Rigid Bandagas)

अस्थिभग्न या काण्डभग्न (Fractures) की चिकित्सा को तीन भागों में विभक्त किया गया है:—

खण्डों को पास पास ला कर संयुक्त करना और विरुपता को दूर करना ! इस क्रिया को **संयुक्त करना** कहते हैं !

(ख) जोड़ के पक्का होने तक खण्डों को पुनः पृथक होने से बचाना। इसको **स्थापन करना** कहते हैं।

(ग) अंग को निश्चेष्ट होने से बचाना और रुक्षता को दूर करना। इसको **मर्दन करना** कहते हैं।

चूंकि इस पुस्तक का विषय केवल 'बन्धन' वा उनकी 'निर्माण विधि' ही है। अतः खण्डों की **स्थापन क्रिया** पर ही प्रकाश डाला जावेगा।

(ख) खण्डों का स्थापन करना—

खण्डों के स्थापनार्थ सप्लिन्टों का प्रयोग किया जाता है। सप्लिन्ट बांधने के प्रति विद्वानों के भिन्न भिन्न मत हैं। कई चिकित्सकों की राये है कि अस्थि के टूटने पर शीघ्र ही सप्लिन्टों की सहायता से खण्डों को संयुक्त कर देना चाहिये। पर कईयों का कथन है कि जब तक अंग की शोथ न उतर जावे, सप्लिन्ट नहीं बांधने चाहियें। यह नियम शरीर के अन्य अंगों की अपेक्षा टांगों पर के भग्नों पर अधिक लागू है।

यदि अस्थि भग्न बिल्कुल नवीन है तो इस को झट ठीक कर सपलिन्ट लगा देने चाहियें, इस तरह पश्चात्-कालीन शोथ जो अस्थि भग्न के पश्चात् प्रायः देखने में आती है, रुक जावेगी। यदि दुघर्टना को हुए हुए कुछ घण्टे व्यतीत हो गये हों तथा अंग शोथ युक्त हो गया हो तो दोनों खण्डों का मिलना कठिन हुआ करता है। ऐसी दशा में स्प्लिन्टों को कस कर बांधने से अंग अधिक सूज जावेगा। ऐसी दशा में स्प्लिन्टों को ढीला ढीला बांधो ताकि अस्थि के खण्डित भागों को आश्रय रहे अथवा अंग को आराम से तकियों पर डाले रक्खो। शोथ के निवारण होते ही नियम पूर्वक स्प्लिन्ट बांध दो।

स्प्लिन्ट (Splints)—पहले लिखा जा चुका है कि अंग को तथा अस्थि के खण्डों को स्थापित करने के लिए स्प्लिन्टों का प्रयोग किया जाता है। ये आकारानुसार भिन्न भिन्न प्रकार के होते हैं। इन को बनाने के लिए गत्ता, लकड़ी, धातु, तार, जाली, गट्टा पर्चा, चर्म, पैरिसप्लास्टर, सिलोलायड तथा प्लास्टकादि को प्रयोग में लाया जाता है। आजकल दातव्य चिकित्सालयों में काष्ट अथवा धातु (टीन, लोहा) की बनी हुई खपच्चियाँ अधिक व्यवहृत होती हैं। प्रारम्भिक सहायता (Ist aid) में इन के अभाव पर साधारण वस्तुओं यथा रूल, जूता, बूट, छतरी, छड़ी, मोटा गत्ता, तलवार, बन्दूक की नाली, वृक्षों की छाल या तह की हुई पत्रिका द्वारा ही कार्य लिया जा सकता है।

गत्ता—इस के प्रति इतना कहना आवश्यक प्रतीत होता है कि इसको ऊर्ध्वशाखाओं के लिये प्रयोग नहीं करना चाहिये। इस पर चाहे कितनी भी स्थूल गद्दी क्यों न लगा दी जावे, इसकी सपाट तथा सख़्त-सतह से बहिर्गोल अंगों पर कुछ न कुछ हानि अवश्य होती है।

गट्टापर्चा (Gutta percha) यदि इसका सप्लिन्ट बनाना आवश्यक हो तो निम्न वर्णित विधि से बनाओ।

सर्व प्रथम काग़ज़ पर सप्लिन्ट का एक चित्र बनालो। इसको गट्टेपर्चे की चादर पर बिछा कर चारों ओर से थोड़ा थोड़ा बढ़ा कर कैंची से काट लो। एक बड़े पात्र में जल को उबालो, मलमल पर गट्टेपर्चे के टुकड़े को बिछा कर उसमें डाल दो। कोई सलवट न पड़ने पावे। जब वह नरम पड़ जावे तो निकाल कर ठण्ढा होने के लिये शीतल जल में डाल दो। जब वह इतना शीतल हो जावे कि रोगी की त्वचा उसको सहन कर सके। तब धीरे से उठा कर उक्त अङ्ग पर रख दो। अस्थि के खंडो को आपस में संयुक्त कर दो। यदि ऐसा न किया जावेगा तो उक्त बना हुआ ढाँचा निष्प्रयोजनीय सिद्ध होगा। गीली अंगुलियों से धीरे धीरे दबा कर सतह पर ठीक चिपका दो—तत्पश्चात् ऊपर से गीला ही बन्धन बाँध दो। जब शीतल हो जावे तो उतार लो और किनारों को छुरी से काट कर साफ़ कर दो। पृष्ठ पर कहीं २ छिद्र भी कर दो। सप्लिन्ट के नीचे रुई की गद्दी लगा कर उक्त अंग पर बाँध दो।

चम—इसको भी गट्टापर्चा की भाँति ही बांधा जाता है। इसको क़ागज़ पर खींची हुई लकीर से बढ़ा कर काटने की कोई आवश्यकता नहीं। सप्लिन्ट बनाने से पूर्व इसको उष्ण-जल तथा सिरका द्वारा मृदु कर लो।

प्रोप्लास्टक—सांचा बनाने से पूर्व इसको उष्ण-जल में डाल कर अथवा अग्नि द्वारा सिका कर नरम कर लो। यह थोड़े ही समय में शीतल हो कर दृढ़ हो जाया करता है। उतार कर किनारों को साफ़ कर दो तथा रुई आदि लगा दो।

पैरिस प्लास्टर या प्लास्टर ऑफ़ पैरिस—प्याले में डाले हुए उष्ण-जल में प्लास्टर को धीरे धीरे डालते जाओ तथा किसी डंडी से हिलाते जाओ, गाढ़ा श्वेत घोल तय्यार हो जावेगा। यदि टांग के लिये सप्लिन्ट बनाना हो तो इस तरह से बनाओ—

साफ़ फुलालैन के जुर्राब के आकार के दो ऐसे टुकड़े लो जो पांव से जानु के निम्न भाग तक आ सकें। बने हुए घोल में उनको तर कर लो। इन्हीं के सदृश दो और टुकड़े लो परन्तु ये दोनों टुकड़े पहिले टुकड़ों की अपेक्षा चारों ओर से लगभग चार अंगुल बढ़े हुए होने चाहिये। बड़े टुकड़ों पर घोल में सने हुए दोनों छोटे टुकड़ों को बिछा दो। भग्न को ठीक करके टांग को पसार दो। पांव को ऊपर की ओर सीधा रक्खो।

सावधानी से एक २ परत को टांग के पार्श्वों पर रक्खो और धीरे धीरे दबा कर त्वचा से चिपटा दो। शुष्क होने तक ऊपर से एक पट्टी को लपेटे रहो। फिर पट्टी को खोल

डालो और दोनों पर्तों को पृथक कर लो। इस तरह से दोनों सप्लिन्ट तैयार हो गये। किनारों को चुभने से बचाने के लिये नीचे वाली फलालैन के किनारों को ऊपर वाले टुकड़ों पर मोड़ दो। आर्द्रता जाती रहने पर इनको काम में लाओ।

धातु—टीन, एलोमीनम वा अन्य धातुओं की बनी हुई पतली पतली चादरों के सप्लिन्ट भी काम में आते हैं। चूंकि इनको झट से काटा नहीं जा सकता। अतः इनको अधिक काम में नहीं लाया जा सकता। यह स्मरण रहे कि इस प्रकार के सप्लिन्ट जो बने बनाये बाज़ारों में बिकते हैं, बड़े दृढ़ वा हलके होते हैं। यदि सप्लिन्टों का प्रयोग कई महीनों के लिये लगातार करना हो तो फिर धातु के बने सप्लिन्ट अधिक उपयोगी सिद्ध होते हैं। पसीना आने के लिये इनमें छिद्र होने चाहिये। इन पर रंग कर देना चाहिये, ताकि ज़ंग न लग जावे।

लकड़ी—इसके लिये देवदारु, चीड़ या कैल की दो सूत्र १/८ मोटाई की लकड़ी उत्तम समझी गई है—एक तो यह हलकी होती है और दूसरे चाकू या छुरी से सरलता पूर्वक काटी जा सकती है। तथापि यह कहा जा सकता है कि काष्ठ की बनी हुई खपच्चियाँ इतनी दृढ़ नहीं होतीं, जितनी कि धातु की बनी हुई खपच्चियाँ।

सप्लिन्ट का आकार—यद्यपि सप्लिन्टों का आकार शरीर के भिन्न २ भागों के लिये भिन्न २ होता है। तथापि ऊर्ध्व वा अधो शाखाओं के कांड भग्न में वा संधि भग्नों के लिये सीधी

लम्बी फट्टियों से ही काम लिया जाता है। संधियों के लिये दो फट्टियों के सिरों को आपस में इस तरह संयुक्त कर दिया जाता है कि दोनों से एक कोण बन जावे। इसका आकार आप आंगल भाषा के अक्षर ऐल (L) का सा समझो।

सप्लिन्ट पर गद्दी लगाना—इस प्रयोजन के लिये शण सूत्र, रुई या ऊन को काम में लाया जाता है। ऊन सर्वोत्तम समझी जाती है। गद्दी लगाने से पूर्व निम्न-लिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहियेः—

१. सप्लिन्ट शुद्ध वा साफ़ हो।

२. रुई या ऊन नरम वा धुनी हुई हो।

३. सप्लिन्ट के उस भाग पर, जो अस्थि पर विशेष दबाव डाले मोटी गद्दी लगाओ।

गद्दी दो विधियों से लगाई जा सकती है—

(क) गद्दी को पृथक बना कर सप्लिन्ट पर जोड़ना।

(ख) सप्लिन्ट के ऊपर ही गद्दी बनाना।

(क) शुद्ध साफ़ मलमल का टुकड़ा लो। उस को इतना लम्बा रक्खो कि उसकी दोहरी तह सप्लिन्ट की लम्बाई पर पूरी आ सके। उसकी एक थैली सी बनालो। थैली के भीतर रुई या ऊन की सम-स्तर जमादो। खुले किनारों को सीं डालो, गद्दी बन गई। सप्लिन्ट के अङ्ग की ओर के पार्श्व पर गद्दी लगा कर दो तीन स्थानों पर बारीक़ २ धागों से बाँध दो।

यदि आवश्यकता हो तो ऊपर से अक्लेद्य वस्त्र का भी एक टुकड़ा संयुक्त कर दो।

(ख) **दूसरी विधि**—सप्लिन्ट की उस पृष्ठपर कि जो अंग की त्वचा की ओर रहेगी, रुई या ऊन को इस भाँति बिछाओ कि किनारे भी थोड़े आवृत हो जावें। बहुत रुई रखने का प्रयत्न मत करो, क्योंकि मोटी गद्दी रोगी के कष्ट का कारण हो सकती है। सब की सब को मलमल या लिन्ट से आवृत कर दो। इसके बढ़े हुए किनारों को खपची से नीचे की ओर मोड़ दो। तीन-चार स्थानों पर पतले पतले धागे लपेट दो। इस प्रयोजनार्थ उसी वस्त्र में से कुछ एक सूत्र खींच लेने चाहिये।

प्रयोजन समाप्ति पर अथवा कुछ दिवस प्रयोग करने के पश्चात् जब पट्टी खोली जावे तो गद्दी को उतार कर बदल लेना चाहिये।

त्वचा को शुद्ध करना—सप्लिन्ट बांधने से पूर्व त्वचा को साबुन वा जल द्वारा धोकर शुद्ध कर दो। सूखने पर इस पर बेसन, गेहूं का स्टार्च या बोरिक एसिड या तोख़ाख़ीर को मल देना चाहिये। त्वचा पर खुजली पैदा न होगी।

इन खपचियों की चौड़ाई इतनी हो कि बाहु या टांग इत्यादि को ढांप कर किनारों पर थोड़ी २ बढ़ी रहें—इससे बन्धन दृढ़ता पूर्वक बाँधा जा सकेगा। यदि चौड़ाई अल्प होगी तो अंग बीच में घूम जावेगा। तथा खण्ड पुनः पृथक २ हो जावेंगे। पश्चात् नियमानुसार पट्टी बाँध दो।

तत्रातिशिथिलं बद्धे संधि स्थैर्य्यं न जायते ।
गाढे नापित्वगादीनां शोफो रुक् पाक एवच,
तस्मात्साधारणं बन्धं भग्नेशं सन्तितद्विदः ॥

(सुश्रुत—चि० स्थान अ० ३)

इस श्लोक का अर्थ यह है कि ढीला बन्धन करने से पट्टी खिसक जाती है तथा खण्ड अलग हो जाते हैं। कसकर बांधने से शोफ, पीड़ा वा पाक होने लगता है। इस लिये भग्न में अस्थि खण्डों को स्थापित करने के लिये न तो शिथिल ही और न कस करके ही बन्धन बाँधो।



दृढ़ वा स्थाई बन्धन

(Rigid Bandages)

इस शीर्षक में उन बन्धनों का उल्लेख किया जावेगा, जो स्प्लिन्ट वा पट्टी दोनों का ही काम देते हैं। इन के लिए श्वेतसार (स्टार्च), पैरिस-प्लास्टर, सिलिका अर्थात् वाटर-ग्लास (Water Glass) का अधिक प्रयोग किया जाता है। स्थाई बन्धन बालकों के लिए अधिक उपयोगी हैं।

स्टार्च (श्वेतसार) तथा सिलिका बन्धन—स्टार्च बन्धन के लिए साधारण श्वेत सार, और सिलिका बन्धन के लिए सिलीकेट आफ सोडा (Silicate of Soda) प्रयोग में लाया जाता है। यह दोनों बन्धन वहां प्रयोग किये जाते हैं कि जहां अधिक दृढ़ता की आवश्यकता न हो। अंग को भली प्रकार से ऊन या रुई से आवृत कर दिया जाता है और पतले गत्ते के टुकड़ों को स्टार्च के घोल में भिगो कर अंग के ऊपर लगा दिया जाता है। इन को स्वस्थान पर रखने के लिए स्टार्च में भीगे हुए बन्धन (पट्टी) को लपेट दिया जाता है और सब से ऊपर एक और पट्टी, जिस की नीचे की पृष्ठ घोल में सनी हुई है लपेट दी जाती है। शुष्क होने पर स्प्लिन्ट सा बन जाता है। यह इतना लाभकारी नहीं जितना कि प्लास्टर आफ़ पैरिस। इस के कई एक कारण हैं—प्रथम तो यह शुष्क होने में अधिक समय लेता है, द्वितीय शुष्क होने पर शीघ्र ही स्वस्थान से हिल जाता है, जिस से त्वचा को

अत्यन्त हानि होने की सम्भावना है। रोगी को किसी प्रकार की पीड़ा या कष्ट के प्रतीत होने पर बन्धन को खोल देना चाहिये और पुनः बन्धन बांधना चाहिये अथवा छेद कर के एक ओर अथवा दोनों ओर से थोड़ा थोड़ा ढील कर पुनः कस देना चाहिये।

प्लास्टर आफ़ पैरिस बन्धन—(Gypsum Bandage) प्लास्टर आफ़ पैरिस ताज़ा और बारीक होना चाहिये। अंग को जब अधिक समय के लिए निश्चेष्ट रखना हो तो इस का प्रयोग सब से उत्तम है।

पतली मलमल की लम्बी लम्बी धज्जियां बना लो। इन धज्जियों को या तो प्लास्टर के बने हुए घोल में सान कर ढीले से बेलन बना लो या पहले ही बेलन बना कर घोल में छोड़ दो। त्वचा को साफ़ करो और बेलन को अंग पर लपेटना आरम्भ करो। नंगी त्वचा पर कभी न लपेटो; अतः इस को लगाने से पूर्व फलालैन की एक साधारण, पट्टी अंग पर लपेट देनी चाहिये। और त्वचा पर वैज़लीन लगा देनी चाहिये। इस में किसी प्रकार की सलवट या मोड़ न पड़ने पावें। कई वैद्यवर टांगों पर जुराबें तथा मध्य शरीर पर एक विशेष प्रकार की जरसी पहना कर ही काम निकाल लेते हैं।

प्लास्टर का बन्धन लपेटते समय घोल को हाथ से भी चुपड़ते जाना चाहिये, ताकि कोई भाग शुष्क न रह जावे।

समाप्ति पर अंग को कुछ देर सहारे रक्खो ताकि प्लास्टर शुष्क हो जावे और खण्डों को दृढ़ता से स्वस्थान पर रखने के योग्य हो सके।

सव्रण भग्न (सक्षतास्थि भंग Compound fracture) में कभी कभी थोड़ी सी कठिनता प्रतीत होती है और है भी ठीक क्योंकि व्रण को नित्य प्रति प्रतिकीट औषधियों से धो कर ड्रैसिङ्ग करनी पड़ती है। ऐसी दशा में व्रण के ऊपर के बन्धन को तेज़ चाकू से काट कर आवश्यकतानुसार गोल या चौकोर छिद्र कर लो जिस के बीच में से व्रण सरलता से साफ़ किया जा सके। बन्धन बांध ने से पूर्व व्रण पर गॉज़ इत्यादि रख देनी चाहिये और उस को सीमाबद्ध कर ने के लिए व्रण के स्थान को इरद-गिर्द से नाप कर लिख लेना चाहिये, ताकि छिद्र कर ने में कोई विशेष भूल न हो जावे। कई कल्पना मात्र से ही छिद्र बना लिया करते हैं, पर यह भूल है। छिद्र के किनारों पर टिंक्चर बैन्ज़ायन (Tincture Benzoin) लगा देनी चाहिये ताकि प्लास्टर गीला हो कर उखड़ न जावे। प्लास्टर को फटने से बचाने के लिए ऊपर आटे की लेई या अंडे की सफेदी का लेप कर देना चाहिये।

पैरिस प्लास्टर बन्धन का काटना—(To cut through a Gypsum splint or Bandage)—

इन को काटने के लिए कई प्रकार की कैंचियाँ वा आरियां बनी हुई हैं। इनमें से कई तो अधिक उपयोगी नहीं होती।

सम्मिन्ट के कुछ एक भागों पर तो इन से काम लिया जा सकता है पर यदि वह अस्थि के बिल्कुल ही ऊपर हो अथवा अंग के अन्तोदर भाग पर हो तो रोगी को बहुत कष्ट होता है। अतः कैंची से उक्त बन्धन को काटना कठिन हो जाता है। तेज़ धार वाला चाकू या छुरी सब से उत्तम होती है।

जिस रेखा पर के बन्धन को काटना हो, उसी रेखा पर जल में भिगोये हुए रूई के फॉहे को फेर दो। चाकू की धार से इस पर एक लकीर बनाओ, बहुत कम दबाओ डालना चाहिये। चाकू को दोबारा फिर उसी रेखा पर ले जाओ। इस समय पहले की अपेक्षा तनिक अधिक दबाओ देना चाहिये। रूई के फॉहे से रेखा को गीली कर दो। अब तीसरी बार जब चाकू चलाया जावे तो धार को एक ओर को तिरछा रक्खो और चौथी बेर उस के विपरीत दूसरी ओर को। इस तरह से प्लास्टर में एक झरी बन जावेगी। इस से यह लाभ है कि यदि चाकू की धार गहरी चली जावे तो वह प्लास्टर में फंसने न पावेगी। ऐसा कई बार करो, ताकि प्लास्टर की सर्व स्तर कट जावे और धार फलालेन या रूई तक पहुँच जावे। फलालैन या रूई की तह चाकू की धोर को त्वचा पर लगने से रोकेगी, पर यदि अधिक बल पूर्वक वा तेज़ी से काम लिया जावे तो यह कट सकती है। इस विधि द्वारा टांग, बाहु या पांव पर के बन्धन को दो चार मिन्टों में काटा जा सकता है।

प्रथम कटने वाले स्थान पर यदि हलका हाईड्रोक्लोरिक अम्ल (Hydrochloric acid) लगा दिया जावे तो काटने में और भी सरलता होगी।

ऊर्वस्थि के प्रति कई विद्वानों की सम्मति है कि वृद्ध पुरुषों में टाँग पर प्लास्टर आफ पैरिस का बन्धन लगा कर रोगी को कुक्षि-यष्टि (Crutches) के सहारे चलने फिरने की आज्ञा दे देनी चाहिये।

प्लास्टर-आफ़-पैरिस जैकट (Gypsum jacket)— पृष्ठ-वंश कभी कभी एक ओर को झुक जाया करता है (Curvature of Spine)। इस वक्रता को ठीक करने के लिये पैरिस प्लास्टर की जाकट बना कर कुछ समय के लिये पहनाने की आवश्यकता पड़ती है। जाकटें कई प्रकार की बनाई जाती हैं—

(१) गौवेन महाशय ने इस पर एक लेख लिखा है, जिस का सारांश यह है—

रोगी को कमर तक नंगा करो। फलालैन की एक पतली सदरी पहना दो, यह सदरी कमर तक आनी चाहिये। कसने के लिए दो फीते नीचे के किनारे पर लगा कर ऊरवों के मध्य से निकाल पीछे सदरी से ही बांध दो। रोगी को त्रिपाई-यन्त्र (त्रिपाद्-यन्त्र) के नीचे खड़ा करो। यन्त्र का आकार नाम से ही प्रगट है। इसके नीचे एक सीधी शिलाखा लगी होती है जिसके साथ स्कन्धों वा ग्रीवा को ऊँचा करने के लिये बंध लगे होते हैं। शिलाखा एक चरखी द्वारा ऊपर तथा नीचे को

जा सकती है—अस्तु, बाजु आवश्यकतानुसार ऊपर या नीचे किए जा सकते हैं। उन बन्धनों को स्कन्धों, ठोढ़ी वा पश्चात् उभार के नीचे से गुज़ार कर यहाँ तक खींचो कि एड़ी ऊपर तक उठ आवे और अंगुलियां फर्श पर लगी रहें। पट्टी जो पूर्व से ही प्लास्टर आफ पैरिस के बने हुए घोल में रखी हुई थीं निकाल लो। बेलन के दोनों सिरे पकड़ कर निचोड़ दो, ताकि अनावश्यक जल निकल जावे परन्तु प्लास्टर न निकलने पावे। पट्टी का ऊपर का सिरा रोगी के दाहिने श्रोणि कपाल धार के तनिक नीचे लगा दो। कुण्डली बन्धन बाँधते हुए ऊपर तक चले जाओ। प्रत्येक लपेट देने के पश्चात् प्लास्टर चुपड़ते जाओ आरम्भ से अन्त तक कोई मोड़ न दो। बारह-बारह फुट लम्बी छः इञ्च चौड़ाई की दो अथवा तीन पट्टियाँ पर्याप्त हैं। सांचे का दबाव श्रोणि की अस्थि पर बिलकुल न पड़ना चाहिये, अन्यथा रोगी को अधिक कष्ट होगा।

स्कन्धों को खूब पीछे की ओर दबा कर बन्धन को छाती तथा पृष्ठ पर से कई बार आगे पीछे ले जावे। जब सहारे के लिये काफी लपेट दिये जा चुकें तो उनको स्थिर रखने के लिये एक बन्धन कक्षा के तले से आरम्भ करके छाती तथा पृष्ठ पर दो तीन लपेट लगा दो और ऊपर से प्लास्टर चुपड़ दो। अब इसी बन्धन को ऊपर ले आओ और ग्रीवा पर कुछ एक लपेट देकर माथे वा पश्चात्-उभार के नीचे से दो एक चक्कर देकर समाप्त करो तथा प्लास्टर चुपड़ दो। इस बात के लिये कि

श्वास-प्रश्वास में कुछ बाधा न पड़े वक्ष तथा उदर को ढांपने वाले भाग को काट कर निकाल देना चाहिये।

त्रिपाद्-यन्त्र से उतार कर रोगी को तख़्त पर मुख के बल लिटा दो। यह जाकट कम से कम २-६ मास तक पहनानी पड़ती है।

बच्चे को त्रिपाद्-यन्त्र से लटकाने की कोई आवश्यकता नहीं। वैसे ही एक सहायक उसके दोनों हाथों को शिर के ऊपर खींच कर खड़ा रख सकता है।

जैसा पहले भी बताया जा चुका है कि नंगी त्वचा पर कभी भी प्लास्टर बन्धन प्रयोग न करो अतः उसके नीचे फलालैन की पट्टी लपेट देनी चाहिये।

कई चिकित्सकों के मत में ग्रीवा के पीछे से बन्धन लेजाने की कोई आवश्यकता नहीं, मोढों पर से गुज़ार देना ही पर्याप्त है।

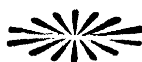
द्वितीय विधि—दो फलालैन के ऐसे टुकड़े लो जिन में से प्रत्येक वक्ष, उदर तथा पृष्ठ को पूरा आवृत कर सके। उसी के समान बाँस की बनी हुई पतली सिरकी (चिक) लो। फलालैन के दोनों टुकड़ों के मध्य में रख कर किनारों को सीं दो ताकि बाँस की चिक भीतर से न निकल सके। रोगी को वैसे ही त्रिपाद्-यन्त्र से लटका दो और इसको पृष्ठ पर से लपेट दो। वहीं थाम कर ऊपर से प्लास्टर की पट्टी लपेट दो। उदर पर बन्धन के नीचे एक तौलिये का गुच्छा बना कर रख देना

चाहिये ताकि पश्चात् उसको निकाल लिया जावे और आमाशय को फैलने का स्थान मिल सके। यह जाकट पूर्व बताई हुई जाकेट की अपेक्षा अधिक दृढ़ रहती है तथा पृष्ठ वंश के दबाव से बन्धन में सलवटें पड़ने की सम्भावना बिलकुल जाती रहती है।

प्लास्टर आफ पैरिस के अतिरिक्त सिलोलायड तथा प्रोप्लास्टक भी प्रयोग में लाये जाते हैं। कई चिकित्सक इस कार्य के लिये प्लास्टर की अपेक्षा प्रोप्लास्टक को अच्छा गिनते हैं। इसका कारण यही ज्ञात होता है कि पैरिस प्लास्टर की जाकट आवश्यकता के समय बदलने में थोड़ी सी कठिनता पड़ा करती है।

वाटर-ग्लास बन्धन—यह सिलिकेट आफ सोड़ा द्वारा बाँधा जाता है। इस का उल्लेख स्टार्च बन्धन के साथ साथ कर दिया गया है।

पैराफीन बन्धन—यह भी स्थाई बन्धनों के लिये अधिक प्रयोग किया जाता है। यह शीघ्र ही शुष्क होकर दृढ़ हो जाता है और व्रण की पीप इत्यादि से ख़राब नहीं होता। यदि यह फट जावे तो एक शिलाखा को गरम करके तरेड़ के ऊपर से फेर दो। पैराफीन पिघल कर टूटे हुए स्थान को भर देगा।



व्रण--परिष्कार

(Surgical Dressings)

कपास (Cotton)—कच्ची रुई में तेल वा गूंद होता है, अतः उस में पानी को जज़्ब करने की शक्ति बहुत ही कम होती है। यदि इसके तैल वा गूंद को विशेष रासायनिक उपायों द्वारा दूर कर दिया जावे तो इसकी शोषण शक्ति बढ़ जाती है। चूंकि रुई हलकी, सुलभ तथा इसके तन्तु दृढ़ होते हैं और शीघ्र ही बाष्प या उष्णता से निष्कीट की जा सकती है। अतः शस्त्र क्रिया में व्रणों को पोंछने के लिये तथा रोपण क्रिया में उनके स्राव या पीपादि को शोषण करने के लिये अधिक काम में लाई जाती है।

धुनी हुई रुई—इसको धुनी हुई कपास भी कहा जाता है यह भी पानी को जज़्ब नहीं कर सकती। पर शोषक रुई की अपेक्षा अधिक नरम होती है। स्प्लिन्टों पर गद्दी बनाने के लिये इसको अच्छा समझा जाता है। प्रयोग करने से पूर्व इसको भाप द्वारा निष्कीट कर लेना चाहिये।

शोषक रुई (Absorbent Cotton)—इसके बँधे बंधाये पैकिट बाज़ार में मिल सकते हैं। इसमें धूल, गूंद वा तैल कुछ नहीं होता। शुष्क रुई (dry cotton) को व्रणके साथ नहीं लगाना चाहिये। शस्त्र क्रिया के समय यदि इसको व्रण के साथ लगा दिया जावे तो इस के तन्तु चिकित्सक की अंगु-

लियों के साथ तथा व्रणों की पृष्ठ पर चिपक सकते है। यदि इसको अन्य व्रणों पर लगा दिया जावे और अगर स्राव अल्प होगा तो वह वाष्प रूप से उड़ जावेगा। रुई के तन्तु व्रण पर दृढ़ता पूर्वक चिपक जावेंगे। त्वचा पर पीप के खुशक हो जाने से एक खरिंड सा बन जावेगा जिसको कठिनता से दूर किया जा सकेगा। रुई के छोटे २ फंवों को धावन में भिगो कर निचोड़ लेना चाहिये। इस तरह वे न तो व्रण पर चिपकेंगे और न ही चिकित्सक की अंगुलियों पर। वा रक्त को अच्छी तरह जज़्ब करेंगे।

रोपित व्रणों पर यदि शोषक रूई को रख कर पट्टी बांधनी हो तो इस के नीचे गॉज़ की एक दो तह रख देनी चाहियें। अथवा रूई के आवश्यक फोहे को गॉज़ से आवृत कर देना चाहिये। यदि रूई के साथ गॉज़ का प्रयोग किया गया हो तो फिर फॉहे को गीला करने की आवश्यकता नहीं होती।

शस्त्र क्रिया के समय यदि ऐसी परिष्कार करनी हो तो इस को बहुत स्थूल बनाने का प्रयत्न नहीं करना चाहिये। क्योंकि स्थूल परिष्कार स्राव की अधिक मात्रा को ज़ज़्ब कर सकती है। कभी कभी ऐसा होता भी देखा गया है कि ऐसी परिष्कार में रक्तपात का रक्त जज़्ब होता रहता है तथा चिकित्सक इस बात से सर्वथा अनभिज्ञ रहता है।

यद्यपि शोषक रूई के पैटिक निष्कीट किये हुए बिकते हैं और उन पर 'निष्कीट' का शब्द लिखा भी होता है। तथापि शस्त्र वैद्य को चाहिये कि प्रयोग करने से पूर्व इसको शुद्ध वा निष्कीट कर ले। ऊपर के कागज़ को उतार कर वा मलमल में लपेट कर भाप द्वारा निष्कीट कर लेना चाहिये। पैकिट को ढीला ढीला लपेटना चाहिये।

गॉज़ (Gauze) व्रण-परिष्कारों में ब्लीच्ड शोषक-गॉज़ (Bleached Absorbent Gauze) की अधिक प्रधानता है। गॉज़ की शक्ति वा दृढ़ता उस के एक वर्ग इञ्च में ताने बाने के सूत्रों की संख्या पर निर्भर है। प्रति वर्ग इञ्च २४ × ३२ सूत्रों वाली गॉज़ सम्मार्जनी, स्पंज वा परिष्कार के लिए उत्तम होती है, पर पट्टी के लिए इतनी उपयोगी नहीं होती। प्रति वर्ग इञ्च ४४ × ४० सूत्रों वाली गॉज़ पट्टियों के कार्य के लिए उत्तम होती है। स्पंज वा परिष्कार के लिए महंगी है।

अधिक खुली २ वा सछिद्र गौज़ को स्पञ्ज वा परिष्कार में व्यवहृत करना भी कोई बुद्धिमत्ता नहीं। चूंकि ऐसी गॉज़ में जज़्ब करने का गुण कम होता है अतः प्रत्येक बार इसको अधिक अधिक लेना पड़ेगा।

गॉज़ के स्पंज (Gauze Sponges)—तीन वर्ग फीट गॉज़ से सोलह छोटे छोटे स्पञ्ज बन सकेंगे। यदि कुच्छ बड़े बड़े स्पञ्ज बनाने हों--तो तीन फीट गॉज़ के टुकड़े को चार बराबर बराबर धज्जियों में काट लो और प्रत्येक धज्जी को

तीन तीन टुकड़ों में—इस तरह पर बारह स्पञ्ज बन सकेंगे।

गाज़ की धज्जियां (Gauze in Strips) एक गज़ या दो गज़ लम्बी गॉज को लम्बाई के रुख़ तीन बार तह करलो। इस तह पर प्रत्येक धज्जी ४॥ चौड़ी और आठ तह मोटी बन जावेगी। धज्जी को पृथक २ बेलन के रूप में लपेट लो और मलमल से आवृत कर भाप द्वारा निष्कीट कर लो।

त्वचा को सुरक्षित करने के लिए निष्कीट वा शुद्ध तौलियों की आवश्यकता हुआ करती है। पर छोटे व्रणों के सम्बन्ध में इन निष्कीट धज्जियों से प्रयोजन सिद्ध हो जाता है।

मलमल (Muslin)—यह व्रण बन्धन, रूमाल तथा प्राथमिक सहायता के परिष्कार में काम आती है। पट्टियों के लिए बढ़िया मलमल की आवश्यकता नहीं—घटिया मलमल यथेष्ट दृढ़ होती है। दो आने गज़ वाली मलमल पर्याप्त है। गॉज के बन्धन की अपेक्षा मलमल के बन्धन में बहुत सी विशेषताएँ हैं यथा, यह अधिक दृढ़ वा अस्थाई होता है। यह शीघ्र ही ख़राब वा मैला होने नहीं पाता। इसको धो कर पुनः बाँधा जा सकता है।

फलालैन—पट्टियों के बढ़िया वा बारीक बुनी हुई फलालैन लेने की आवश्यकता नहीं। इसमें केवल यह देखना होता है कि वह केवल ऊन की ही बुनी हुई हो। चूंकि फलालैन मँहगी होती हैं, अतः कई चिकित्सक इसकी पट्टियां

बनाना पसन्द नहीं करते। फलालैन को सरलता पूर्वक ही धोया वा साफ किया जा सकता है। धोने के लिए मन्दोष्ण-जल (Luke warm water) वा हलके साबुन को प्रयोग में लाना चाहिये। फलालैन टाँगों पर के पुरातन व्रणों के लिये विशेष उपयोगी है। जहाँ तक भो हो सके श्वेत फलालैन ही लेनी चाहिये तथापि लाल रंग की फलालैन भो हानिकारक नहीं है। किन्तु कभा कभी उसका लाल रंग त्वचा में लग जाता है।

रेशम—कई धनाढ्य व्यक्ति अपने हाथ या शिर के व्रणों पर बाँधने के लिये श्वेत मलमल की अपेक्षा काले रेशमी वस्त्र की पट्टी ही अधिक पसन्द करते हैं। यद्यपि काली मलमल्ल से भी काम निकल सकता है, पर जब कि रोगी इसको अपनी जेब से मोल लेता है, तो फिर इसमें चिकित्सक को कोई विशेष आपत्ति नहीं होनी चाहिये। काले रेशम का बुना हुआ २ इञ्च चौड़ा फ़ीता इसके लिये पर्याप्त होगा।

रबड़—बन्धन को लचकदार बनाने के लिए इसको दो तरह से प्रयोग में लाया जाता है। रबड़ की लम्बी चौड़ाई में से आवश्यक चौड़ाई की पट्टी काट लेनी चाहिये और उसका बेलन बना लेना चाहिये।

इसके प्रति एक बात स्मरण रखनी चाहिये कि यह पसीने को उड़ने से रोकता है। अतः यदि इसको बहुत दिनों के लिये बाँधना हो तो इसे प्रत्येक रात्रि को खोल देना चाहिये ताकि

इसको वा त्वचा को धोया जा सके।

गट्टा परचा टिष्यु (Gutta percha tissue)—इसकी बनी बनाई एक वर्ग गज़ की चादर बाज़ार से मिल सकती है। यह हलकी, भारी भी होती हैं। अतः इनका मूल्य भी भिन्न २ होता है।

यह मसाम रहित होता है। अतः पानी इसमें से निकल नहीं सकता। मसाम रहित पट्टियों में से इसकी पट्टी सर्वोत्तम है। क्योंकि यह त्वचा, व्रण या श्लैमिक कला पर किसी प्रकार की भी जलन पैदा नहीं करती और साथ ही व्रण के साथ चिपकने भी नहीं पाती। जले हुए स्थान पर तथा उन व्रणों पर जिनमें पेवंद (Skin grafting) लगाई हो विशेष उपयोगी है। क्योंकि इससे व्रण की सतह कुछ आर्द्र रहेगी और परिष्कार के साथ चिपकने न पावेगी। इसको जल में उबाल कर निष्कीट नहीं किया जा सकता। क्यों कि यह तनिक सी उष्मा (शारीरिक ताप से तनिक ऊपर) से ही सिकुड़ जाता है। प्रयोग करने से पूर्व इसको मरकरी के तेज़ धावन में डुबो कर निष्कीट कर लेना चाहिये और व्रण पर रखने से पूर्व इसको शुद्ध लवणाम्बु या शुद्ध निष्कीट जल से धो लेना चाहिये।

स्निग्ध मलमल, रेशमी वस्त्र वा कागज़—ये लचकदार वा अर्ध पारदर्शक होते हैं। तथा पुलटिस या प्रलेपादि को शुष्क होने से बचाते हैं, यदि आर्द्र परिष्कार को (Wet

dressing) की गई हो तो इससे रोगी के वस्त्रों को भीगने से रोकते हैं। कभी कभी इसी प्रयोजन के लिये केले के पत्र को भी काम में लाया जाता है। पत्र को लवणाम्बु से भली प्रकार धो डालना चाहिये और चौबीस घण्टों में दो बार इसको बदल डालना चाहिये। अधिक देर तक रखने से यह सड़ जाया करता है।



आचार्य धन्वन्तरि मण्डल के

कुछ अन्य चित्ताकर्षक पुष्प

कपूरथला स्टेट के सुप्रसिद्ध वैद्य श्रीयुत कविराज शिवशरण जी वर्मा, वैद्यरत्न, आयुर्वेद विशारद, भिषगाचार्य धन्वन्तरि, शस्त्र चिकित्सा में पदक प्राप्त, द्वारा सरल हिन्दी भाषा में लिखित, आयुर्वेद सम्बन्धी, अत्यन्त उपयोगी, लाभप्रद, सुन्दर, सरल व सचित्र पुस्तकें—जिन्होंने कि आयुर्वेद संसार में एक दम धूम मचा दी है:—

I **फेफड़ों की परीक्षा वा उनके रोग**—कागज़ बढ़िया, चिकना, लिखाई छिपाई अत्युत्तम, भाषा वा परिभाषा सुबोध, विषय सरल, स्पष्ट वा सुगम, कुल पृष्ठ संख्या लगभग २००, मूल्य केवल १॥)।

पुस्तक को दो भागों में बाँटा गया है। पहले भाग में फेफड़ों की रचना, उनकी परीक्षा (यथा दर्शन करना Inspection, स्पर्श करना palpation, टकोरना—percussion, शब्द परीक्षक यन्त्र द्वारा परीक्षा करना—Auscultation) और थूक का विस्तार पूर्वक विवरण दिया गया है। इस बात पर भी पूर्ण प्रकाश डाला गया है कि किस रोग में कैसा थूक आता है। दूसरे भाग में फुप्फुस के रोगों का उल्लेख है। प्रत्येक विषय को बड़ी उत्तमता से दर्शाया गया है। अधिक ज़ोर रोग निर्णय पर दिया गया है, जिसकी कि आयुर्वेद के

विद्यार्थियों को बड़ी कठिनता प्रतीत हुआ करती थी। यही कारण है कि इस पुस्तक को आयुर्वेद विद्यालयों वा महाविद्यालयों के विद्यार्थी बड़े चाव से पढ़ते हैं। अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं, नीचे की सम्मतियों को पढ़ लीजियेः—

(1) "I went through the manuscript 'Examination and Diseases of the Lungs' by name. The portion dealing with the Examination of the Lungs has been very nicely and ably dealt with. The rest of the book concerning with the diseases, proves the ability and the sense of investigation or research of Author. In short I will say that it will prove to be a very useful tribute for the students reading in any Ayur Vedic College or School."

A. & U. Tibbi College, Delhi
25th Feb ; 1928.

S/d. A. B. Basu,
B. Sc., M. B.,
Professor of Medicine

फुप्फुस परीक्षा तथा उसके रोग नाम की पुस्तक को मैंने आरम्भ से अन्त तक देखा। फेफड़ों की परीक्षा सम्बन्धी विषय बड़ी ही उत्तमता से दर्शाया गया है। शेष भाग जिसमें कि रोगों का सविस्तार ब्यौरा है, लेखक महोदय की योग्यता को प्रगट करता है। विषय सरल, स्पष्ट वा खोज पूर्ण है। अन्त में मैं यही कहूंगा कि यह पुस्तक आयुर्वेद के प्रत्येक विद्यार्थी के

लिये, चाहे वह किसी भी आयुर्वेद कॉलेज या स्कूल में पढ़ता हो—अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

आयुर्वैदिक वा यूनानी तिब्बी कालिज देहली २५-२-२८

ए. बी. वासु
बी. एस. सी. एम. बी,
प्रोफेसर आफ मैडीसन

(2) "Portions of the text book were read over to me by the author. I am quite confident that this book will be a great help to the beginners. I recommend that this book may be widely read by the students and practitioners of Ayru Veda."

Delhi
23-2-28.

S. N. Abbas
Principal A. & U. Tibbi College

लेखक महोदय ने पुस्तक का अधिकांश मेरे पास बैठ कर पढ़ा। मुझको पूर्ण विश्वास है कि यह अमूल्य रत्न विद्यार्थियों के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। मैं इसकी पूरी प्रशंसा करता हूँ और विद्यार्थियों एवम् चिकित्सकों से अनुराध करूंगा कि वे इससे लाभ उठावें।

एस. एन. अब्बास
परिन्सीपल
आयुर्वैदिक यूनानी तिब्बी कालिज

देहली
२३-२-२८

——:*:——

(३) भिषगाचार्य धन्वन्तरि श्रीमान् शिवशरण जी वर्मा कृत "फेफड़ों की परीक्षा तथा उनके रोग" नाम की पुस्तक को भली प्रकार देखा। इसको नवीन मतानुसार लिखा गया है।

और आयुर्वेद के साथ तुलना करते हुए विषय को सुगम बनाने के लिये चरक, सुश्रुतादि संहिताओं के प्रमाण भी दिये गये हैं। इस पुस्तक को पढ़ने से विद्यार्थी तथा वैद्य सब को ही सरलता से आधुनिक चिकित्सकों के मत का भी परिचय हो जावेगा। जिस से कि अपने कार्य में विशेष सहायता मिलेगी।

मैं श्रीमान् जी के इस उद्योग की प्रशंसा करता हूं और आशा करता हूं कि ऐसी और भी उपयोगी पुस्तकें लिख कर तथा प्रकाशित करके वैद्य, विद्यार्थी तथा जनता का उपकार करेंगे।

ए० यू० तिब्बी कालेज
देहली
२०-१-२८

कविराज श्री उपेन्द्रनाथ दास
काव्य, व्याकरण, सांख्यतीर्थ
सांख्य सागर, भिषगाचार्य, प्रोफेसर

——:*:——

(४) कविराज शिवशरण वर्मा फगवाड़ा (पंजाब) निवासी ने कई पुस्तकें तथा "फेफड़ों की परीक्षा वा रोग" मूत्र परीक्षा आदि सरल आर्य भाषा में पाश्चात्य मतानुसार लिखे हैं। जहां कहीं सम्भव था वैद्यक मत तथा चिकित्सा पद्धति भी दर्शाई गई है। ऐसी पुस्तकों की आज कल बड़ी आवश्यकता है, जिसे पूर्ण करने का सफल प्रयत्न कविराज शिवशरण वर्मा जी कर रहे हैं। मैं उन्हें इस प्रयास के लिये धन्यवाद देता हूँ।

लाहौर (आयुर्वेद-संदेश)
११ आषाढ़ १९८५ वि

पं० सुरेन्द्रमोहन बी. ए.
आयुर्वेदाचार्य
प्रिन्सिपल दयानन्दायुर्वेदिक कालिज (सम्पादक)

——:*:——

Raj Vaidya House

(५) श्रीमान् वैद्य जी, १५-६-२८

आप का लिखा हुआ "फेफड़ों की परीक्षा" नामक पुस्तक मिली। इसका दूसरा भाग भाषा पढ़ने वालों के लिए तो विशेष हितकारी है। आप का परिश्रम सराहनीय है।

प्रधान प्रथम पंजाब प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन लाहौर, (२३, २४, २५ मार्च १६२८)

पं० रामप्रसाद वैद्यरत्न राजवैद्य पटियाला स्टेट

——:*:——

६. श्रीयुत् डाक्टर रामनारायण साहिब देहली अपनी मासिक पत्रिका "Practical Medicine" के सितम्बर मास १६२८ के परचे में १८७ वें पृष्ठ पर लिखते हैं—

"(1) Phephron ki Priksha (Eamination and Diseases of the Lungs.)" "(2) Mutr Priksha (Urine test)."

Author—Kj. Shiv Sharan Varma:—

These two books have been writen in Hindi language for the benefit of students and Ayurvedic Practitioners. The fact that these are favourably remarked by professors and teachers of the Ayurvedic and Unani Tibbi College, Delhi, leaves no doubt about their usefulness. The first book "Examination and Diseases of the lungs" deals thoroughly with

the methods of examination of this all important organ and the useful subject matter concerning the diseases shows that writer is a man of ability, possessing uptodate knowledge and fond of Research work.

The second book 'Urine Test' is not a translation of any particular modern English book but the Author has compiled in Hindi the varied materials gathered from works of eminent Western specialists. No one can deny that recent discoveries in Urine Testing are both easy and accurate and the Ayur Vedic practioners will find themselves well advanced in their work if they are fully cognizant of these methods and will be successful if they adopt these in their practice."

७. 'महारथी' देहली:—

पुस्तक उपयोगी तथा शिक्षाप्रद है। भाषा इतनी रोचक वा सरल है कि सर्व साधारण भी लाभ उठा सकते हैं। फेफड़ों की परीक्षा सम्बन्धी विषय बड़ी उत्तमता से लिखे गये हैं। पुस्तक विद्यार्थियों के लिये विशेषतः उपयोगी है। आशा है कि भविष्य में ऐसी और भी उपयोगी पुस्तकें लिख कर तथा प्रकाशित कर के कविराज जी सर्व साधारण को लाभ पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे। ऐसे सुन्दर उपहार के लिये हम लेखक को बधाई देते हैं। (मार्च वा मई १९२८)

८. 'अनुभूत योगमाला' बरालोकपुर, इटावा—

इस पुस्तक में फेफड़ों का बनाव वा उसके रोगों की परीक्षा आदि विषयों का उल्लेख है। पुस्तक नवीन है प्रत्येक को इसे देख कर लाभ उठाना चाहिये। (अङ्क ६–वर्ष ७–८)

९. 'वैद्य' मुरादाबाद—

वर्तमान आयुर्वेद में फुप्फुस हृदयादि अंगों का वर्णन अत्यन्त सूक्ष्म और सूत्र रूप से लिखा गया है किन्तु डाक्टरी चिकित्सा शास्त्र में उक्त अंगों का वर्णन विस्तृत रूप से किया गया है। इस पुस्तक में प्रायः नये ढङ्ग से फेफड़ों की बनावट, फेफड़ों की परीक्षा और फेफड़ों के रोगों का विशाद रूप से वर्णन किया गया है। साथ ही कहीं कहीं आयुर्वेदशास्त्रानुसार तुलनात्मक रूप से भी विवेचन किया गया है। पुस्तक उपयोगी है। आयुर्वेदशास्त्र का अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के बड़े काम की है। (चैत्र–१९८५ वि०)

१०. 'चिकित्सक' कानपुर—

पुस्तक दो भागों में विभक्त है। पहले में फेफड़ों का शरीर-विज्ञान और उनकी परीक्षा का विषय है, दूसरे में रोगों का। पुस्तक साधारणतः अच्छी लिखी गई है। वैद्यों में इस ज्ञान की प्रवृत्ति करने और नवीन विद्यार्थियों को इस विषय का ज्ञान प्राप्ति के लिये अच्छा मार्ग बताया गया है। यथार्थ अनुभव बोधगम्य विषय है इसे इसका अभ्यास करने से ही पाठक प्राप्त कर सकते हैं। प्रत्येक वैद्य को पुस्तक खरीद

कर अपनी ज्ञान-वृद्धि और लेखक की उत्साह-वृद्धि करनी चाहिये (अप्रैल १९२८)

११. 'स्वास्थ्य बन्धु' अलीगढ़—

वैद्यों को इस प्रकार की एक उत्तम पुस्तक की बड़ी आवश्यकता थी जिसकी सहायता से वैद्य लोग डाक्टरों की तरह स्थेटसकोप लगाकर फुप्फुस की परीक्षा कर प्रजा को अपने निदान की दशा को समझा सकें। इस पुस्तक ने इस अभाव की पूर्ति की है। जहां-तहां आयुर्वेद के मत को भी दिखलाया है। वैद्यों को चाहिये कि एक-एक प्रति मंगवा कर लेखक के उत्साह को बढ़ावें (वर्ष २, संख्या ५, १९८५ सं०)।

इनके अतिरिक्त 'विश्वमित्र', 'हिन्दू पञ्च' (कलकत्ता), आरोग्य दर्पण (अहमदाबाद) तथा धन्वन्तरि के सम्पादक महाशयों ने भी इस पुस्तक के पक्ष में अत्यन्त महत्व-पूर्ण सम्मतियाँ प्रकट की हैं जो कि स्थानाभाव से नहीं दी जातीं।

× × ×

II मूत्र परीक्षा पाश्चात्य मतानुसार—(चित्र सहित)-

कागज़ बढ़िया, छपाई अत्युत्तम, पृष्ठ संख्या लगभग ८०। कई महानुभावों के बार-बार अनुरोध से इसका मू० १) से ॥=) कर दिया गया है।

इस पुस्तक को "आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी तिब्बी कॉलिज देहली" के जीवनदाता स्वर्गवासी मसीहउलमुल्क श्री हकीम

मुहम्मद अजमल खाँ साहिब बहादुर की चिरस्मृति में लेखक ने अश्रु भरे नेत्रों से समर्पित किया है।

यदि आप सच्चे रूप में आयुर्वेद की उन्नति के इच्छुक हों तो आज ही इसको मंगवा कर अपनी वाचनालय वा पुस्तकालय में स्थान दें।

आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी तिब्बी कॉलिज देहली के आयुर्वेदीय विभाग के मुख्याध्यक्ष श्री कविराज पं० हरीरञ्जन जी मजुमदार एम० ए० भिषगाचार्य इस पुस्तक पर प्रस्तावना लिखते हुये इस प्रकार वर्णन करते हैं—

"I have gone through the book "Urine Tests in Hindi by Kaviraj Shiv Sharan Varma B. Dhanwantry. It cannot be called a translation but a compilation in Hindi with materials gathered from the eminent western specialists. The Author has done a Great service by writing a book in new lines useful to the medical practitioners who are not acquainted with the English language.

In these days it cannot be denied that the test of Urine according to the Western System is very useful to the practitioners of Hindu and Unani Systems of medicine.

I hope the book will get its due appreciations from the enlightened medical practitioners."

S.d. Hari Ranjan Majumdar, M. A.

(26th Aug. 1927) Vice Principal

Tibbi College

२. श्री० सुरेन्द्र मोहन जी बी० ए० आचार्य दयानन्द आयुर्वैदिक कालिज लाहौर—मैं इस पुस्तक की उन्नति वा प्रतिष्ठा चाहता हूं।

३. पं० ठाकुरदत्त जी शर्म्मा 'अमृतधारा' वाले लाहौर— ऐसी पुस्तकों की वैद्य विद्या में विशेष आवश्यकता है।

४. राज वैद्य रूप लाल जी ज्वाला मुखी-कांगड़ा— यह मूत्र विषय पर नवीन मतानुसार अद्वितीय ग्रन्थ है।

५. पं० भगवन्त राम जी जैन वैद्य मालीरकोटला स्टेट— मैं आप को इस परिश्रम पर सहस्र बधाई देता हूं।

६—महता सीताराम जी दत्त वैद्य रावलपिंडी— आप की पुस्तकें अच्छी हैं। हम आप से अपनी पुस्तकों का तबादला करने के लिए तैयार हैं।

७—'अनुभूत योग माला' (बरालोकपुर-इटावा-यू० पी०)—मूत्र का वर्णन पाश्चात्य प्रणाली द्वारा उत्तम है। पुस्तक उत्तम है (२६-२-२८)।

८—'सुधा निधि' (प्रयाग)-इस से वैद्यों को मूत्र परीक्षा के विषय को समझने में अत्यन्त सहायता मिलेगी।

९—'स्वास्थ्य बन्धु' (अलीगढ़)—हिन्दी भाषा में अपने ढंग की पहली पुस्तक है।

१०—'विश्वमित्र' (कलकत्ता)—वैद्यों को इस से बहुत ज्ञान होगा (१४-१-२८)।

११—'महारथी' (देहली)—आयुर्वेद के हितैषियों वा विद्यार्थियों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये।

१२—'चिकित्सक' (कानपुर)—वैद्यों को यह पुस्तक मनन करनी चाहिये।

१३—'वैदिक धर्म' (औंध जिला सतारा)—मूत्र परीक्षा के विषय में सम्पूर्ण ज्ञान सुबोध भाषा में इस पुस्तक में किया है—पुस्तक उपयोगी है (April 1928)।

१४—'क्रान्ति' (लाहौर)—कविराज शिवशरण जी ने पाश्चात्य विद्वानों के मतों का निचोड़ इस हिन्दी पुस्तक में भर दिया है—इससे वैद्यों को अत्यन्त सफलता मिलेगी (मई–१९२८)

III "बुद्धिमती दाई या गृहस्थ सुधार शास्त्र" (पंजाबी भाषा में)—लेखक कविराज शिवशरण वर्मा जी तथा सरदार हरभजन सिंह जी 'चेतक' वैद्य भूषण।

पृष्ठ ३५४, ब्लॉक हाफटोन १४, कुल चित्र २२, कागज़ चिकना, टाइटिल पर स्त्री का अत्यन्त सुन्दर तिरंगा चित्र। मूल्य केवल २)।

इस पुस्तक के दो भाग हैं। पहले भाग में नारी जननेन्द्रियों की रचना, मासिक रक्त, गर्भाधान, सहवास नियम, गर्भ विज्ञान; गर्भवती का आहार विहार, प्रसव, दाई का पूरा कार्य, प्रसूता वा बालक की सम्भाल का विषय है। दूसरे भाग में गर्भवती के रोग, कानूनी बातें (Jurisprudence) बालक का पालन पोषण, प्रसूता के रोग, स्त्री के रोग वा चिकित्सा वा

बच्चों के देने के लिए अत्यन्त सुन्दर चित्ताकर्षक शिक्षाप्रद वा जोशीली लोरियां दी गई हैं। पुस्तक एक बार उठा लें, बिना समाप्त किये छोड़ने को दिल नहीं चाहता। चिकित्सा के प्रयोग ऐसे सरल वा सीधे हैं कि प्रत्येक माता उन को अपने बच्चों के लिए बड़ी सुगमता पूर्वक व्यवहृत कर सकती है। पञ्जाब प्रान्त की प्रसिद्ध प्रसिद्ध उर्दू वा पञ्जाबी पत्रिकाओं ने इस पुस्तक पर बड़ी प्रभावशाली समालोचनायें निकाली हैं और जनता से बड़े ज़ोरदार शब्दों में इस को खरीदने की अपील की है। न केवल पत्रिकाओं के सम्पादकों ने ही इस को पञ्जाबी भाषा में अपने विषय पर सब से अच्छा और अपने ढंग की एक मात्र पुस्तक माना है अपितु जनता का भी यही विचार है। 'फुलवाड़ी,' 'प्रियतम,' 'अकाली,' 'मौजी' 'खालसा ते खालसा एडवोकेट,' 'कृपाण बहादुर,' 'हीरा' (अमृतसर) 'देश सेवक' वा 'लेडी डाक्टर' (जालन्धर शहर) 'राम गढ़िया' (सिमला) 'वैद्य रत्न' (सियालकोट) 'रियासत' (देहली) 'कवि कुटिया' (कलकत्ता), का नाम विशेष ध्यान के योग्य है।

म्युनिसिपल हाई स्कूल अमृतसर की सुपरिन्टेन्डेन्ट श्रीमती लेडी डाक्टर सावित्री देवी जी, श्री अमृतसर की उच्चतम पञ्जाबी भाषा की मैगज़ीन—'फुलवाड़ी' की जिल्द चौथी और अङ्क ११, पृष्ट ९६३ पर अपने सुन्दर विचार इस प्रकार से प्रगट करती हैं—

"मैंने इस पुस्तक को आदि से अन्त तक पढ़ा है। इसमें प्रसूता के लिये वा दाई (धात्री) के लिये, विषय को अत्यन्त सुगम रीति से समझाया गया है। स्थान स्थान पर चित्र देकर भाषा को और भी रोचक बना दिया गया है। इसके अतिरिक्त गर्भवती वा स्त्री के रोगों का पूर्ण उल्लेख वा बालकों का पालन पोषण का पूर्ण समावेश है। लेखक महाशय ने जिस परिश्रम से इस अमूल्य ग्रन्थ की रचना की है वह सराहनीय है। मैं इस पुस्तक को दाइयों के लिये वा सब घरों में पढ़ी जाने के लिये सिफ़ारिश करती हूँ।"

"इस पुस्तक का घर में होना उतना ही आवश्यक है, जितना कि भोजन सामग्री (आटा, दाल, नमक) का होना पाया जाता है...... ।" (हीरा)

"यदि कन्या विद्यालयों में यह पुस्तक पढ़ाई जावे, तो अत्युत्तम हो...... ।" (प्रियतम)

"यह पुस्तक घर घर में वा प्रत्येक वाचनालय, पुस्तकालय में होनी चाहिये...... ।" (देश-सेवक)

"पंजाबी साहित्य में धात्री-विद्या पर कोई पुस्तक न थी, लेखकों ने इस घाटे को पूरा करके पंजाब की जनता पर बड़ा भारी उपकार किया है...... ।" (कृपाण बहादुर)

"ऐसी पुस्तकों की पंजाबी भाषा में बड़ी आवश्यकता है..." (रामगढ़िया)

"यह पुस्तक अन्धेरे घर को प्रकाशमय बनायेगी...... ।"
(खालसा ते खालसा ऐडवोकेट)

"इस पुस्तक को पढ़कर आपकी लड़की, स्त्री अथवा माता अत्यन्त प्रसन्न होगी। इस अवसर से न चूकें। यदि आप पंजाबी नहीं जानते तो उक्त समाचार किसी पंजाबी पढ़े व्यक्ति तक पहुँचा दें। यह उपहार का उपहार है और शिक्षा की शिक्षा। दहेज़ के लिये तो यह अमूल्य रत्न है।

IV **मूत्र-परीक्षा (पंजाबी भाषा में)** चित्र-सहित—
यह हिन्दी भाषा वाली 'मूत्र परीक्षा' का ही अनुवाद है। अनुवादक हैं—बुद्धिमती दाई के सहायक लेखक वैद्य भूषण हरभजन सिंह जी 'चेतक'। पृष्ठ-संख्या ७०, मूल्य केवल ॥)

V **अस्थियों वा संधियों के रोग** (हिन्दी भाषा में) इसके ऊपर आयुर्वैदिक एण्ड यूनानी तिब्बी कालेज देहली के शस्त्र चिकित्सा के प्रोफेसर श्रीयुत डॉक्टर वी. एम. शर्मा साहिब ने प्रस्तावना लिखी है। पाठक इस की उपयोगिता के सम्बन्ध में सहज में ही अनुमान लगा सकते हैं।

VI **प्रसव विज्ञान (धात्री विद्या)**—Midwifery in Hindi)—पृष्ठ लगभग ८००, चित्र १५० लेखक कविराज शिवशरणजी वर्मा—प्रकाशक-आयुर्वैदिक एण्ड यूनानी तिब्बी कालिज-देहली। मूल्य लगभग ८) होगा— । अभी से अपना नाम हमारे यहां रजिष्टर करवा लें। रियायत होगी।

VII व्रणबन्धन अर्थात् पट्टियां (A text Book on Bandaging in Hindi) कागज चिकना ७० हाफटोन चित्रों से सुसज्जित सर्व सुलभ, सर्वांगसुन्दर, सरल, सर्वोपयोगी वा सजिल्द पुस्तक जिस की आवश्यकता वा उपयोगिता को विद्यादानी पंडित मदनमोहनजी मलवीय सरीखे विद्वानों ने स्वीकार किया है। मूल्य २)।

निवेदक,

मैनेजर—

आचार्य धन्वन्तरि मण्डल,

फगवाड़ा पो० कपूरथला स्टेट

(पञ्जाब)

